HINDUSTANI ACADEMY
2060
18/12/88

सरस्वती प्रेस, काशी।

# माणिक ग्रन्थमाला—१५

सम्पादक
हरिदास माणिक
काशी विद्यापीठ

प्रकाशक
माणिक कार्य्यालय
काशी।
१९२५

## निम्न लिखित नाटकों को जरूर पढ़िये।

| | | | |
|---|---|---|---|
| भक्त सूरदास | ॥।) | द्रौपदी स्वयम्बर | ॥।) |
| सावित्री सत्यवान | ॥।) | असीरे हिर्स | ॥) |
| सुनहरी खंजर | ॥=) | संत कबीर | ॥।) |
| दोधारी तलवार | ॥) | रामायण | १) |
| धूपछाँह | ॥) | भारतरमणी | १।) |
| सत्यनारायण | १) | भक्तचन्द्रहास | १।) |
| सम्राट परीक्षित | १।) | कन्याविक्रय | १) |
| सती चिन्ता | १) | राजा शिवी | १) |
| मोरध्वज | १) | श्रवण कुमार | ॥) |
| पापपरिणाम | १) | संयोगता हरण | ॥) |
| देवयानी | १) | वीर पूजा | १॥) |
| भारतगौरव | १॥) | मधुर मिलन | ॥=) |
| सिद्धार्थकुमार | १॥) | हिन्द | १।) |
| विपद् कसौटी | १) | सत्याग्रही प्रहलाद | १=) |
| प्रफुल्ल | १=) | महेन्द्र कुमार | ।≡) |
| दलजीतसिंह | ॥-) | बाजीराव | १=) |
| कृष्णार्जुनयुद्ध | ॥=) | महात्मा ईशा | १=) |
| रणधीर प्रेम मोहिनी | ॥) | सीयस्वयम्बर | ≡) |
| गांधीदर्शन | ॥) | पांडव प्रताप | ॥) |
| किरणमयी | ।-) | नेत्र मिलन | ॥) |
| सम्राट अशोक | १॥) | पद्मिनी | ॥।) |
| संग्राम | १॥) | वीर छत्रसाल | १॥) |
| द्रौपदी चीरहरण | ॥) | अत्याचार का अन्त | ॥।) |

मिलने का पता—मनेजर—**माणिक कार्यालय**—काशी।

भारत की अनेक प्रसिद्ध नाटक मंडलियों द्वारा अभिनीत।

# भक्त ध्रुव

## नाटक

भारत की प्राचीन झलक (चार भाग) भारत की क्षत्रानी (दो भाग) चौहानी तलवार, मेवाड़ का उद्धार, राजपूतों की बहादुरी (दो भाग) संयोगता हरण, सावित्री सत्यवान, राना प्रताप, हल्दी घाटी की लड़ाई, बेलजियन झंडा, शिवाजी की चतुराई, पांडव प्रताप, अंगद वशीठी, सती सुकन्या,
इत्यादि नाटकों के रचयिता—

**श्रीयुत हरिदास माणिक**
द्वारा लिखित।

महताबराय द्वारा—
सरस्वती प्रेस, काशी, में मुद्रित।

प्रकाशक
**माणिक कार्यालय,**
काशी।

पहिली वार) All Rights Reserved. (दाम आठ आना

( रचयिता की आज्ञा बिना कोई पैसा कमाने वाली कम्पनी इस नाटक को न खेलै )

स्थान—भारतवर्ष                                                    काल—प्राच

# नाटक के पात्र ।

## पुरुष

राजा उत्तानपाद—भारत का एक राजा ।

ध्रुव—रानी सुनीति से राजा उत्तानपाद का पुत्र ।

उत्तम—रानी सुरुचि से राजा उत्तानपाद का पुत्र ।

दुर्लभदास—राजा उत्तानपद का मुंह लगा मित्र ।

फरकू—दुर्लभदास का नौकर ।

मंत्री—राजा उत्तानपाद का दीवान ।

नारद—एक ऋषि ।

नौकर, चाकर, सरदार, दरबारी व साधु संत इत्यादि ।

## स्त्री

अनुसूइया—अत्रि मुनि की स्त्री ।

सुनीति—राजा उत्तानपाद की पहली स्त्री ।

सुरुचि—राजा उत्तानपाद की दूसरी स्त्री ।

सुन्दरी—(महामाया) दुर्लभदास की पहिली स्त्री ।

सुन्दरी—( महामाया ) दुर्लभदास की दूसरी स्त्री ।

मालती—सुरुचि की खास सहेली ।

ब्रह्मचारिणी, दासियां व सखी सहेलियां इत्यादि ।

# भक्त ध्रुव।

## पहिला अंक।

### पहिला दृश्य।

स्थान—दरबार समय—प्रातःकाल

(मंत्री, सरदार, व सखी सहेलियां नाचती गाती दिखाई पड़ती हैं।)

धन्य धन्य शुभघड़ी दिवस यह अति सुखकारी ॥
है सबके ही हेतु समय तिथि मंगलकारी । धन्य०—
हे जगदीश्वर दीन बन्धु प्रभु संकट हारी ।
कृपा दृष्टि तव सदा रहै राजा सुख कारी ॥ धन्य०—

१ सरदार—धन्य है आज के दिवस और शुभ घड़ी को जो हम लोगों के लिये मंगलकारी है।

सब सखियां—बलिहारी है, बलिहारी है। अच्छा इसी लिये यह सब साल गिरह की तैयारी है।

२ सरदार—क्यों न हो स्वयंभू मनु के पुत्र महाराज उत्तानपाद की वर्ष गांठ हो और तैयारी न हो।

इन्द्र की सुन्दर पुरी से बढ़कर जिसका राज हो।
क्यों न हो फिर ठाट बाट अनूप सुन्दर साज हो॥

सब—अहा देखो कैसे ठाट बाट से राजा रानी की जोड़ी

इधर ही आ रही है। मानों कामदेव और रति की सुन्दर जोड़ी अपूर्व छटा दिखा रही है।

दरबान—सावधान सावधान, लोग सावधान हो जांय। महाराज उत्तानपाद की सवारी इधर ही आ रही है।

सब—महाराज उत्तानपाद की जय हो जय हो।

राजा—(प्रवेश कर) जय करो उस परमात्मा की जो सबकी मंगल कामना किया करता है। सब का लालन पालन और पोषण करता है।

जाकी कृपा कटाक्ष से, मिटत दुःख कर मूल।
होत चित्त मंह शान्ति अति, मिटत हृदय कर सूल॥

गावो उस परमात्मा का गुणानुवाद, जिसकी कृपा से हम लोग इस पद को पहुँचे हैं। गावो उसकी अपूर्व शक्ति और बल का गुण गावो जिससे वह सारा संसार परिचालन कर रहा है।

सब—भगवन उसका गुणानुवाद तो हो चुका कुछ आप का भी गुण गाऊं जिससे वर्ष गांठ के उपलक्ष में कुछ पाऊं।

दुर्लभदास—(स्वगत) कैसी है दुनियां। यह नदी नाले, झील पहाड़ सब से भरी पूरी है लेकिन फिर भी उसे एक न एक चीज की कमी रहती है। उसे जल चाहिये, स्थल चाहिये। उसे नाज चाहिये, उसे पानी चाहिये। उसे सब कुछ चाहिये। अगर कहीं परमात्मा की जगह पर मैं तैनात होता तो मैं कभी भी दुनियां को इन नियामतों से न भरता (प्रकाश) महाराज जरा समझ बूझ कर खर्च करियेगा।

लड़का लड़की होन पर, देंय बढ़ावा लोग।
वर्ष गांठ पर औरहूँ, करै कचौड़ी भोग॥

सरदार—अरे भाई बड़े भाग से ये दिन आते हैं तब लोग चार पैसा पाते हैं। साथ ही महाराज का भी गुण गाते हैं।

दुर्लभदास—हाँ हाँ देवो बढ़ावा । खूब बढ़ावा देवो । सातवें आकाश में पहुँचा कर मनमाना रुपया हिलोरो । खूब थैली झकझोरो ।

१ सखी अजी—तुम क्या कह रहे हो । क्या ये दिन रोज आया करते हैं । मौका पाकर ही हम इनाम इकराम के लिये कहते हैं ।

दिखा रही है यह सारी बहार साल गिरह ।
खुदा करें योंही हो हजार साल गिरह ॥

दुर्लभदास—सूप तो सूप चलनी भी बोल उठी (प्रकाश) हां हां फिर देखती क्या हो चलावो न अपना चरखा, दिखावो न अपना नखरा ।

चटक मटक के, चटक मटक के, आंखे खूब बनावो ।
सांवलिया प्यारे कह कह के पैसा खूब कमावो ॥

रानी—दुर्लभदास तू किस फेर में पड़ा है । परमात्मा करे ये दिन हमेशा ही आते रहैं । साल भर कुशल से बीता करै ।

लो मोती की माल यह, और स्वर्ण की हार ।
चाहो पति का शुभ सदा, कुशल कर करतार ॥

दुर्लभदास—रानी साहिबा इस गरीब पर भी कुछ कृपा हो जाय ।

१ सरदार—बाहरे दुलभदास जी आप पर और कृपा दृष्टि । अरे आप तो आप हैं कुवेर के भी बाप हैं ।

राजा—सुना है दुर्लभदास तुम्हारे पास बहुत कुछ माल है ।

दुर्लभदास—अरे यह दुर्लभदास तो भारी कंगाल है । मैं तो नित्य मनाया करता हूँ कि आपका रोज ही वर्ष गांठ हुआ करै । जिससे कुछ प्राप्ति होकर यह पापी पेट तो भरै ।

रानी—दुर्लभदास घबड़ाना नहीं । मैं तुम्हें पति की वर्ष-गांठ के उपलक्ष में यह सोने का कंगन देती हूं ।

दुर्लभदास—परमात्मा आपका मंगल करै । दीन ब्राह्मण का यही आशीर्वाद है । (अप्सरावों से) अरे तुम सब क्या चुपचाप

खड़ी हो कुछ गावो, बजावो, नाचो नचावो, रंग राग सुनावो ।

सखियां—हां हां सुनो न- (गाना)

इन्द्रानी से भी बढ़कर हैं आज हमारी रानी ।
हैं उत्तानपादजी राजा, इन्द्रहु देख इन्हें है लाज्जा ।
हिलमिल देवो बधाई । —इन्द्रानी०—
वीर धीर सुन्दर सकल, सहित राज परिवार ।
जुग जुग जुग, जुग जुग जियें राजा नृपति कुमार ।
आ हा हा हा वीरो में वीर ।
ओ हो हो हो धीरों में धीर ॥
है नारी भी सती शिरोमणि । —इन्द्रानी०—

राजा—सब कुछ है पर हो ही कर क्या करेगा। मैं राजा हूँ पर सन्तान हीन हूं; कर्म हीन हूं। सकल पदारथ है जगमाहीं। बिना भाग नर पावत नाहीं ॥ सारा राज पाट मुझे सूना जान पड़ता है। पुत्र के बिना यह सब कुछ अखरता है। मैं क्या करूं मेरी कुछ बुद्धि ही नहीं काम करती। सखी सहेलियों ने गीत गाया जुग जुग जीयें राजा नृपति कुमार। पर नृपति कुमार है कहां।

रानी—महाराज आप जी छोटा न करें। धीरज धरें। कहा है

धीरे धीरे रे मना धीर धरै सब होय।
माली सींचै सौ घड़ा, ऋतु आये फल देय।

राजा—प्यारी कहां तक धीरज धरा जाय। धीरज धरने की भी एक सीमा होती है।

रानी—तो फिर नाथ आप दूसरा विवाह क्यों नहीं कर लेते।

राजा—नहीं नहीं रानी ऐसा नहीं हो सकता। तुम्हारी ऐसी स्त्री रत्न को पाकर मैं दूसरा बिवाह करूं। अपने शांति निकेतन को वैर और फूट का अखाड़ा बनाऊं। नहीं मुझ से यह न होगा।

रानी—पर राजवंश की रक्षा के लिये राजाओं ने एक से अधिक विवाह किया है। फिर आप भी वैसाही क्यों नहीं करते।

राजा—करैं लोग भले ही करैं अन्य राजा लोग एक रानी छोड़कर भले ही सौ सौ रानियां रखैं पर मैं ऐसा न करूंगा।

राज्य ज्योतिषी—श्रीमान ऐसा करने में कुछ हर्ज नहीं है। सन्तान प्राप्ति का उपाय ढूंढ़ निकालना चाहिये। अन्यथा सिंहासन सूना हो जायगा। आपका दुख भी दूना हो जायगा।

रानी—प्राणनाथ अपने लिये नहीं बल्के इस सिंहासन की रक्षा के लिये आप दूसरा बिवाह कर डालिये। मेरा कहा मानिये बात न टालिये।

राजा—रानी जरा सोचो और समुझो। तुम क्या कह रही हो। तुम अपने ही हाथों से अपने वस्त्रों में अग्नि लगा रही हो। तुम्ह अपने ही हाथों से अपने लिये कूप तैयार कर रही हो संसार में औरतों के लिये भारी से भारी दुःख हो पर सौत का...

रानी—हां यही न सौत का दुःख न हो, पर प्यारे तुम्हारे लिये, पित्रों के लिये और इस राज्य की रक्षा के लिये मैं सब कुछ सहने को तैयार हूं। मान लो मेरा कहा मान लो। और सालगिरह की खुशियाली में नाथ मुझे एक बचन दो और वह बचन यही हो कि "मैं दूसरा बिवाह कर लूंगा।"

राजा—( आश्चर्य ) रानी तुम क्या कह रही हो। मैं कहता हूं कि तुम फिर सोच लो। मैं दूसरा बिवाह करके कलह का बीजारोपण नहीं कर सकता। तुम सोच लो और फिर सोच लो।

दुर्लभदास—( स्वगत ) बाप रे बाप एक रानी के होने से तो लाखों का खर्च है पर जब दूसरी आवेगी तब क्या होगा। दूना

खर्च बाप रे बाप। मैं तो सूने में राजा से कहूँगा कि महाराज आप कभी दूसरी शादी नहीं करियेगा कारण कि दो औरतों के रहने से सांप छछुंदर की गति हो जाती है।

रानी-नाथ मैंने भली भांति सोच लिया है। आप दूसरा बिवाह कर लें।

राजा-देखो रानी मैं फिर कहता हूँ कि इस (छाती दिखा कर) पवित्र प्रेम मन्दिर में कलह और रागद्वेष की अग्नि न चिटकने दो और न उस आरती को जलने का अवसर दो जिसकी लवर से बिशाल और पवित्र प्रेम भवन जलकर भष्म हो जाय। हमारे तुम्हारे हृदय का नाता टूट जाय। प्रेम रूपी कलश भी फूट जाय।

रानी—नाथ की ओर से टूट फूट जाय पर मैं तो नहीं तोड़ूंगी नहीं फोड़ूंगी। बरन मैं तो उसे और भी जोड़ूंगी।

सेवा करूंगी सौत की नहिं मौत को डरूंगी।
मैं रात रात जग कर पति का चरन धरूंगी॥

नाथ आप विश्वास रखें मैं अपने और आपके शांति मन्दिर में कलह की क्रांति न होने दूंगी।

सब-महाराज आप रानी सुनीति की बात मान लें। इनके कथनानुसार एक और विवाह करना ठान लें।

राजा—अच्छा जब आप सब लोग कह रहें हैं तो मुझे दूसरा बिवाह करना स्वीकार है।

पुरोहित—क्या इसके लिये कोई राजकुमारी भी तैयार है।

स्त्री—हां है और अभी तैयार है।

सब-कहां को राजकुमारी, वह किसकी है सुकुमारी।

रानी-हां मथुरा नरेश की कन्या सुरुचि हमारे राज राजेश्वर के योग्य है।

राजा-क्या शील स्वभाव में तुम से बढ़ कर है। या वीरता वा गम्भीरता में चढ़कर है।

रानी-हां हैं वह मुझ से हर बातों में बढ़कर है। सुनिये नाथ—

सुन्दर और सुशील शीलवति है सुकुमारी।
मनहुं रती की रूप, रूपवति गुणवति भारी॥
करौं कहां गुणगान, मान युत मान कुमारी।
वरहु ताहि हे नाथ मानकर बात हमारी॥

राजा—रानी तुम्हारी बात मैं सिर पर धरता हूँ लेकिन मैं फिर भी अपनी पवित्र आत्मा को पुकारता हूं कि कहीं शान्ति साम्राज्य पर अशांति का अधिकार न हो जाय। अन्यथा मैं भारी दुःख में पडूंगा। बचने का कोई ऊपाय न देख संकट सरिता में डूब मरूंगा।

रानी—भगवान सब मंगल करेंगे, नयी रानी की गोद भरेंगे।

राजा—फिर मुझे स्वीकार है।

सब—धन्यबाद प्रभो धन्यबाद। आनन्द, आनन्द, आनन्द।

रानी—पुरोहित जी आप शीघ्र ही मथुरा नरेश के यहां पधारें। लगन साइत सोच कर तब यहां पग धारें। अप्सरावों और सखियों गावो बजावो खूब आनन्द मनावो।

सखियां—हां हां अब भी गाना बजाना न होगा—

(गाना।)

आवो आवो सबै हिलमिल करके देवें बधाई।
राजा को रानी आवे, दोनों कुलका नाम जगावे॥
होवे मानो वह पुण्य की कमाई। आवो आवो सबै—
राजा को हो राजकुमार, करै सदा यश का विस्तार।
बढ़े उसकी सदा प्रभुताई।—आवो आवो सबै—

---

## दूसरा दृश्य

स्थान—राजमार्ग समय-दो पहर

( दो नागरिक बातें करते हुए दिखाई पड़ते हैं। )

१ नागरिक—अरे क्यों यार मनोहर लाल कुछ सुना है।

मनोहर—कहो भाई क्या कोई नयी खबर है क्या। सुनावो सुनावो। कोई चटकती मटकती खबर सुनावो।

१ नागरिक—अजी चटकती मटकती की कहते हो इसे तो मजेदार चटनी से भी अच्छा जानो।

२ नागरिक—तब तो भाई मैं जरूर सुनूंगा। सुनाओ सुनाओ जल्दी सुनावो। मजेदार चटनी का जायका तो चखावो।

१ नागरिक—हमारे राजा उत्तानपाद की दूसरी शादी है।

मनोहर—यह क्यों ऐसा वह क्यों कर रहे हैं।

१ नागरिक—सुना है संतान के वास्ते ही वे दूसरा बिवाह करते हैं। अन्यथा इसमें उनकी मंशा नहीं रही।

२ नागरिक—मंशा की बात पूछते हो। अरे जी नये फल और नयी चीज को कौन नहीं लेना चाहेगा।

मनोहर-पर हमारे राजा साहिब में यह बात नहीं है। वे तो बड़े सज्जन पुरुष हैं।

१ नागरिक-भाई इस में सज्जन और दुर्जन की बात नहीं है। पिंडदान देने के लिये भी तो कोई चाहिये। अस्तु पिंड श्राद्ध के वास्ते ही हमारे राजा साहेब अब दूसरा ब्याह करेंगे।

२ नागरिक—तो क्या इस पर रानी साहिबा ने कुछ एतराज नहीं किया? जान बूझ कर दुख मोल लिया।

१ नागरिक—एतराज क्या करतीं। उन्हीं का तो यह सब खोआ कूटा है। अगर वे जोर नहीं देतीं तो क्या यह बिवाह होने

पाता ? राजा साहेब कहां तैयार थे । यह वो रानी सुनीति के बहुत कुछ कहने पर ही राजा उत्तानपाद बिवाह के लिये तैयार हुए है ।

मनोहर—भाई यह तो अजब बात सुनने में आ रही है । बात कुछ समझ में नहीं आती है । स्त्री जाति तो कुछ और ही बात बताती हैं ।

१ नागरिक—वह क्या ।

मनोहर—यह कि एक स्त्री कभी यह न चाहेगी कि उसके रहते सौत आ जावे और उसके दुखों को बढ़ावे ।

२ नागरिक—मैंने भी यही बात सुनी है कि रानी के कहने ही से राजा उत्तानपाद विवाह का मौर फिर बांधने को तैयार हुए हैं । अच्छी बात है शादी कर लें, पर दो औरतों के बीच में मनुष्य वैसे ही पिसता है जैसे, चना, मटर, गेहूं या कोई अनाज चक्की के बीच में पड़ कर पिसा जाता है ।

मनोहर—पर अब इसकी दवा भी कोई है ।

१ नागरिक—दवा नदारथ ।

२ नागरिक—हां इसकी एक दवा है ।

मनोहर—वह क्या ?

२ नागरिक—यही कि ब्राह्मण मंडली को उभाड़ा जाय ।

१ नागरिक—हां हां ब्राह्मणों को उभाड़ कर रुपचन्द द्वारा जो चाहो व्यवस्था ले लो ।

२ नागरिक—तो फिर मुझे भी एक व्यवस्था दिला दो । जिससे मैं भी एक दूसरी शादी कर लूं ।

मनोहर—नहीं तुम लोग नहीं कर सकते । कारण कि तुम साधारण प्रजा हो और राजा राजा है ।

२ नागरिक—क्या राजा को सुरख़ाब का पर लगा रहता है ।

१ नागरिक—अरे भाई राजा सब कुछ कर सकता है। वह चाहे तो बीस खून करे पर कोई कुछ नहीं बोल सकता।

२ नागरिक—और हम लोग।

१ नागरिक—आप किसी की ओर ताक भी नहीं सकते हैं।

मनोहर—अजी यह बात नहीं है। राजा चाहे तो संतान वृद्धि के लिये एक से अधिक व्याह कर सकता है। अच्छा चलो हम लोगों की भी बनेगी। कुछ भूसी दक्षिणा भी मिलेगी।

१ नागरिक—तो चलो फिर राज दरबार में चला जाय।

१ नागरिक—हां यार चलो।

मनोहर—भाई हम भी चलेंगे।

सब—चलो न फिर गाते बजाते।

गाना।

खूब भयी भाई खूब भयी। राजा की शादी खूब भयी॥

एक से घर में दो दो नारी। आवेगी इक और कुमारी॥ खूब—

मैं भी शादी और करूंगा। मौर एक मैं और धरूंगा॥ खूब—

## तीसरा दृश्य।

स्थान-मथुरा समय-तीसरा पहर।

(सुरुचि अपनी सखी सहेलियों के साथ साथ खेल, कूद, गा, बजा रही हैं)

गाना।

आवो सहेली सब संग मिलिके,

उपवन में घूमिये फिरिये—आवो०—

डार पात को देख रेख कर,
डालिन महं पत्तिन धरिये ।—आवो०
हिलमिल कर सब, पूजि देवि अब,
मन वांच्छित फल को लहिये । —आवो०

१ सखी—कैसा सुन्दर उपवन है। अहा! वह देखो सखी उस
;र सरोवर में सरसिजों का समूह कैसा सुन्दर मालूम पड़ता
अहा बीच के कमल की शोभा ही निराली है। अजी वह
: उठा हुआ है पर बीच में खाली है।

२ सखी—खाली क्या ; ऐसा तो मैंने कमल ही कहीं नहीं
। अहा पीली पीली पंखुरियों के बीच में रक्त मय निकलता
कमल ऊपर सुफेदी लिये, हरा हरा बड़ा ही सुन्दर मालूम पड़ता
हाय कहीं इसकी कमलिनी भी ऐसी ही सुन्दरी होती तो
ों की जोड़ ठीक हो जाती।

३ सखी—हाय इस कमल के योग्य तो हमारी राजकुमारी हैं।

सुरुचि—देखो कमला मुझसे हंसी न करो नहीं तो मैं यहां
ली जाऊंगी। फिर न आऊंगी और न तुम्हें भी बुलाऊंगी।

कमला—जावोगी कहां कमल के पास।

सुरुचि—भला लिट्टी गड़ेरी का क्या संग। सूर्य को देख कर
ल खिलता है चन्द्रमा को देख कर कुमुदिनी खिलती है, फिर
कमल से तुमने मुझे कमलिनी बना कर जोड़ी बनाई है यह
ारी कैसी ढिठाई है।

४ सखी—ढिठाई नहीं सखी बल्की यह सब कुछ बहाने बाजी
तुम्हारी शोभा बढ़ाई है। तुम्हारा मुख चन्द्रमा की नाई
ाप्यमान है हम कुमुदुनियों के लिये वह चन्द्रमा के समान है।
हें देख कर हम सब मारे हर्ष के फूली फिरती हैं।

सुरुचि—क्यों न फूली फिरोगी।

१ सखी—अजी तुम भी इसी कमल पर मुंह के बल गिरोगी।

सुरुचि—देखो फिर हंसी

२ सखी—नहीं सुनों। रसीले भौंरे रस लेने के लिये नाना प्रकार के गुंजार से अपना तार जमा रहे हैं। वे बैठते हैं, फिर उठते हैं फिर बैठ कर उड़ जाते हैं। जब कमल को अपने अनुकूल पाते हैं तब उसका रस पान करते हैं।

३ सखी—देखो—

भौरों की गुंजार अहा! कैसी प्रिय सबको लगती है
मानो अपने प्रीतम को विरहिन रह रह कुछ कहती है।

४ सखी—अहा वह पद्मलता कैसी भूल रही है। सरोवर में अपनी छाया देख कर वह दम्भित और गर्वित हो रही है।

३ सखी—और फिर उस लता को देखो भूमती भूमती ऐसी बल खाती है मानों गर्व में चटक मटक रही है।

४ सखी—क्यों नहीं मटकेगी। उसके मटकने का समय ही है।

१ सखी—देखो सुरुचि यह तुम्हारे ही ऊपर बौछार है।

कमला—अरे क्यों तुम लोग राजकुमारी को बनाती हो, रह रह के गालियां मुझे सुनवाती हो।

सुरुचि—क्यों कमला तू फिर चुटकी लेने लगी। हां अच्छा मैं तुम्हारी दवा करती हूं। आवो सखियों मैं कमला से शादी करती हूं। तुम सब पकड़ो मैं इसकी मांग में सेंदुर डालती हूँ।

कमला—देखो! कहीं उल्टी ही बात न हो जाय। आवो हम तुम परस्पर विवाह कर लें। तुम हमारी मांग में सेंदुर डालो हम तुम्हारी मांग में सेंदुर डालें।

१ सखी—पर यह परस्पर बदलौअल कैसा। भाई हम भी शरीक होंगे। हम सब बजनिया बन जाती हैं।

सुरुचि—मैं दुलहा बनूंगी।

१ सखी—मैं पुरोहित बनूंगी।

२ सखी—मैं कन्यादान दूंगी।

४ सखी—क्या दान दोगी।

सुरुचि—अपने दोनों लड्डू।

५ सखी—तो लावो मैं तुम्हें बिना लड्डू के बना दूं। (कन्धों पर हाथ धरती है)

सुरुचि—देखो कमला मुझे बचावो।

कमला—तो फिर तुम मेरी स्त्री बनो तो मैं बचाऊं।

सुरुचि—अच्छा मैं बनती हूँ।

कमला—अच्छा भाई छोड़ दो। (कमला सबको छुड़ाती है इसी अवसर पर एक सखी आकर बड़े आश्चर्य्य से कुछ कहती है।)

सखी—अरी ओ राजकुमारी तुमने कुछ सुना भी है।

सब—हां क्या सुनावो कुछ खुश खबरी है।

सखी—हां हां सुनावो क्या खुश खबरी है।

सखी—हां कुछ क्या, बहुत कुछ है।

सब—सुनावो गुंइयां जल्दी सुनावो।

सखी—सुनाती हूँ जरा धीरज धरो।

सुरुचि—अरे भाई जल्दी सुनावो अब धीरज नहीं धरा जाता है। नयी बात सुनने के लिये जी घबराता है।

सखी—फिर कुछ इनाम लावो।

सुरुचि—कहो कहो। मैं बहुत कुछ इनाम दूंगी।

सखी—क्या दोगी बोलो।

सुरुची—अरे कुछ दूंगी पगली।

सब—ऐसी चीज दूंगी जिसे तू जन्म भर याद रखेगी।

सखी—भला सुनूं भी तो सही।

सुरुची—अच्छा बोल तू क्या मांगती है ।

सब सखियां—"चना महीना घूसा रोज"

सखी—देखो ! जावो मैं कुछ न कहूंगी । यह सब तो मुझे चिढ़ाती हैं । मुझे पगली बनाती हैं ।

सुरुचि—नहीं भाई कोई न चिढ़ावो अब जो चिढ़ावेगा वह मार खायगा ।

सब—अच्छा भाई सब लोग चुप रहो चुप रहो, चुप रहो ।

सखी—सुनाऊं, सुनाऊं, सुनाऊं ।

सुरुचि—हां हां सुनावो ।

सखी—सुनाऊं सुनाऊं, सुनाऊं ।

सब—अरे, सुनाव दिवानी सब की नानी ।

सखी—जावो आज मैं न सुनाऊंगी । तुम लोगों ने मुझे गाली दी है ।

सखी—फिर मैं तुम्हारे ही कान में कहूँगी ।

सुरुचि—हां हमारे ही कान में कहना ।

सब—अच्छा भाई हम सब माफी मांगती हैं । सुनावो सुनावो कसूर माफ करो ।

सखी—अच्छा दस बार उठो बैठो ।

सब—( सखी का कान पकड़ कर ) उठो बैठो । उठो बैठो ।

सखी—देखो सुरुचि यह सब तुम करा रही हो ।

सुरुचि—देखो सखियो अब जाने दो । हम लोग इस सखी को बहुत कुछ छका चुकी हैं । अच्छा भाई सब कोई चुप रहो ।

सब—हां हम सब चुप हैं ।

सुरुचि—अब कहो—

सखी—अच्छा कहती हूं सुनो, सुनो, सुनो, सुनो ।

सब—अरे सुनावो भी सही ।

सखी—अच्छा सुनाती हूं सुनो सुनो राजकुमारी की शादी
बात आयी है।

राजकुमारी का आश्चर्यान्वित होना। सब सखियों का आनन्द में
प्रसन्न होकर नाचना कूदना।)

सब—खूब, कैसी बात आयी है। क्यों सुरुचि अब क्यों मुंह
ाती हो। अब क्यों नहीं डांट डपट बताती हो।

सखी—( सुरुचि से ) लावो इनाम लावो।

सुरुचि—यह क्या मेरी प्रसन्नता की खबर है। इन्हीं सब
ियों से लो।

सब-हां हां लो मैं देती हूँ।

ोई माला उतार कर देती है। कोई कड़ा छड़ा उतार कर देती है।
सब कुछ न कुछ उस आई हुई सखी को देती हैं।)

सब—हां कहां से लगन की बात आयी है।

सखी-स्वयभूमनु के पुत्र राजा उतानपाद के यहां से। निस-
होने के कारण वे स्वयं राजकुमारी सुरुचि का पाणि ग्रहण
चाहते हैं।

सब—लो न सुरुचि अब क्या चाहिये। इस खुशी में कुछ
लाइये।

( गाना )

सब—अब तो बनोगी तुम नारी नवेली।
जावोगी छोड़ हम सब को अकेली॥

सुरुचि-चलो हटो सखी बाते न बनाओ।
पूछोगी अब क्यों भला, जावोगी तुम भूल॥
सोच सोच कर हे सखी, उठत कलेजे सूल।

# चौथा दृश्य ।

स्थान-नगर मार्ग समय—सन्ध्या ।

( मथुरा नगर के नागरिक परस्पर बात चीत कर रहे हैं )

१-नागरिक क्यों यार प्यारे लाल सुना है कि राजकुमारी सुरुचि का बिवाह राजा उत्तानपाद से ठीक हुआ है ।

२ नागरिक—हां सुना तो मैंने भी ऐसा ही है, लेकिन यह काम ठीक नहीं हुआ है ।

१ नागरिक—इस में ठीक और न ठीक होने की क्या बात है ।

२ नागरिक—यही कि राजा का यह दूसरा बिवाह है ।

१ नागरिक—होने दो दूसरा, तीसरा, चौथा । इस में हम लोगों का क्या बनना बिगड़ना है । राजा लोग तो कई बिवाह कर कसते हैं ।

२ नागरिक-फिर हम लोग भी कई बिवाह कर सकते हैं ।

१ नागरिक-कर सकते हैं पर हम लोग उतना खर्च भी तो नहीं सम्हाल सकते हैं । राजावों को क्या उनके पास बहुत साधन जमा है । वे एक नहीं दस बिवाह करैं ।

२ नागरिक—हां भाई एक तरह से तुम्हारा कहना ठीक है । फिर भी राजकुमारी के लिये कोई राजकुमार ही ठीक था ।

१ नागरिक—तुम राजा उत्तानपाद को किसी राजकुमार से कम न समझो । वे भी शरीर से सुडौल और बलवान है । वीरों में वीर और धीरों में धैर्यवान हैं ।

२ नागरिक-सब कुछ होने पर भी·······

१ नागरिक—पर भी क्या । यह बिवाह तो संतानोत्पत्ति के लिये किया गया है ।

२ नागरिक—सन्तानोत्पत्ति के लिये तो सभी कोई विवाह करता है।

१ नागरिक—पर इस में कोई खास बात है।

२ नागरिक—वह क्या।

१ नागरिक—यही कि बड़ी रानी को सन्तान न हुई। अस्तु उन्हीं की राय से राजा उत्तानपाद ने यह दूसरी शादी की है।

२ नागरिक—तब तो यह बड़ा ही विकट प्रश्न हो गया।

१ नागरिक—वह क्या।

२ नागरिक—यही कि न तो सुरुचि सुखी रहेगी और न सुनीति। दोनों सौत बे मौत मरेंगी।

१ नागरिक—हाँ तुम्हारा कहना एक प्रकार से ठीक है पर मैंने यह भी सुना है कि बड़ी रानी शीलवती और सुशीला हैं।

२ नागरिक—लाख शीलवती और सुशीला होने पर भी दो औरतों का होना ही ठीक नहीं है।

१ नागरिक—अच्छा वह तो आगे ही आवेगा। लेकिन जब बड़ी रानी के कहने से विवाह हुआ है तो बड़ी रानी निबाह भी जायंगी। छोटी रानी उन से दुःख न पायेंगी।

२ नागरिक—हां हमने यह भी सुना है कि रानी सुरुचि के साथ साथ बहुत सी दास दासियां भी उपहार स्वरुप जायेंगी।

१ नागरिक—हां यह ठीक है दास दासियां जायंगी।

२ नागरिक—दास तो काम करेंगे और दासियां क्या होंगी।

१ नागरिक—राजा के आदमियों से उनका विवाह होगा।

२ नागरिक—तो फिर राजा जिसे चाहे उसे अर्पित कर देंगे।

१ नागरिक—हां इसमें क्या शक।

२ नागरिक—यह तो बड़ी ही खराब पृथा है। भला बिचारी कुमारियां जिसके गले में हुआ उसी के गले में मढ़ी जायंगी।

१ नागरिक—भाई यह चलनही चली आयी है; तो तुम क्या करोगे। देखो एक तरह से राजकुमारी भी तो राजा के गले में मढ़ी जा रही है। खैर उन्होंने तो धनी मानी राजा पाया पर दासियां बिचारी क्या करेंगी।

२ नागरिक—यही तो मैं भी कहता हूँ कि यह प्रथा बुरी है।

१ नागरिक—अच्छा, यह सब जाने दो। जो आगे आवे सो देखो। चलो राजधानी में चला जाय; वहां चल कर बिवाहोत्सव देखा जाय।

२ नागरिक—हां भाई जरूर चला जाय अपने राजा की कन्या का बिवाह है तो अवश्य ही देखा जायगा।

१ नागरिक—चलिये फिर चला जाय।

२ नागरिक-चलो न। (दोनों बातचीत करते हुए चले जाते हैं)

## पांचवां दृश्य।

स्थान-राजसड़क समय-प्रातःकाल

(आगे आगे रथ पर राजा अपनी नई रानी सुरुचि के साथ साथ बैठे हैं पीछे पीछे दरबारी तथा सखी सहेलियां गाती बजाती हैं)

सहेलियां—(गाती हुई)

सजनी सुरुचि ने ओढ़ी सुन्दर चुँदरिया।<br>
मोहनी मूरतिया सोहनि सुरतिया ॥<br>
बांकी है छैला और बांकी है सुन्दरिया। सजनी—

जोड़ी हिलमिल के करै, काम कछुक अभिराम।
आये जनु निज देह धरि, जोड़ी रति अरु काम॥

दरबारी-सावधान सावधान।
धन्य धन्य यह शुभ घड़ी, और समय है आज
रानी सुरुची के सहित, आवत हैं महाराज॥

सुनीति-आइये आइये पधारिये। गावो गावो सखियो मंगल गीत गावो, जावो गावो बजावो। ( सब सहेलियां फिर गाती हैं )

सब— (गाना)

नृपति बधाई है।

सुवर सलोनी जोड़ी आई। जिसने किस्मत खूब जगाई॥
हम सब वारी, जावें बलिहारी। न्यारी प्यारी सुरुचि सुकुमारी॥

उत्तानपाद-लो रानी लो जो तुम्हारा अनुरोध था वह मैंने पूरा किया। तुम्हारी इच्छित चीज़ तुम्हारे ही हाथ सौंपता हूं अब तुम जानो और तुम्हारी चीज़ जानै।

सुनीति—हां नाथ मैं जानूंगी और अवश्य जानूंगी। मैं इस नवीन लता को एक अच्छे और चतुर बागवान की तरह बचाऊंगी मैं खुद धूप छांह जाड़ा पाला सहूंगी पर इसे न मुरझाने दूंगी। नाथ आप निश्चिन्त रहिये।

उत्तानपाद—पर इस पर क्या कुछ मेरा भी अधिकार रहेगा।

सुनीति—हां हां सोरहो आना। पर निगरानी हमारी रहेगी।

उत्तानपाद—अच्छा तुम्हारी चीज़ है मैं तुम्हारी ही मरजी के मुताबिक सारा काम करुंगा।

सुनीति—( हाथ पकड़कर ) लो बहिन प्राणनाथ तुम्हें मुझे सौंपते हैं और मैं भी अपने पति की प्यारी और अनमोल चीज समझ कर अपने सिर माथों रखती हूँ।

करती हूं मैं विनय ईश से हे जग स्वामी।
पूरी इच्छा करौ सुनो हे अन्तरयामी॥
पुत्र रत्न पा जाय शीघ्र ही सुरुचि सयानी।
हो प्रयास मम सफल सुनो हे देवता दानी॥

सब–महारानी जी ऐसा ही होगा।

सुनीति—होगा तो लो।

मणि मुक्ता युत सहित थाल मैं आज लुटाती॥
अहो भाग है आज, आज की घड़ी सुहाती। (नई रानी से)
बहिन सुरुचि नृप बहित भूमि पर पग तुम धारो।
आवो सब से मिलौ जुलौ निज काज संवारो॥

सुरुचि—बहिन धन्य है मेरे भाग को जो तुम्हारी ऐसी स्त्री साथिनी स्वरूप में मिली है।

सुनीति—बहिन धन्य मेरे भाग जो तुम्हारी ऐसी सुन्दर सलोनी स्त्री मेरे आराध्यदेव की पत्नी होकर राजभवन में आयी है।

सुरुचि—सुना है यह सब तुम्हारी ही कृपा से हुआ है।

सुनीति—करने वाला वही एक परमात्मा है। यह सब उसी की माया है। यदि मेरे प्राणनाथ मेरी बात न मानते तो यह सब दृश्य कैसे देखने में आता। बहिन प्यारी बहिन यह सब तुम्हारे प्राणप्यारे ही की बदौलत हुआ है।

उत्तानपाद—कह लो सुन लो सुन लो, और खूब सुना लो। इस समय मैं विवश हूं। हमारी बात कौन यहां मानेगा। मुझे तो सभी झूठा जानेगा पर प्यारी सुरुचि यह तुम जान लो कि यह विवाह मैंने तुम्हारी बड़ी बहिन के कहने ही से किया है। अन्यथा मैं तो एक नारी ब्रह्मचारी था।

दुर्लभदास–हां महाराज अभी तक उसी में हमारी गणना है। मैं भी अभी तक एक नारी वाला ब्रह्मचारी हूं।

सुनीति-क्यों दुर्लभ जी आप तो बिवाह के विरोधी थे।

दुर्लभदास-अरी रानी साहिबा यह आप क्या कह रही हैं। ऐसी शिकायत करके हमारी दक्षिणा न गँवाइये।

उत्तानपाद—नहीं नहीं तुम्हारी दक्षिणा मिलेगी और अवश्य मिलेगी। धीरज रखो। जरा मुझे रनिवास में तो चलने दो।

सुनीति—दुर्लभदास जी आपको पूरी दक्षिणा मिलेगी।

दुर्लभदास-तब तो फिर सूम के घर खूब धूम होगा। मुझे लोग सूम भले ही कहलें पर सच पूछो तो मैं ही असली उपकारी हूं।

उत्तानपाद-अच्छा तो अब रनिवास में चलना चाहिये।

सुनीति-क्यों राजन रनिवास में जाने की इतनी जल्दी। जरा सबर करो। धीरज धरो।

उत्तानपाद-प्यारी रानी अब तुम मेरी हंसी उड़ा रही हो।

सुनीति-प्यारे जब हंसी का समय आता है तभी हंसी की जाती है। लावो मुझे क्या इनाम देते हो।

उत्तानपाद—तुम्हें मैंने वह चीज ही भेंट कर दी जिसे मैं लाया हूं। अब क्या चाहिये।

सुनीति—अब मुझे चाहिये पुत्र रत्न। देखो जो पुत्र होगा उसकी माता मैं हूंगी। वह रत्न मुझे दे देना पड़ेगा।

उत्तानपाद-इस में भी कुछ कहना है। जिसके कारण यह सब हो रहा है भला वह उसका अधिकारी न होगा। रानी धीरज धरो तुम्हारी इच्छा शीघ्र ही पूरी होगी।

सुनीति—परमात्मा वह दिन शीघ्र ही लाये जब मैं अपनी बहिन की गोद में पुत्र को खेलता हुआ देखूं।

सब—परमात्मा वह दिन शीघ्र लावेगा। (गाना।)

होकर सदा संसार में जोड़ी सदा फूले फले।

हो वीर धीर सुजान सुत सुंदर सुरुचि से ही भले ॥
हो सिंहासन नहिं सूना । नित बढ़ै राज हो दूना ॥
रानी—पुत्रवती हम सब कहलावें । राजा का भी मान बढ़ावें ॥
होकर सुखी संसार में । व्यवहार में, व्यापार में, दरबार में ॥

## छठवां दृश्य ।

स्थान—साधारण कमरा        समय—सन्ध्या ।

( तीन चार युवतियां परस्पर बात चीत करती हैं )

१ औरत—देखो बहिन बड़ी रानी साहिबा का मिजाज कितना अच्छा है । वे साक्षात देवी स्वरूपा हैं । अपने दास दासियों पर बड़ी ही दया की दृष्टि रखती हैं ।

२ औरत—और हां दान पुण्य में भी वे राज्य भर में सब से बढ़ी चढ़ी है । देखिये छोटी रानी के बिवाह में कितना माल मुहर लुटाया है । मेरा तो जन्म भर उसी से कट जायगा ।

३ औरत—पर मुझे तो फूटी कौड़ी भी न मिली । जब मुझे मिलै तो जानूं । आप जिए तो जग जिया ।

४—औरत—पर तू उस समय रही भी तो नहीं । तू तो अपने ससुराल में मौज करती रही । पाती तो कहां से पाती ।

१ औरत—अरे तू चाहे तो अब भी ले सकती है । जाकर रानी से फरयाद तो कर ।

३ औरत—अरे फरयाद क्या करने जाऊं । क्या मैं ऐसी वैसी हूँ । उठाई गिरी हूं कि मेरे घर में माल मत्ता नहीं है । मैं

नहीं जाती। रानी को गरज होगा तो देंगी अपने नाम को न देंगी अपने नाम को।

२ औरत—अरे भाई तू ऐसी जली कटी बोल रही है। क्या बड़ी रानी साहिबा ने कुछ तेरा नुकसान किया है ?

४ औरत—हां मालूम तो ऐसा ही पड़ता है कि मानो बड़ी रानी साहिबा ने कुछ तेरा नुकसान किया है।

४ औरत—नुकसान की बात ही है। जब इसे कुछ नहीं मिला तो इसके लिये नुकसान ही है। जा जा छोटी रानी से कुछ ले ले।

३ औरत—अजी छोटी की बात क्या कहती हो। वह सौ रानियों में एक रानी है।

१ औरत—कि अन्धों में कानी है।

३ औरत—देखो मैं जाकर कहती न हूँ कि छोटी रानी को कानी बनाया गया है।

२ औरत—अरे तू तो बड़ी ही कलह प्रिया है। क्यों झूट मूठ जाकर आग लगाती है। हेली मेलियों में तो हंसी ठिठोली हुआ ही करती है।

३ औरत-ऐ दैया ऐसी हंसी ठिठोली किस काम की हाय,रानी को कानी बनाया जाय। क्या तुम सब नहीं जानती हो कि आज कल छोटी रानी राजा के हिये की हार हो रही हैं।

१ औरत—तो इससे क्या। क्या राजा साहब मरवा डालेंगे या पिसवा डालेंगे। क्या कर डालेंगे। हम औरतों के बीच में वे नहीं बोल सकते हैं। वह केवल अपना राज काज देखा करें।

२ औरत—लेकिन एक बात है। आज कल राजा साहिब छोटी रानी की बहुत कुछ सुनते हैं।

४ औरत—तो क्या बड़ी रानी घास छीलती हैं। आखिर उनका भी तो कुछ हक है।

३ औरत—उनका क्या हक है। उन्हें तो संतान ही नहीं है। इसी लिये तो राजा जी ने दूसरा बिवाह किया है। अब छोटी रानी से जो कुमार होगा वही राज गद्दी पर बैठेगा।

४ औरत—लेकिन अगर कहीं बड़ी रानी सुनीति जी को भी संतान हो गयी तब।

२ औरत—तब फिर बड़ी रानी होने के निहोरे उनकी ही सन्तान राज गद्दी पर बैठेगी।

३ औरत—यह नहीं हो सकता।

४ औरत—क्यों।

३ औरत—जब बड़ी रानी की राय से बिवाह हुआ है तब वे अपना सब हक खो चुकीं। अब तो वह राज महिषी भी न रहीं। राज महिषी तो छोटी रानी हुई हैं।

१ औरत—इसमें हक खोने और न खोने की क्या बात है। यदि संयोग से बड़ी रानी को लड़का हो गया तब गद्दी का तो वही अधिकारी होगा।

सब—हां हां जरूर।

३ औरत—चूल्हे में जाय तुम लोगों की बातें। तुम लोग तो छोटी रानी के पीछे पड़ी हो लो मैं जाती हूँ। सब हाल उनको सुनाती हूँ। तुम लोगों का सारा भेद बताती हूँ।

सब—जाओ महा माया जाओ। अब आज से तुम्हारा नाम महामाया हुआ। महामाया करो दाया।

महामाया—महामाया तुम, तुम्हारी नानी, तुम्हारी माई, तुम्हारी मौसी। (रानी सुनीति का प्रवेश)

सुनीति—तुम लोगों ने कैसा शोर गुल मचाया है।

सब—इसकी जड़ यही महामाया है।

महामाया—लो मैं जाती हूँ। (चली जाती है।)

सुनीति—देखो हंसी में बहड़ेर होता है। बे मौके की हंसी लड़ाई के बीज को बोती है। जिससे लाभ छोड़ हानि होती है।

१ औरत—यही कि जब से नई रानी आयी है तब से राजा साहब घर से बाहर नहीं निकलते।

सुनीति-इससे क्या। चलो गौरी का पूजन कर रनिवास में चलें।

सब—हां चलिये। ( गीत गाती हैं ) ( गाना )

जय जय पारवती महरानी, सतियों में है सती भवानी।
जग में विमल ध्वजा फहरानी। सती शिरोमणि गुण की खानी॥

## सातवां दृश्य।

—❖—

स्थान-कोप भवन समय-दोपहर।

( रानी सुरुचि कोप भवन में तन छीन मन मलीन होकर बैठी हैं। कभी कभी कुछ कहती भी जाती है )

सुरुचि-मैं बदला लूंगी जरूर लूँगी। किससे अपनी सौत से। किसी ने ठीक ही कहा है कि सौत मौत है। इसका ज्ञान अब मुझे हुआ है। दासी ने ठीक ही कहा था कि सुनीति भीतर ही भीतर बुरा मानती है। अच्छी बात है मान ले पर मैं उसकी अब दवा ही किये देती हूं। ( राजा उत्तान पाद का प्रवेश )

उत्तानपाद—प्रिये तुम क्यों दुखी हो।

बतावो तो किसने है तुमको चिढ़ाया।
बतावो तो किसने है तुमको कुढ़ाया॥

करूंगा मैं पामाल उसको यहाँ पर ।
बनूंगा मैं ही काल उसका यहाँ पर ॥

बतावो बतावो जल्दी बताओ; तुम्हारे दिल का दुखाने वाला कहाँ है। मैं उसकी शकल देखना चाहता हूँ। मैं उसकी सूरत देखना चाहता हूँ। कहो कहो। (कुछ रुक कर) नहीं तो सुनो—

है प्यासी तलवार खून की उसकी प्यारी।
उसे देख क्रोधाग्नि बुझेगी तुरत हमारी ॥

सुरुचि—(उसास लेकर) अजी मर्द जात ही ऐसी है जो वखत पर केवल अपने मतलब की बात करती है। काम निकल जाने पर वह औरत की एक भी नहीं सुनती है।

उत्तानपाद—सूनूंगा सूनूंगा प्यारी मैं तुम्हारी बात सूनूंगा।

मैं इन्द्र को भी जीत कर लाऊंगा अपने राज में।
मैं संसार को भयभीत कर बाधूंगा अपने काज में ॥
सब कुछ करूंगा हे सुरुचि अब मैं तुम्हारे वास्ते।
मैं डूब कर मर जाऊंगा सुरुची तुम्हारे वास्ते ॥

सुरुचि—तो हमारी बात मानोगे।

उत्तानपाद—हाँ हाँ जरूर।

सुरुचि—तो फिर हमारी बात मानोगे। बोलो मानोगे।

उत्तानपाद—हां हां प्यारी मानूंगा मानूंगा। तुम जो कुछ कहोगी सिर पर धारूंगा।

सुरुचि—अच्छा तो एक जंगल में दो सिंह नहीं रह सकते।

उत्तानपाद—इसका मतलब।

सुरुचि—इसका मतलब यही है कि या तो आप रानी सुनीति ही को यहां रखिये या मुझे। मैं सौत की बात नहीं सुन सकती, नहीं सह सकती, हाय उसकी बात से अभी तक है छाती धड़कती।

उत्तानपाद—रानी तू क्या है कहती सुनीति का कुसूर ?

सुरुचि—यह मैं कुछ नहीं जानती उस पापिनी चांडालिनी हत्यारिन को राज महल में से हटाइये। नहीं तो लो मैं ही चली जाती हूं। नदी नाले में डूब कर प्रान गंवाती हूं।

उत्तानपाद—अरे हाय हाय रानी सुरुचि इतना क्रोध न करो। देखो, सुनो मैं अभी सुनीति को दंड देने को तैयार हूँ। लेकिन तुम उसका कुसूर तो बतावो। भेद भाव कैसे बढ़ा कुछ इसको भी तो समझावो।

सुरुचि—फिर आप भेद भाव पूछते हैं। हां ठीक है आप क्यों हमारे लिये अपनी प्राण प्यारी राज महिषी को दंड देने लगे। मैं ही कूएं में कूद कर मर जाऊंगी, तुम्हारी आत्मा को न कलपाऊंगी। मेरे मरने पर सुख पूर्वक राज करना। सुनीति को रनिवास में रखना।

उत्तानपाद—वाह खूब कहा। भला तुम्हारे बिना मैं जीवन धारण कर सकता हूँ।

तड़पड़ाऊं तुम्हरे बिना, जैसे जल बिन मीन।
सच्ची बातें जान लो रानी परम प्रवीन॥

सुरुचि—रहने दीजिये, रहने दीजिये, अपनी चिकनी चुपड़ी बातें रहने दीजिये। मैं पुरुषों के कल पुरजों से भली भांति वाकिफ हूँ।

उत्तानपाद—नहीं रानी नहीं। इसे तुम झूठ न जानो। मुझे अपना सच्चा सेवक मानो। तुम मेरे प्रानों की प्रान हो भगवान हो। मेरे जीवन की सहारा हो। मेरे नेत्रों की श्याम तारा हो।

सुरुचि—हाँ योंही श्याम तारा बना बना कर विचारी पुतरी को डबडबाती आँखों के बीच पड़ी रहने दो। उसे आंसुओं में डूब डूब कर मरने दो।

उत्तानपाद—नहीं नहीं मैं उस श्याम तारा को अश्रुधारा में

डूबने इतराने न दूंगा। वरन उसे अपनी प्रेम रूपी नाव से बचाऊंगा। ( रुमाल से आंसू पोंछता है )

सुरुचि—( स्वगत ) अब कुछ अपने चंग पर चढ़ रहे हैं। अब अपनी वेदना बतानी चाहिये। ( प्रकाश ) देखो प्यारे मुझ से तुम्हारी बड़ी रानी बुरा मानती है उसकी बात नहीं सही जाती। इस लिये मैं चाहती हूं कि या वही राजमहल में रहे या मैं ही रहूं।

उत्तानपाद—जरी सी बात के लिये तुमने इतना क्लेश सहा। छि छिः अगर तुमने पहले ही यह जताया होता तो सुनीति को मैं कभी हटा दिये होता। खैर मैं उसे राजमहल से हटाकर कहीं किसी और ठौर पर रखवा देता हूं।

सुरुचि—हां नाथ जब तक आप वचन बद्ध होकर प्रतिज्ञा नहीं करते तब तक मैं नहीं मानूँगी। आप हाथ पर हाथ देकर कहिये कि रानी सुरुचि की बात सर्वोपरि होगी।

उत्तानपाद—हां हां तुम्हारी बात सर्वोपरि होगी।

सुरुचि—तो फिर बड़ी रानी सुनीति को राजमहल से हटाइये, उसे बन में भेजवाइये।

उत्तानपाद—क्यों बन में भिजवाने का क्या काम है। मैं उसे राजमहल से हटा देता हूँ।

सुरुचि—( तिनककर ) क्या फिर आप दिये हुए वचन से मुकरने लगे। आपने अभी कहा है कि रानी सुरुचि की बात सर्वोपरि होगी। फिर आप हमारी बात क्यों नहीं मानते।

उत्तानपाद—( स्वगत ) हाय हाय इस चांडालिन ने तो मुझे खुब बांधा। अब क्या करूं। निकलने का तो कोई उपाय नहीं है। पर उस सती साध्वी को कैसे जंगल में भेजवाऊं। हाय! लोग मुझे क्या कहेंगे। पर इस समय जरा भी चित में चंचलता

दिखलानी ठीक नहीं। (प्रकाश) रानी मैंने तुम्हारी बात मान ली। जो कहो सो करैं। जीए या मरैं।

सुरुचि—बस कल प्रातः काल होते ही बड़ी रानी सुनीति को बनवास दीजिये और मुझे राज महिषी कीजिये। स्वीकार है या नहीं

उत्तानपाद—हां स्वीकार।

सुरुचि—स्वीकार। स्वीकार। स्वीकार

उत्तानपाद—(धीरे से) हां स्वीकार।

सुरुचि—आप हमारी बात स्वीकार करते हैं फिर मुकर जाते हैं।

उत्तानपाद—नहीं प्यारी नहीं मैं तुम्हारी बातें सर्वोपरि जानूँगा। अब भविष्य में तुम्हें ही राज महिषी मानूँगा।

सुरुचि—ठीक है प्राणनाथ। (उठ कर) अब मुझे ज्ञात हुआ कि आप मुझ पर यथार्थ स्नेह रखते हैं।

उत्तानपाद—क्यों नहीं प्यारी तुम पर स्नेह न रखेंगे तो और किस पर रखेंगे। तुम हमारे जीवन की साथिनी हो।

सुरुचि—हां नाथ मैं तुम्हें संसार में सब से बढ़ कर समझती हूँ। तुम्हें ही अपना जीवनाधार और प्राण वल्लभ समझती हूँ। लेकिन तुम नहीं समझते। देखो नाथ अब तक तो मैं बड़ी रानी की माया जाल न समझ सकी थी लेकिन अब मैं सब समझती हूँ। कुछ नन्ही नादान नहीं हूँ। मैं भी एक राजा की कन्या हूँ।

उत्तानपाद—तुम्हें राजकन्या कहने से कौन इंकार करता है। हमारा सारा राज समाज तुम्हारे साथ एक राज कन्या सा व्यवहार करता है।

सुरुचि—अजी कोई करै या न करै मैं भी अपने बाप की लाड़ली बेटी हूँ। आप के यहां भले ही कूड़ा करकट समझी जाऊं, पर पिता के यहां तो खूब आदर पाऊं।

उत्तानपाद—नहीं प्यारी नहीं मैं तो तुम्हें अपने सिर की कलंगी समझता हूँ ।

सुरुचि—जी हां कलंगी समझते होते तो मुझे धोका देकर ले आते । जब एक घर में मौजूद थी तब दूसरे के लाने की क्या जरूरत थी ।

उत्तानपाद—पर बड़ी रानी तो तुम्हें दिल जान से चाहती है । वह तो तुम्हें छोटी बहिन कर के मानती है ।

सुरुचि—यह भी एक भुलावा है । यह भी एक सबूत है कि तुम उसे अधिक प्यार की निगाह से देखते हो इसी लिए मुझे एक लौंड़ी से भी घट कर रखते हो । खैर जो कुछ हो वचना-नुसार तुम्हें बड़ी रानी को बन में भिजवाना पड़ेगा ।

उत्तानपाद—अच्छा मैं भेजवा दूंगा लेकिन तुम तो शान्त हो।

सुरुचि—शान्त की बात तो कहते हो लेकिन जब तक मेरे नेत्र उस डाइन को इस राज गृह से निकाल कर जंगलों की ओर जाते न देखेंगे तब तक शयन न करेंगे ।

रो रो कर जब राजगृहों को छोड़ चलेगी ।
सुख सामग्री छोड़, मोड़ मुख बात कहैगी ॥
तभी हृदय में शान्ति, कान्ति मुख पर आवेगी ।
नहीं यहां से यही पापिनी चल जावेगी ॥

उत्तानपाद—छोटी रानी तुम न जाना मेरे दिलको न दुखाना

तेरे बिना जो प्राण राखु तो अधम यह प्रान है
जान सकती हो नहीं कितना हृदय में मान है ॥

लेकिन रानी छोटी रानी परमात्मा के लिये तू बड़ी रानी को कुछ न सुना ।उसे कुछ न कह—

प्रेम की मूरत है वह सूरत भी उसकी नेक है ।
दिल दया से है भरा लाखों में औरत एक है ॥
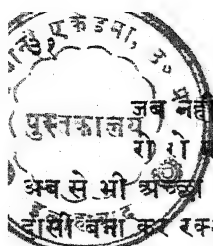
जब नहीं पावोगी अपने साथ में उस नार को ।
रो रो मरोगी हे सुरुचि तुम याद कर व्यवहार को ॥

अब से भी अच्छा है । उसे बनवास न दो । तुम उसे अपनी दासी बना कर रक्खो वह रहेगी, तुम उसे जैसे चाहो वैसे रखो वह रहेगी, पर जंगल में वह बहुत कष्ट सहेगी ।

सुरुचि—हां अब काले हृदय पर जो कपट के बादल थे वे भी हट गये । अब तुम्हारा दिल साफ नजर आता है ! लो मैं हो जा कर प्रान गँवाती हूँ । सुरपुर जाती हूँ ।

उत्तानपाद—नहीं नहीं ठहरो । सुनो । सुन कर काम करो ।

सुरुचि—मैं ठहर नहीं सकती । ( झटक कर जाती है )

उत्तानपाद—धोका यारो धोका । हाय—

( राजा गिर पड़ते हैं, रानी फिर आकर हंसती हंसती देखती है )

## आठवां दृश्य ।

स्थान—घर        समय—प्रातः काल

( दुर्लभ दास मौज में गाते बजाते हैं )

( गाना )

देखो यारो मैं भी हूं राजा का संगी साथी ।
मेरे घर भी झूल रहा है गदहा घोड़ा हाथी ॥
सब पर मैं सरदारी करता । राजा का भी सब दुःख हरता ॥
पैसा रखूं जहां से पाऊं । चाहे सूम दास कहलऊं ॥

दुर्लभ दास—सब कुछ होने पर भी एक बात की मुझे बड़ी दिक्कत है कि मेरी पहिली औरत हद से ज्यादा मोटी है, जो छोटी है, बड़ी खोटी है। क्या करूं खोटी को ही ग्रहण करना पड़ा। हमारे राजा साहिब छोटी रानी सुरुचि को ब्याह लाये तो दहेज में मुझे भी सुन्दरी मिली। कैसा सुन्दर नाम है। सुन्दरी। पहिली का नाम मुन्दरी। अच्छी बात है अब सुन्दरी मुन्दरी दोनों की जोड़ अच्छी है। मैं भी अब खूब पेट फुला कर चलूँगा। पूछने पर शान से कहूँगा कि मैं दो जोरू वाला हूँ लोग मुझे सूम कहते हैं कहा करें। जब पास चार पैसा तब सूझे ऐसा वैसा। किसी ने सच ही कहा है सर्वं गुणा कांचन माश्रयन्ते ( एक ओर देखकर कहा ) अरे बाप रे यह कौन है। यह तो मेरी वही पुरानी खटनही आ रही है। देखें अब क्या करती है। ( एक ओर खड़ा हो जाता है ) (दुर्लभ दास की पहिली स्त्री मुन्दरी का प्रवेश )

मुन्दरी—ऐ बलैया जाऊं। मेरे पति का जैसा नाम है वैसा ही गुण भी है। संसारमें इनके ऐसा आदमी पाना कठिन है। और वैसे ही मैं भी इनको मिली। चलूं जरा प्राणनाथ से कुछ बोल चाल लूँ। ( दुर्लभदास को देखकर ) ऐ बलैया जाऊं प्यारे तुम क्यों खड़े हो किनारे।

हे प्यारे तुम सच कहो, काहे बदन मलीन।
कि गांठी से गिर पड़ा कि काहू को दीन ॥

दुर्लभदास—क्या करूं प्यारी कुछ कहा नहीं जाता है।

मुन्दरी—नहीं बतावो तो सही जब से तुम नयी शादी कर लाये तब से मानो अपने ऊपर मुसीबत मोल लाये। हाय हाय न जाने कहाँ से डाइन आ गयी।

दुर्लभदास—(स्वगत) अरे न तुम कम हो और न वह कम है। तुम जितना खाती हो उतना वह फुरमाइश में खर्च डालती है। (प्रकाश) नहीं कोई ऐसी बात नहीं है। प्यारी तुम्हारा और उसका खर्च बराबर है।

सुन्दरी—तब फिर ठीक है। अच्छा प्यारे फिर बताओ तुम्हारा मुख उदास और बदन मलीन क्यों है।

फरकू—(बालक फरकू आकर) इसी लिये तुम भी तो कौड़ी को तीन हो। कुछ खबर भी रखती हो। जब से नयी सवारी आयी है तभी से हमारे सरकार को और भी हाय हाय समाई है। मारे खर्च के दिवाला तंग है। (स्वगत) पर बन्दे का तो सदा यहां चोखा रंग है।

सुन्दरी—हाँ फरकू इसी लिये तो मैं रोज एक बार इस सूरत को देख लिया करती हूँ कि कहीं मन से सवा मन तो नहीं हो गये। अरे मैं भूली कहीं सेर से पौन सेर तो नहीं हो गये।

फरकू—सेर क्या थोड़े दिनों में देखियेगा, ये छटंकी महाराज हो जायेंगे।

सुन्दरी—हां ऐसी ही बात है। आवो फिर इनसे उदासी का सबब पूछा जाय।

दोनों—[दोनों हाथ पकड़ कर] फिर बताइये और सच्ची सच्ची बताइये झूठी बात कहके हमें न भरमाइये।

दुर्लभदास—अच्छा फिर सुनो।

ना गांठी से गिर पड़ा औ ना काहू को दीन।
देते लेते देख के ताते बदन मलीन॥

(दोनों हंसते हंसते लोट जाते हैं)

दुर्लभदास—अरे तुम दोनों को हंसी ही सूझी है। यदि मैं राजा उत्तानपाद का दीवान होता तो कुछ खर्च ही न होने देता।

बलके उलटे ही लड़की वाले से कुछ लेता यहां तो मारे दान दर्पन के सारा खजाना खाली कर डाला। अगर ऐसे ही रवा रवी रही तो थोड़े दिनों में निकल जायगा दिवाला।

मुन्दरी—अच्छा मैं जान गयी। इसी लिये राजा साहब आज कल कुछ उदास से रहते हैं। अब मैं जान गयी उदासी का यही कारण है।

दुर्लभ—नहीं उदासी का कारण तो दूसरा ही है। कुछ छोटी रानी खरखल मिजाज की हैं इसी लिये वे दुखी रहते हैं।

मुन्दरी-तो इसमें दुःखी रहने की क्या बात है।

दुर्लभदास-क्यों नहीं अपने घर की भी तो हालत देख लो। यह तो मैं ही कुछ ऐसी समझदारी रखता हूँ कि हमारा तुम दोनों के संग निबह जाता है। दूसरा कोई होता तो नदी या तालाब में डूबकर मर जाता।

मुन्दरी-नहीं प्यारे ऐसा नहीं। देखो मैं तो तुम्हें कुछ भी दुःख नहीं देती हूँ।

फक्कू—नहीं ऐसे कहो कि अंडे की तरह सेतो हूं।

मुन्दरी-चुप नालायक! पाजी बदमाश, (दुर्लभ से) क्योंप्यारे।

दुर्लभदास—तुम नहीं पर तुम्हारी बहिन तो देती है। नई औरत मुन्दरी की एक न एक फुरमाइश लगी ही रहती है।

मुन्दरी—पर देखो मैं कैसे सादे सुदे चाल से रहती हूँ। जब तुम एक पैसा खरचने के लिये कहते हो तो मैं फिर अँधेले ही में काम चलाती हूँ।

फक्कू—( स्वगत ) अच्छी जोड़ी मिली है दऊ मिलाइन जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी।

दुर्लभदास-हाँ इसमें क्या शक है तुम्हारी तरफ से हमें तो कोई शिकायत नहीं है लेकिन लोग कहते हैं कि तुम ज़रा मोटी हो।

सुन्दरी-( आकर ) और मैं।

फरकू-(स्वगत) तुम जरा खोटी हो । (चटकने मटकने का भाव)

दुर्लभदास-तुम जरा दुबली हो । (-फरकू की ओर देख कर ) दुष्ट पाजी बदमाश।

फरकू—महाराज मेरी क्या बदमाशी है। आपही तो कह रहे थे कि नई औरत छोटी पर खोटी है।

दुर्लभ दास—नहीं बाबा नहीं, मैं कुछ नहीं कह रहा था।

सुन्दरी—सच बताओ नहीं तो लो मैं अपने घर चली जाती हूँ।

दुलभ दास—नहीं भाई नहीं घर न जावो मैं सच सच बता रहा हूं । हां (कुछ सोचकर) यह भलेही कहा था कि पहिले वाली महाकाया है और तुम महामाया हो। ( स्वगत ) या भगवान विचारे दुर्लभदास की महामाया और महाकाया के बीच में पड़कर अच्छी दुर्गति हो रही है।

सुन्दरी-हां महामाया कह सकते हो। यह हो तो देवी का नाम है।

सुन्दरी—और महाकाया किसी डाइन को कहते है। क्यों रे पतरकी। बोल बोलती क्यों नहीं।

सुन्दरी—हां रे मोटकी।

सुन्दरी—हां हां रे छोटकी।

सुन्दरी—हां हां रे बड़की।

दुर्लभ—अरे बाबा शान्त भी तो हो

सुन्दरी—शान्त कैसे हूंगी।

सुन्दरी—और मैं भी तुम्हारी जान लूंगी

फरकू—हां हां अच्छा मौका है ( सुन्दरी से) महामाया तुम लड़ो मैं पेटी खसकाता हूं।

सुन्दरी—हां हां पेटी उड़ा ले जा ( दुर्लभदास से) इस महामाई के रहते मुझे क्यों लाये। काम चलेगा कहीं मुंह बाये।

दुर्लभदास—लाये वैसा फल पाये। (गाना)

फंसी मोरी गम में जान—हाय हाय,
दोनों में है नखरा भारी ।
अरे मैं तो हूं हैरान ।—हाय हाय,
छोड़ दे बाबा अब सारी गत हो गई ।

सुन्दरी—दोनों ऐसे सूम कि मेरी पत खो गई,
दुर्लभ—मैं तो हू हैरान ।—हांय हाय,
फरकू—तुम सब लड़ो तो मेरी बन आई ।
सुन्दरी—पेटी खिसका कैसी करी सफाई ।
फरकू—अब तो मैं हूं दीवान । हाय हाय ।

( सब लड़ते झगड़ते जाते हैं, फरकू भी चटकता मटकता है )

## नवां दृश्य ।

स्थान—रनिवास समय—प्रातःकाल ।

( नेपथ्य में गाना हो रहा है )

उत्तानपाद—गाने का स्वर किसे प्रिय न मालूम होगा पर इस समय यह मुझे कर्ण कटु मालूम हो रहा है। मानो हमारी करनी पर यह भी रो रहा है। मैंने क्या किया। किया क्या बड़ी रानी के कहने से ही किया। अब बड़ी रानी उसका फल भोगै। मैं क्या करूं जैसी हो होतव्यता तैसी उपजे बुद्धि। (कुछ ठहर कर) रोऊं जी भर कर रो लूं। किसके लिये उस रानी के लिये जिसने अपने सुख की तिलांजुलि दे कर मुझको सुखी करने के लिये सब कुछ सहा। हाय उसी रानी को मैं बनवास दूंगा। वह उपवास करेगी मैं रनिवास में रहूंगा। वह रोवेगी मैं गाऊंगा। नहीं यह

कदापि नहीं हो सकता । मैं भी सर्वस छोड़ कर बनवासी हूंगा ।
( एक ओर खड़े हो जाते हैं )

( दूसरी ओर से रानी सुरुचि का प्रवेश )

सुरुचि—क्यों राजन क्या सोच रहे हो । यदि सोचनाही था तो वचन क्यों दिया । यश छोड़ अपयश क्यों नहीं लिया । अब से भी अच्छा है सोच लो अगर बड़ी रानी को नहीं छोड़ सकते तो मुझी को छोड़ दो । मैं अपने पिता के घर चली जाऊंगी फिर तुम्हें मुंह न दिखाऊंगी ।

उत्तानपाद—नहीं नहीं छोटी रानी ऐसा न करो । काम सोच समझ कर करो । ऐसा करो जिस में बड़ी रानी भी रह जांय बनबास का दुःख न उठांय । और तुम तो सिर माथन ही हो ।

सुरुचि—मैं ऐसे सिर माथन से बाज आयी । एक बात करो या इस पार वा उस पार

उतानपाद—नहीं नहीं रानी ऐसा न करो । अपने बचन बाणों से ऐसा न बेधो कि सदा के लिये यह हृदय जखमी हो जाय ।

सुरुचि—तो फिर मै ही जाती हूं ।

उत्तानपाद—नहीं नहीं तुम न जावो ।

सुरुचि—फिर उसी डाइन को बुलावो आज ही वारा न्यारा हो जाय । ( दासी से ) दासी जाकर बड़ी रानी को बुला ला ।

दासी—मैं अभी जाती हूं । ( गत )

उत्तानपाद—क्यों बुलाती हो रानी उन्हें क्यों बुलाती हो । उस धर्म की देवी को न बुलावः । उसे तुम मार कर रखो वह रहेगी, उसे तुम पीट कर रखो वह रहेगी पर उसे मेरी नजरों की ओट से न हटावो । हाय लोग क्या कहेंगे ।

सुरुचि—कहेंगे क्या । कुछ नहीं ।

उत्तानपाद—नहीं नहीं छोटी रानी सारा संसार मुझे थूकेगा

और वह भी कब तक थूकेगा जब तक कि यह संसार रहेगा। सूर्य-चन्द्र रहेंगे। जल वायु रहेगा। हाय यह पापी नाम सबकी बातें सुनेगा, सहेगा।

सुरुचि—तो क्यों सुनते हो। न सुनो। (सिर पीटकर) या भगवान फिर मुझी को मरने दो। मैं ही अपने मुंह में आग लगा कर जाती हूं। कूंए या तालाब में कूद कर मर जाती हूं।

जान लूंगी आज से मैं एक विधवा नार हूँ।
मान लूंगी हूं अभागी और बिन भरतार हूं।

उत्तानपाद—रानी तू क्या कह रही है।

सुरुचि—राजा मुझसे न बोलो मैं पागल हो गयी हूं। या तो मेरी बात करो या चुल्लू भर पानी में डूब मरो। बोलो बोलो क्या कहते हो।

उत्तानपाद—क्या कहता हूं कुछ नहीं। (रानी सुनीति का प्रवेश)

सुनीति—यह कैसा कांड मचा हुआ है। कुछ बात समझ में नहीं आती है। (पास जाकर) बहिन तुम ऐसी उदास क्यों हो। रोती क्यों हो। मथुरा में सब कुशल तो है। कुछ राजा ने तो नहीं कहा है।

सुरुचि—बस दूर रहो मुझ से न बोलो। दिल की बातें न खुलवावो और न खोलो। अब मैं तुम्हारे महल में पैर भो न रखूंगी।

सुनीति—(स्वगत) बात क्या है। सुरुचि का ऐसा रूखा व्यवहार क्यों है। अब तक तो यह बड़ी ही सभ्यता पूर्वक बर्ताव करती रही लेकिन आज इसको क्या हो गया है। (प्रकाश) बहिन सुरुचि अगर मुझसे कुछ कुसूर हो गया हो तो कहो मैं उसका प्रतिकार कर दूं।

उत्तानपाद—सुनो रानी इनका कहना है कि मैं तुमको अधिक प्यार करता हूं और छोटी रानो को नहीं। तुमको अच्छा महल

दिया है इन्हें खराब। तुम्हारे पास अनेकानेक रत्न खचित आभूषण हैं इनके पास नहीं।

सुनीति—लो अगर यही बात है तो मैंने आज से अपना सारा आभूषण छोटी रानी सुरुचि को अर्पित किया। जिस महल में मैं रहती हूँ। उसमें मैं कदम भी न रखुंगी। तुम जहां कहोगी मैं वहीं रहूँगी। जहां कहोगी वहीं जाऊगी।

दे दिया पतिदेव को जब मैंने तेरे वास्ते।
छोड़ा है अब संसार सुख सब मैंने तेरे वास्ते॥
राज का सामान भी देती हूँ तेरे वास्ते।
मोती महल भी छोड़ती हूँ आज तेरे वास्ते।

मैं एक साधारण कोठरी में भी दिवस बिता लूंगी पर रानी छोटी रानी तुम्हें दुखित न करूंगी। दुःख न दूंगी।

सुरुचि—अच्छा इन चिकनी चुपड़ी बातों को रहने दो। मैं तुम्हारे भ्रमजाल में फंसने वाली नहीं हूं। लो अपनी यह माला लो। (माला फेंकती है।) मैं क्या कोई कगांल की बेटी हूं।

उत्तानपाद--छोड़ी रानी तुम क्या कर रही हो। अपने लिये विषका बीया बो रही हो। तुम जहां कहोगी वहीं बड़ी रानी रहेगी।

सुरुचि—कह तो रही हूं कि मेरा इनका साथ नहीं हो सकता।

राज गृह मेरे लिये तो तुम इन्हें बनबास दो।
मेरे लिये पृथ्वी रहे तो तुम इन्हें आकाश दो॥

मैंने अच्छी तरह पता लगा लिया है कि बड़ी रानी कभी मेरा भला नहीं चाहती है। यह सदा मेरा अनभल ताकती है।

सुनीति—तो बहिन प्यारी बहिन तुम अफसोस न करो। मैं देव मन्दिर में ही निवास करूंगी। पूजा पाठ कर अपना पेट भरूंगी। सुनो छोटी रानी सुनो। कुछ मेरी भी सुनो।

सुरुचि—देखो रानी साहिबा तुम मुझ से बड़ बड़ न करो। जो कुछ कहना हो राजा साहिब से कहो।

उत्तानपाद—छोटी रानी अपने मर्मभेदी वाक्यों से क्यों किसी का दिल दुखी करती हो। तुम व्यर्थ की बात कहती हो।

सुरुचि—क्यों रानी की ऊपरी बातों में आ गये। बस तिरिया चरित्र ने खूब रंग जमाया है। राजन तुम किसी औरत के दिल की बात नहीं जान सकते। यह सुनीति ऊपर से तो भोली भाली जान पड़ती है लेकिन भीतर से भारी कतरनी रखती है। समय पड़ने पर यह कभी चूकने वाली नहीं है वरन हलाल करने वाली है।

सुनीति—बहिन तुम चाहे जो कुछ सोचो। मैं तुम्हें अपनी छोटी बहिनही जानती हूँ। मन में तुम्हें बड़ी करके मानती हूँ। हां मैं एक बात तुमसे चाहती हूँ।

सुरुचि—हां यही चाहोगी कि चाहे सर्वस्व ले लो। लेकिन पति से अलग न करो। (चमक कर) मरो जल्दी मरो।

सुनीति—हाँ बस छोटी रानी यही।

होगा पति दर्शन मुझे नित्य सबेरे सांझ।
दासी हो सेवा करूं, यदपि कहावो बांझ।

सुरुचि—और यही मैं नहीं दे सकती क्योंकि मैं जानती हूँ कि संसार में स्त्रियां अपना सब कुछ दे सकती हैं पर अपने पतिदेव के पवित्र प्रेम को वे किसी को नहीं दे सकतीं।

सुनीति—सखी तुमने ठीक कहा है, मैंने अपने पतिदेव को उसी दिन तुम्हें अर्पित कर दिया जिस दिन मैंने उन्हें दूसरा बिवाह करने के लिये मजबूर किया। पतिदेव को दिया लेकिन उनके प्रति जो पवित्र प्रेम था अभी तक वह मेरे पास है। मैं अपने उस पवित्र प्रेम को किसी को नहीं दे सकती। ब्रह्मा भी आवें तो उन्हें लौटा दूंगी विष्णु भी आवें तो उन्हें, हाथ जोड़ कर बिदा

करुंगी। महेश भी आवें तो कहूँगी हे शंकर आप यही करें कि मेरा पति प्रेम दिन दूना रात चौगुना हो।

सुरुचि—तो फिर कष्ट भोगने के लिये तैयार हो जा।

सुनीति—बोल बोल कौन सा कष्ट है मैं पति देव के लिये सब कुछ सहने को तैयार हूँ।

तैयार हूं पति के लिये तन मन व धन से जान से।
तैयार हूँ पति के लिये मैं दीन से इमान से॥
दे चुकी जब नाथ को तुमको सुरुचि, यह जान लो—
दे भी सकती हूँ उसी के हेत जीवन मान लो॥

सुरुचि—(राजा से अच्छा यह सब बखेड़ा रहने दो पहिले आप बताइये कि आपने मुझसे विवाह क्यों किया।

उत्तानपाद—यह जाने रानी सुनीति।

सुरुचि—क्यों बड़ी रानी साहिबा अब यह बताइये कि तुमने यह मेरा विवाह इनके साथ क्यों कराया?

सुनीति—संतान के लिये।

सुरुचि—तो फिर हमारी ही संतान सर्वोपरि होगी। वही राज सिंहासन की उत्तराधिकारिणी होगी।

सुनीति-हां हां वही होगी मैं राज सिंहासन की भूखी नहीं हूँ।

उत्तानपाद—भला वह दिन भी तो आवे कि राजमहिषी को पुत्र रत्न प्राप्त हो। मेरी मानसिक चिन्ता और दुख भी समाप्त हो।

सुरुचि—इसमें भी कोई सन्देह है महर्षि बोधायन ने उस रोज आशीर्वाद दिया था कि दोनों पुत्रवती हों। इस लिये यदि संयोग से बड़ी रानी को पीछे भी पुत्र हो तो राज्य का उत्तराधिकारी वही होगा।

सुनीति—रानी यह जान लो कि अगर मुझे पुत्र रत्न प्राप्त हो भी तो वह इस तुच्छ राज का भिखारी न होगा। वह राज्य पद

से श्रेष्ठपद को प्राप्त करेगा । परमात्मा की चिन्ता के आगे राज पद की चिन्ता नहीं करनी चाहिये ।

सुरुचि—बड़ी रानी बहुत वेदांत छांट चुकी हो । फिर क्यों नहीं जंगल में जाती हो यहां पर खड़ी होकर नाना प्रकार का भाव बताती हो ।

सुनीति—जंगल क्या यदि नाथ की आज्ञा पाऊं तो मैं पाताल में भी जाने को तैयार हूँ ।

सुरुचि—राजन ! क्यों नहीं इस डाइन को यहां से हटाते हैं । इसे निकल जाने के लिये क्यों नहीं जिह्वा पर बचन लाते हैं । ( बड़ी रानी से ) ओ बड़ी रानी तू यहां से निकल जा मैं तेरा मुंह देखना नहीं चाहती । तू तो मुझे डाइन सी है भाषती ।

सुनीति—नाथ आपकी क्या आज्ञा है । कुछ आप भी अपनी आज्ञा सुनायें । ( थोड़ी देर चुप देख कर ) समझ गयी नाथ समझ गयी । आप भी दुबिधा में पड़े हैं । खैर मैं चली जाऊंगी नाथ चली जाऊंगी । लेकिन एक बार फिर भिक्षा मांग लूं ।

सुरुचि—बस तुम्हें जो कुछ कहना हो मुझसे कहो ।

सुनीति—देख सुरुचि तू अपनी ही रुचि के मुताबिक काम न कर कुछ मेरी भी मान । मुझे अपना हितेच्छुक जान । मैं तुझसे एक भिक्षा मांगती हूँ ।

सुरुचि—मेरे पास कुछ नहीं है ।

सुनीति—मैं तेरा पैर छूती हूँ ।

सुरुचि—मैं तुझसे छोटी हूँ ।

सुनीति–इसी लिये तो कहती हूँ कि बड़ी जान कर लिहाज कर ।

सुरुचि—लिहाज करना मैंने छोड़ दिया है ।

सुनीति—मैं और कुछ नहीं चाहती, केवल पतिदेव का दर्शन ।

सुरुचि—वह तेरे भाग में नहीं है ।

सुनीति—रानी अगर तू अपने भव्य भवन में आश्रय नहीं देती है तो अपने महल के बाहर एक झोपड़ी में ही रहने दे।

सुरुचि—यह भी नहीं हो सकता। तू जा यहां से चली जा।

सुनीति—नाथ आप कुछ नहीं बोलते।

उत्तानपाद—मैं क्या बोलूं। इधर है कूंआ उधर है खाई।

सुनीति—न बोलो नाथ न बोलो। मैं दुःख की कारिणी नहीं होना चाहती। मैं बिवाह कराके दुखी नहीं हुई हूँ वरन प्रसन्न हूँ कि पति सेवा का मुझे और भी अवसर मिला। जाती हूँ नाथ जाती हूँ। पर देखो बहिन सुरुचि (सुरुचि से) यह कहे जाती हूँ कि पतिदेव को किसी प्रकार का कष्ट न हो।

सुरुचि—अच्छा अपना उपदेश अपने पास रख। मुझको कर्तव्य का ज्ञान सिखाने आयी है। अपनी शिक्षा अपने साथ रख।

सुनीति—न सुनो बहिन न सुनो पर फिर कहती जाती हूँ कि पतिदेव को कष्ट न हो। नाथ जाती हूँ। अन्तिम प्रणाम। मुझ अभागी के भाग्य में यही लिखा था कि मैं पति के चरणों की सेवा भी न कर सकूं। नहीं सही पर—

> यह हृदय हो टूक बरु, पर नाथ नाहिं बिसारिहौं।
> ध्यान कर पति देव का, जगदीश नाम उच्चारिहौं॥

रहो कुशल से रहो,राजा और रानी कुशल से रहो,प्रनाम अन्तिम प्रनाम। नाथ जाते समय चरन छूने दो। (राजा के चरणों को छूती है)

सुरुचि—छू और ऐसे छू ( पैर से ठुकराती है ) (राजा से) चलो हम दोनों राजमहल में चलें ( राजा को ले जाती है। ( गत )

सुनीति—गये दोनों गये। जांय खुशी से जांय। खुश रहैं आबाद रहै (एक ओर जमीन पर गिर पड़ती है।)

---

## दसवां दृश्य।

स्थान—राजमहल, समय दोपहर

( राजा उत्तानपाद सोच करते हुए दिखाई पड़ते हैं )

उत्तानपाद—हाय मैंने क्या किया। कुछ समझ में नहीं आता कि विधाता ने मुझसे कौन सा काम कराया। बनवास बनवास उस देवी को जो मेरे लिये प्राण देने को उद्यत रहा करती थी। अपने नाना प्रकार का दुःख सहती थी, लेकिन मुझे जरा भी कष्ट होने नहीं देती थी।

दुर्लभदास—मैं देखता हूँ कि जिस रोग में मैं मुबतला हूँ उसी में राजा साहब भी हैं। यह अपनी छोटी रानी के ऊपर न्यौछावर हैं और मैं भी महाकाया की अपेक्षा महामाया पर बलिहार हूँ। चलूं जरा कुछ हाल चाल देखूं ( प्रकाश ) राजन! प्रणाम, कहिये सब आनन्द तो है।

उत्तानपाद—आनन्द का पड़ाव अभी दूर है। दिल तो आफत और बिपत्ति के नशे में चूर है।

दुर्लभदास—भला कुछ सुनूं भी सही क्या रंग है क्या ढंग है।

उत्तानपाद—ढंग अच्छा नहीं है और रंग भी कुछ फीका है।

दुर्लभदास—फीके की बातही है धर्मावतार! हम दोनों एकही रोग में गिरफ्तार हैं।

उत्तानपाद—क्या तुम्हें भी कोई रोग व्याप्त है, मैं तो अपनी छोटी रानी से परेशान हूँ। रात दिन हैरान हूँ।

दुर्लभदास—फिर जब राजा हैरान हो गया, तब क्या प्रजा हैरान न होगी। मैं भी उसी रोग में मुब्तला हूँ सरकार।

उत्तानपाद—तुम्हारी हैरानी क्या है।

दुर्लभदास—हमारी हैरानी भी आपको दी हुई सौगात है। वही महामाया। जिसे दी है आपने करके दाया।

उत्तानपाद—अजी हमारी दाया।

दुर्लभदास-हां महाराज आप की ही दाया। पहिले महाकाया तो थी ही अब यह महामाया भी आ गयी है। जैसे चक्की के दो पत्थरों के भीतर बिचारे अनाज की जो दशा होती है वही बिचारे दुर्लभ दास की है। महाराज आप किसी तरह एक से पिंड छुड़ाइये तब उद्धार पाइये।

उत्तानपाद—उद्धार का कोई उपाय दिखाई नहीं पड़ता। अब तो जब तक यह शरीर शून्य होकर सुलगती चिता पर नहीं सोता, तब तक यह उत्तानपान रहेगा रोता।

दुर्लभ दास—फिर तो रोना ही रोना हाथ है। किसी ने सत्य ही कहा है।

मक्खी बैठी शहद पर पंख गयो लपटाय।
हाथ मले औ सिर धुने लालच बुरी बलाय॥

उत्तानपाद—दुर्लभ दुर्लभ इस दोहे का अर्थ समझ में नहीं आया।

दुर्लभ दास—सुनिये महाराज मैं सुनाता हूँ। संसार में जो लोग घर के सुन्दर स्वादिष्ट छोहारों को छोड़ कर जंगल की बैर पर दांत जमाते हैं वे बहुत दुःख पाते हैं।

उत्तानपाद—दुर्लभ यह बातभी मेरी समझ में नहीं आयी।

दुर्लभदास—मैं समझाता हूँ महराज। इसका मतलब यह है कि आपने बड़ीरानी के रहते व्यर्थ ही दूसरा विवाह किया। बड़ी रानी कैसी सुशीला और शीलवती हैं।

उत्तानपाद—हैं कहां, थी। दुर्लभ दास अब वर्तमान काल न कह कर भूतकाल का स्वप्न देखो। शोक संतप्त हृदय को शांत करने वाली चली गयी।

दुर्लभ दास—कहां प्रभो कहाँ।

उत्तानपाद—बन में, जंगल में।

दुर्लभ दास—मैं अभी जाकर बुला लाता हूँ । सरकार ।

उत्तानपाद—नहीं दुर्लभ ऐसा न करना । नहीं तो मेरा यहां रहना कठिन हो जायगा । राजा उत्तानपाद का दुःख और भी बढ़ जायगा

दुर्लभ दास—महाराज आप का रहना कठिन होगा । यह आप कैसी बात कहते हैं ।

उत्तानपाद—नहीं मैं ठीक बात कह रहा हूँ । दुर्लभ हमारी बात को झूठ न जानो । बल्कि सत्य मानो ।

हा मुझ सा हत भाग्य नहीं कोई जग मांही ।
हा मुझ सा हत बुद्धि नहीं कोई जग मांही ॥
मैंने सुनीति को अनायास बनवास दिया है ।
हां मैंने क्यों दुष्टा का सहवास किया है ॥
फँस कर माया जाल मांहि किय अनरथ भारी ।
है ऐसा जो मुझे बचावे कोई उपकारी ॥

दुर्लभदास-राजन आप घबड़ाइये नहीं मैं आपको बचाऊंगा ।

उत्तानपाद—पर कैसे बचावोगे ।

दुर्लभदास—अभी दीवान को मिला कर छोटी रानी को मथुरा भेजवा देता हूँ । बड़ी रानी को बुलवा भेजता हूँ ।

उत्तानपाद—नहीं नहीं दुर्लभ ऐसा न करना । मैं स्वयं कभी कभी चुपके से बड़ी रानी से मिल लिया करूंगा । उसे जंगल में ही रहने दो । उसे पुनः बुलाने से मैं झूठा बन जाऊंगा । छोटी रानी को क्या मुंह दिखलाऊंगा ।

दुर्लभदास—( स्वगत ) हाय हाय रे छोटी रानी । बड़े लोगों की इच्छा जब घर के पकवानों से भर जाती है तो बाजारु इमली की चटनी बड़ी अच्छी मालूम होती है । वैसे ही हमारे महाराज की हालत है । " अब तो भई गति सांप छछुन्दर केरी " ( प्रकाश )

अच्छा महाराज अब आप की तरह मैं भी अपनी महामाया को और कहीं भेज देता हूँ। पहिले तो वह बहुत अठलाती है दूसरे बातें भी बहुत सुनाती है।

उत्तानपाद—अजी चार बात सुन कर रह जाना। गृहस्थी में जो पुरुष चार बातें सुन कर रह जाता है उसका परिणाम अच्छा होता है। और जो सड़ी सड़ी सी बात पर ऐंठ पड़ता है। उसका जीवन बराबर दुःखमय रहता है।

दुर्लभ दास—अच्छा महाराज तो अब आप ही के नुसखे के मुताबिक मैं अपने रोग की दवा करूंगा।

उत्तानपाद—पर हमारी दवा तो कुछ बतावो। मुझे रह रह कर प्यारी सुनीति याद आती है। हा! मुझे चुप जान कर प्यारी ने उसास लिया। मेरा पैर चूमना चाहा, इस पर हा पापीयसी दारुणे कुत्र कलंकिनो सुरुचि ने उसे ठुकरा कर मुझे रनिवास में चलने के लिये मजबूर किया। हा चांडालिनी सुरुचि तुझे कुछ भी दया न आयी। तूने किस अपराध पर अपने हित चलनेवाली सुकुमारी पर कुठारघात किया।

दुर्लभ—महाराज अब शोक करके क्या करेंगे। धीरज धरिये आगे का काम करिये।

उत्तानपाद—मित्र दुर्लभ धीरज नहीं धरा जाता। मन रह रह के है अकुलाता। हा मृदुभाषिणी सरल सुनीते तुम्हारे बिन कैसे दिवस व्यतीत होंगे। हा जीवन तोषिनी प्रणयनी तूने अपना काल स्वयं बुलाया। हां मैंने ही तेरे कहने से विषमयी भुजंगिनी को दूध पिला कर अपने पास रक्खा। हाय! आज उसी के विषमय दंश से यह संकट उपस्थित हुआ है।

दुर्लभदास-अच्छा चलिये महाराज चला जाय। इसका कुछ प्रतिकार किया जाय, अभी बड़ी रानी साहिबा गयी न होंगी।

( रनिवास में दास दासियों का प्रवेश )

रानियां–महाराज आप तो यहां है और वहां बड़ी रानी सुनीति राजमहल छोड़ कर बन गमन कर रही है ।

उत्तानपाद–कहां है कहां है । रानी सुनीति कहां है । मैं उसे न जाने दूंगा । मैं बल्के छोटी रानी को उसके लिये त्याग दूंगा । मैं सारा राज छोड दूंगा । रानी नहीं मानेगी तो मैं भी बनवासी हूँगा । सब कुछ सहूँगा पर उसी के साथ रहूँगा ।

दुर्लभदास—महाराज पहिले वहां पहुँचा भी तो जाय । अहा वह देखिये सारी प्रजा उमड़ी हुई चली आ रही है । जान पड़ता है रानी के बन गमन का हाल सबको मालूम हो गया है । चलिये फिर हम लोग भी चलैं ।

उत्तानपाद–मालूम पड़ता है रानी ने बन गमन की तैयारी कर ली । चलो चल कर रानी को समझावें और वापस बुला लावें ।

( दोनों गये । साथ में दास दासियां भी गयीं )

## ग्यारहवां दृश्य ।

स्थान–नगर        समय–प्रातः काल

( रानी सुनीति अपनी सखी सहेलियों से बिदाई ले रही है )

सुनीति–राज गृह तुझे प्रनाम । प्रनाम और आखिरी प्रनाम । सखियों प्यारी सखियों !

अब तक सबको रखा था निज शीश चढ़ाकर ॥
छमियो चूक हमार हृदय से दोष भुलाकर ।
इतने दिन तक रहा राजसी ठाठ भाग में ।
अब सारा सुख है मुझको सम्पत्ति त्याग में ॥

सब—रानी बड़ी रानी आपके साथ साथ हम सब लोग भी जंगल ही में चलकर रहैं, जो दुःख आप सहैं वही हम भी सहैं ।

सुनीति-नहीं ऐसा न करो यह तुम सब को लाजिम नहीं है।

सब-पर हम सब आपकी प्रजा हैं ।

सुनीति—हाँ हाँ यह मैं मानती हूँ पर सब से बढ़कर अपने पतिदेव को जानती हूँ। तुम सब पहिले उनकी आज्ञा मानो पीछे मुझे जानों।

सब-नहीं रानी साहिबा आप या तो रनिवास में रहैं या हम सबको भी साथ साथ लेती चलैं। हम ऐसे राजा के आधीन नहीं रहना चाहते जो राजा होकर अपने कर्तव्य पालन में चूकता है।

सुनीति-नहीं नहीं मेरी प्यारी प्रजा ऐसा न कहो। राजा की सब बातें मेरे लिये सहो। अब जावो लौट जावो इस अभागिन के लिये व्यर्थ का कष्ट न उठावो।

सब-नहीं नहीं हम सब आपके साथ चलेंगे। जहाँ आप रहेंगी वहीं सब प्रजा भी रहैगी।

सुनीति-मेरी प्रजा, प्यारी प्रजा फिर इसका मतलब यह कि मैं बन में न जाकर पति के लिये कालस्वरूप हो जाऊं। सुखमय जीवन को दुःखमय बनाऊं। नहीं नहीं यह मैं नहीं चाहती। हिन्दू स्त्री का धर्म है कि पति जैसे सुखी रहे वैसे ही रखै। हिन्दू स्त्री सुख के लिये नहीं बरन तपस्या के लिये पैदा हुई है।

यह तन है पति पूज्यदेव का नहिं बस मेरा।
इससे तुमही कहो लगे क्या मेरा तेरा॥

इससे जावो लौट जावो। सुख से रहो, हमारे लिये चिन्ता न करो। परमात्मा चाहेगा तो शीघ्र ही दिन फिरेगा। और न फिरै तो पतिदेव के नाम पर जंगल ही में मेरे लिये मंगल है। मैं उसी की उपासना में अपना दिवस बिताऊंगी। उसी के नाम पर परमात्मा का गुण गाऊंगी।

( राजा उत्तानपाद का दुर्लभदास के साथ साथ प्रवेश )

उत्तानपाद—कहां है कहां है। मेरी जीवन संरक्षिणी कहां है। मेरी प्राणदायिनी कहां है। सुनीति, सुनीति रानी सुनीति। तू कहां जा रही है। (सब लोग सजल नेत्रों से नीचे की ओर देखते हैं। रानी दौड़कर राजा उत्तानपाद का पैर पकड़ती है)

सुनीति—नाथ आप धीर वीर होकर इतने अधीर हो रहे हैं। आप जिससे सुखी रहैं वही मुझे करना है। यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं अभी रनिवास लौट चलूं।

सब—हां हां लौट चलिये।

सुनीति—प्रजा वर्ग ठहरे। बिना सोचे समझे बात चीत न करै। राजा नहीं चाहते हैं कि मैं जंगल में जाऊं, पर छोटी रानी चाहती हैं।

सब-आप छोटी रानी की बात न मानैं। प्रजा उन्हें क्या जानैं।

सुनीति—प्रजा वर्ग सुनै। राजा बचन वद्ध हो चुके हैं। बचन देकर उससे मुकर जाना यह वीरों का लक्षण नहीं है। अस्तु मेरे वास्ते मेरे पतिदेव संसार में झूठे कहलावें यह मुझे नहीं रुचता।

ऐसे समय में धर्म है मैं छोड़ दू रनिबास को।<br>
पतिदेव के सुख के लिये मैं चल पड़ूं बनवास को॥

उत्तानपाद—हाय! पापमति निशाचरी सुरुचि ने न जाने कैसा मोहजाल बिछाया कि मैं उसमें फंस गया। उसने ईर्षा वश मुझसे बचन लेकर तुम्हें बन भेजने की आज्ञा ले ली। हाय यदि मैं पहिले उसकी दुष्ट वासना को जानता तो कभी बचन न देता!

सुनीति—राजन इसमें जरा भी दुःख अपने हृदय में न आनो मुझको भी इसके लिये दुखी न जानो। मेरे धन्य भाग जो मैं अपने पूज्य पतिदेव के लिये अपने शरीर को बनवास दे रही हूँ।

उत्तानपाद—अभागे राजा तू क्या कर रहा है।

दुर्लभदास—गुण छोड़ अवगुण ले रहा है सुख छोड़ दुख की मोटरी ढो रहा है।

उत्तानपाद—हाँ दुर्लभदास ऐसी ही बात है। मैं गुण छोड़ अवगुण ले रहा हूं। सुख छोड़ दुःख का स्वागत कर रहा हूँ।

छोड़कर अमृत को मैं अब कर रहा विषपान हूं।
हाय रानी के बिना यमदेव का मिहमान हूँ॥
छोड़ दूंगा प्रान को, अरु जान को अरु माल को।
तुम करो बनवास तो मैं भी बुलाऊं काल को॥

सब—रानी जी आप बन की ओर न जाइये। पीछे लौट कर राज महल की शोभा बढ़ाइये।

सुनीति—राज महल की शोभा छोटी रानी से होगी। मुझसे नहीं। मैं सच कहती हूँ इसे तुम सच मानो मेरा कहा वृथा न जाना। बस अब प्रनाम और सब को आखिरी प्रनाम। मैं परमात्मा से चलते समय यही प्रार्थना करती हूं कि वह छोटी रानी का प्रेम पति सेवा में बढ़ाता ही जाय। (सुरुचि आती है)

सुरुचि—पतिदेव में प्रेम बढ़ाने वाली तू कौन। रानी सुनीति। मूर्खा अभी तक तू यहीं पर है। अपनी माया जाल से प्रजा को भी उभाड़ लाई है। यहां पर भी खूब माया फैलाई है। (राजा से) राजन चलिये आप इस औरत की घड़ियाली आंसू पर तरस न खाइये। यह ऊपर से प्रेम जनाती है पर दिल के भीतर आपको फंसाने के लिये नाना प्रकार का जाल बिछाती है। यह अपने तिरिया चरित के जाल में आप को फंसावेगी, अपनी हंसी के साथ साथ आप की भी हंसी करावेगी।

सब—छोटी रानी आप क्यों इनको बनवास दे रही हैं।

सुरुचि—मैं क्या जानूं। यह सब राजा जाने। यह तो रानी

सुनीति की इच्छा पर निर्भर है। चाहे वह अपने पति की आज्ञा मानें या न मानें।

सब—(सुनीति से) तो फिर आप लौट चलिये।

सुरुचि – अब तो बड़ा मुशकिल हुआ चाहता है। क्या किया जाय। (प्रकाश) लो मैं ही अपने घर लौट जाती हूँ। अब जो मुंह दिखाऊं तो अपने असल बाप की—

उत्तानपाद—रानी छोटी रानी यह तुम क्या बक रही हो। प्रजा वर्ग सुनो छोटी रानी को यह अभीष्ट नहीं है कि बड़ी रानी यहां रहैं, अस्तु इसी लिये सुनीति को बनवास की आज्ञा मैंने दी है। आप लोग मेरा कहा मानैं। इस झगड़े के बीच में आप लोग अपने को न आनैं।

सुरुचि—यह भला कोई बात है। जब एक दफे आज्ञा दी गयी फिर आप उससे क्यों मुकरते हैं। सच क्यों नहीं कहते हैं।

उत्तानपाद—मैं क्या कहूँ। मुझसे कुछ कहा नहीं जाता है। मेरी गति सांप छछुन्दर सी है। मैं क्या करूं। मैं बड़ी रानी को बनवास। (बीच में बात काट कर सुरुचि बोलती है)

सुरुचि–कह तो रहे हैं कि बड़ी रानी को बनवास दिया गया।

सुनीति—फिर बिदाई और अंतिम बिदाई।

है, राजन अरु प्रजा वर्ग अब सबको है आखिरी प्रनाम।
अपने पूज्य पती के ही हित मैं करती बनवास ललाम॥
जावो तुम सब लौट गृहों को, अपना अपना काम करो।
मेरे दुःख को दुःख न जान कर अपने मन में धीर धरो॥
छोटी रानी है तुमको परनाम विनय युत आखिर बार।
करना पूज्य पती की सेवा तन मन धन से होय निसार॥

सुरुचि—जा जा चली जा—

देती है शिक्षा मुझको, भावा पर भाव बताती है।
जाने का जंगल में मन है, या नहिं, बात बनाती है

सुनीति—जाती हूँ रानी जाती हूँ। तुम आज से छोटी रानी नहीं बड़ी रानी हो। इसी वास्ते प्रणाम करती हूँ। जाती हूँ अब जो मैं जाती हूँ। प्रणाम सबको आखिरी प्रणाम। पूज्यपति का पैर तो छू लूं। ( पैर छूकर )

इन्हीं चरनों की सेवा से तरी भारत की नारी है।
इन्हीं चरनों की सेवा में मुझे बन भी सुखारी है॥
अगर होगी कृपा मुझ पर चरन की तर मैं जाऊंगी।
पति देवता का स्वग में भी सुन्दर गीत गाऊंगी॥
नाथ अब तक भूल जो मुझसे हुआ विसराय दो
जंगल में जाने के लिये.........

सुरुचि—हे नाथ अपनी राय दो।

सुनीति—हां रानी हां मैं जाती हूं और अभी जाती हूं। सारी प्रजा लौट जाये। मेरे साथ साथ व्यर्थ अपना समय न गंवाये। सबको प्रनाम और आखिरी प्रनाम। ( चली जाती है )

उत्तानपाद—गयी और चली गयी। हाय—

सुरुचि—मेरी इच्छा पूरी भयी

सब—पर हम लोगों की इच्छा दिल में ही रह गयी। चलो हम सब भी बड़ी रानी के साथ साथ चलें।

उत्तानपाद—नहीं ठहरो ठहरो किस लिये। एक उस रानी के लिये जिसने अमृत छोड़ विषको अपनाया है। पाप छोड़ पुण्य कमाया है। किसके लिये मेरे लिये। हाय बड़ी रानी गयी।

सब—हाय बड़ी रानी गयी। ( सब लोग शोक चिन्ता से पृथ्वी की ओर देखते हैं। राजा उत्तानपाद गिरते हैं )

यवनिका पतन।

# दूसरा अंक
## पहिला दृश्य ।

स्थान—घोर कानन　　　　　　　　　　समय—सन्ध्या ।

( महारानी सुनीति सादे वस्त्र में आती हैं )

सुनीति—( गाना )

धन्य धन्य प्रभु तोरी माया ॥टेक॥
अगम अगोचर लोग कहत हैं ऋषि मुनिकर समुदाया।
फूलत फलत लोग हैं जग में नित्य तुम्हरी ही दाया ।
यह दुखिया भी बचै प्रभू जो होय तुम्हारी छाया ॥

मैं बन में आ गयी । अस्तु बन देवी और देवताओं को बारम्बार नमस्कार और प्रणाम है । अहा—

झर झर झरना झरत शैल सो करि रवभारी
कतहुं गिरत हर हर हराय कर बृक्षन डारी
है पथरीला मार्ग, चलत में पड़त फफोला
ठहरूं, छिन विश्राम करूं, नहिं जात है डोला

कैसे कैसे मनोहर बृक्ष मन को हरण किये लेते हैं । बृक्षों की शोभा तो है ही साथ ही उनके लतावों की शोभा हो निराली है । कोकिल कीर मयूर इत्यादि पक्षियों से न कोई खाली है । अहा! ये कलरव कर एक पेड़ पर से दूसरे पेड़ पर जाते हैं । हा इस समय पतिदेव खास करके याद आते हैं, कि उन्हों ने मुझको छोड़ सुरुचि से स्नेह बढाया और मुझे जंगल में पठाया । पर जैसे ये जंगल के भौंरे सहजही सुन्दर और सुहावने मालूम पड़ते

हैं उसी प्रकार पतिदेव भी मुझे प्रिय लगते हैं। (कुछ ठह कर) अहा! इस निर्जन और पवित्र कानन में पैर धरते ही मेरा चित्त जो पारिवारिक झंझटों में परितृप्त था अब प्रफुल्लित हो उठा है। यहां के सुगन्धित और सुशीतल वायु से चित्त प्रसन्न हो रहा है। (एक ओर देख कर) यह तो कोई तपोभूमि मालूम पड़ती है। अहा बनवासी मुनियों के आश्रम की शोभा ही निराली है। जिसके केवल दर्शन मात्र से मन की सारी चिन्ताएं व कु-वृत्तियां दूर हो जाती हैं। हृदयाकाश में वैराग्य सूर्य का विकाश होता है। आश्रम के निकट ही नाना प्रकार के जीव जन्तु सब भय त्याग कर विचर रहे हैं। (कुछ ठहर कर) परमात्मा जो करता है भले ही के लिये करता है। अस्तु प्राण नाथ ने मुझे जंगल में भेज कर अच्छा ही किया। हा प्राणेश्वर? हा धर्मशील राजन इस समय तुम मुझे बारम्बार याद आ रहे हो।

(दो तीन ऋषिकुमार व कन्यावों का प्रवेश)

सब—यह तो कोई उच्च बंश की दुखिया मालूम पड़ती है, जो भटकती भटकती इधर जंगल में आ निकली है। चलो हम लोग इससे सब हाल पूछें। ठहरो सुनो वह कुछ कह रही है।

सुनीति—हाय प्राणनाथ क्या मेरे लिये देव मन्दिर के एक कोने मेंभी आश्रय न था। मैं राज के लिये,सुख साज के लिये नहीं रहना चाहती थी केवल आप के दर्शन और पद पूजा की अभि-लाषिणी थी। खैर वह भी परमात्मा को मंजूर न था। अस्तु मेरे लिये अच्छा ही हुआ। लेकिन प्राणनाथ तुम कैसे होगे, क्या करते होगे बस यही जानने को इच्छा हो रही है। पवनदेव पवनदेव प्राणनाथ की खबर मुझे देना।

सब—मातेश्वरी किसको खबर भेज रही हो।

पहिली—देवी तुम कौन हो इस जंगल में कैसे आ गयी हो।

सुनीति—मेरा भाग्य मुझे यहां खींच लाया है ।
सुहागिन पर अभागिन हूं मैं किस्मत की भी मारी हूं ।
न जाने कौन सा था पाप कि दुनियां को भारी हूं ॥

दूसरी—फिर तुम्हारा भाग तो बड़ा खराब मालूम पड़ता है ।

सुनीति—नहीं नहीं ऐसा न कहो । मेरे भाग्य से बढ़ कर और किसका भाग्य हो सकता है । ऋषि मुनियों के आश्रम का दर्शन होगा, आप लोगों की सेवा करने का अवसर मिलेगा । बन देवियों धन्य मेरे भाग्य जो आप लोगों के दर्शन हुए ।

तीसरी—देवी हम लोग बन देवी नहीं है । हम ऋषि पुत्र और कन्याएं है । सूखी सूखी लकड़ी बटोरने के लिये यहां आई हूं । चलो हमारे संग आश्रम में चलो ।

चौथी—तुम्हारी अवस्था देख कर हम लोगों को दुख हो रहा है । जी चहता है तुम्हारी सेवा किया ही करूं । तुम कौन हो?

सुनीति—मैं राजा श्रीउत्तानपादजी की स्त्री हूं । नाथ ने अपनी छोटी रानी के अनुरोध से मुझे बनवास दिया है । पति की आज्ञा मान कर मैं इस ओर आयी हूं ।

पहिली—राजा का हृदय कैसा था । जो तुम सरीखी स्त्री को बनवास दिया है । देवी चलो तुम हमारे आश्रम में चलो । हम सब अपनी गुरुआनी से सारा वृन्तात कहेंगे कि राजा उत्तानपाद ने यह काम ठीक नहीं किया ।

सुनीति—भला किया या बुरा किया पर तुम लोग मेरे प्राण नाथ को बुरा न कहो । वे वीर हैं, धीर हैं, क्षत्रिय कुमार हैं । इन्हों ने जो कुछ किया सो अच्छा ही किया । यह सब मेरे भाग्य की बलिहारी है ।

सब—रानी चलो हम सब हाथ जोड़ कर आप से प्रार्थना करती हैं कि आप हमारे आश्रम में चलें ।

ऋषि पुत्र—मातेश्वरी हमारे आश्रम में चलो हम सब तुम्हारे पुत्र हैं तुम हमारी माता हो।

सुनीति—बेटी और बेटियो मेरे लिये तो निर्जन बन ही अच्छा है। वहां कौन मुझसे पूछने आवेगा कि तू कौन है। आश्रम में चलने से नाथ की हंसाई होगी। मेरी भी रुसवाई होगी। लोगों के पूछने पर मैं क्या कह के उत्तर दूंगी कि मैं अमुक राजा की रानी हूं।

दूसरी—तो इससे क्या। अपना परिचय देने में क्या हानि है। क्या आपने न जाने की ही ठानी है।

सब—चलो रानी चलो आश्रम में चलो। वहां तुम्हें किसी प्रकार का दुख न होगा वरन तुम्हारा मंगल होगा।

सुनीति—मेरे मुख से पटरानी का शब्द सुन कर लोग हंस पड़ेंगे। अस्तु हे ऋषि कन्यावों तुम लोग जाओ और मुझे योंहीं यहीं जंगल में भटकने दो। मुझे अपने भाग्य से खूब लड़ने दो।

सब—अच्छा तुम एक बार तो आश्रम में चलो। फिर वहां से जहां चाहे तहां जाना।

सुनीति—चलो चलें लेकिन एक शर्त पर आश्रम में चलूंगी।

सब—वह क्या

सुनीति—यही कि—

नाथ की निन्दा हो नहीं, मुझे अभागी जान।
इतना मानों तो करूं, आश्रम ओर पयान।

सब—हां हां आपके पति की निन्दा नहीं होगी। आप हम लोगों के आश्रम में चलैं।

सुनीति—क्योंकि आर्यों में पातिव्रत धर्म बड़ा ही कठिन है। पति चाहे कितनाही दुराचारी क्यों न हो पर स्त्री को चाहिये कि उसकी निन्दा न करै वरन उसके पापाचरण को अपनी कठिन

तपस्या से दूर करने का प्रयत्न करें । जो स्त्रियां अपने पति की निन्दा सुनती हैं उनके चेहरे की कांति का ह्रास होता है । उसका सारा पुण्य खोता है ।

सब—देवी विश्वास रखिये आपके पति की निन्दा नहीं होगी ।

सुनीति—चलो मैं चलती हूं । और भी सुनिये—दक्ष की कन्या सती ने अपने प्रियतम की निन्दा सुन कर वहीं अपना प्राण त्याग किया था । अस्तु पति की निन्दा सुन कर मैं भी वहीं कहीं पहाड़ी नदी में डूब कर मर जाऊंगी ।

सब—( स्वगत ) हाय ऐसी स्त्री को क्यों उसके पति ने त्याग किया ( प्रकाश ) नहीं रानी चलो आश्रम में कोई भी आपके पति की निन्दा नहीं करेगा ।

( गाना )

सब—अबचल कर आप, ऋषि आश्रम में पग धरिये ।
तजिये सन्ताप, हम सब को अपना जानिये ।
सुनीति—मैं तो हूं आफत की मारी, बिधिना की लीला न्यारी
अपने प्यारे प्राणनाथ को—
सब—पाइये हां पाइये हां पाइये॥ अब—
सुनीति—तनमन धन से मैं वारूं, पति पद हिरदै मैं धारूं ।
सब—अपने प्यारे पति को पाकर गृह जाइये-हां जाइये—

---

## दूसरा दृश्य ।

स्थान–राजा का कमरा, समय–प्रातः काल ।

( राजा उत्तानपाद बीच में बिराजमान हैं और अगल बगल बड़े बड़े सरदार और सामन्त बैठे हैं )

सहेलियां— ( गीत गाती हैं )

आवो सहेलियां, हां, आवो सहेलियां।
हिल मिल, मिल जुल, नाचें गावें सारियां॥
जावें हम सब बलिहारी, राजाकी कीरत न्यारी।
वारियां हां वारियां। आवो सहेलियां—

सब—चिरंजीव हो, महाराज का चिरंजिवी चिरंजीव हो। राजकुमार होने की बधाई है बधाई है।

उत्तानपाद—बधाई हो हमारे मंत्री को, बधाई हो उस सती सुनीति को जिसके आग्रह से मैंने दूसरा बिवाह किया। हे मंत्रिवर-

मणि माणिक मोती जर जेवर खूब लुटावो।
राज कुंवर की भली कामना सभी मनावो॥
पावो धन अरु धाम, नाम का काम नहीं है।
राजकुंवर जो सुखी रहे आराम यहीं है॥

(समस्त प्रजा बधाई देने आती है)

सब—महाराज को राजकुंवर का होना मुबारक हो।

मंत्री—प्रजावर्ग! तुम्हारी प्रसन्नता के लिये राजा धन्यबाद देते हैं। प्यासों को पानी और मान के चाहने वालों को मान दो।

उत्तानपाद—(मंत्री से) समस्त प्रजा का कर इस साल वसूल न किया जाय। गरीब किसानों को खजाने से एक एक बैल और गाय दी जाय। जो कोई और कुछ मांगे उसे भी मुंह मांगा दान दो।

मंत्री—प्रजावर्ग राजा की आज्ञा है कि इस साल प्रजा का सारा कर माफ कर दिया गया है। किसानों को एक एक बैल और गाय दी जायगी। और भी जिसे जिस बात की कमी हो वह पूरी की जायगी।

सब—धन्यबाद राजन धन्यबाद।

मंत्री—अच्छा तुम लोग जावो और आनन्द मनावो ।

सब—राजन आज्ञा हो तो एक बार यहीं गा बजा लूं ।

राजा—(मंत्री से कुछ कहते हैं ) अच्छा ।

मंत्री—हाँ हाँ गा बजाकर जावो । मनमानी खुशी मनावो ।

सब—बहुत अच्छा दीवान जी ! (गीत गाते हैं)

पुरुष—ताथेई, ताथेई, ताथेई, ताथेई
नाचो गावो खूब यार, खुशी मनावो बारबार ।

स्त्रियां—बलिहारी है, वारी हम सब सारी ।
कैसी प्यारी है कीरत द्युतिकारी ।
गावो बजावो ताथेई, ताथेई, ताथेई ।

स्त्रियां—छुम छुम छुम छुम नाचो । हां गावो बजावो ॥

उत्तानपाद—मंत्रीवर मोतियों की माला लुटा दो ।

मंत्री—बहुत अच्छा महाराज । (मंत्री मोतियों से भरी थाल लुटाता है । सारी प्रजा लूटती है । ) अच्छा अब आप लोग अपने अपने घर पधारें । हर समय राजा की शुभ कामना बिचारें ।

सब—बहुत अच्छा महाराज। राजकुंवर चिरंजीवी हो । (गत )

उत्तानपाद—मंत्रीवर आज कल प्रजा में बड़ा उत्साह है राजकुंवर के होने से लोग मारे हर्ष के फूले नहीं समा रहे हैं ।

मंत्री—कहीं रानी सुनीति इस समय राजनगर में होतीं तब तो फिर बात ही क्या थी । मैं समझता हूँ कि उस समय आप की नगरी साक्षात् इन्द्रपुरी हो जाती ।

उत्तानपाद—वह कैसे ।

मंत्री—ऐसे कि इस महोत्सव में जब बड़ी रानी शामिल होतीं तो सोना में सुगंध हो जाता ।

उत्तानपाद—मंत्रीवर तुमने मेरे दिल की बात कही है। यद्यपि मैं राजकुंवर के होने से प्रसन्न हूं लेकिन कभी कभी रानी सुनीति की याद आते ही दिल फड़कने लगता है। मन अपने को कुछ भला बुरा भी कहता है।

मंत्री—जरूर कहैगा श्री मान। दिल में साक्षात परमात्मा का निवास होता है। देखिये जब पहिले पहल चोर चोरी करने जाता है तो उसका दिल धड़क कर कहता है कि तू चोरी न कर। कसाई जब असमर्थ जीवों की गर्दन पर छुरी फेरता है तो उसकी हाथों में कंपकंपी होने लगती है। परमात्मा की ओर से उसके हाथों को संकेत होता है कि तू पाप न कर।

उत्तानपाद—मंत्री वर तुम बहुत ही ठीक कह रहे हो। जिस समय सुनीति ने मुझसे बन जाने के लिये पूछा उस समय मैं चुप रहा। चुप रहना मेरे लिये वज्र का गिरना था। मैं मरा नहीं और मेरी सब कुछ हालत हो गयी। मैं करता ही क्या। सामने सुरुचि खड़ी थी। दिल खोल कर मैं बोल भी न सका। हाय मुझ से—

मंत्री—और भी सुनिये राजन! एक पत्नी व्रतधारी जब अपने वेश्यागामी साथी के साथ पहिले पहल वेश्या के मकान पर जाता है तो जो चोर की दशा होती है वही उसकी होती है, लेकिन जब उसका धड़कन खुल जाता है तब वह बेखटके निर्लज होकर वेश्यावों के पास जाता आता है। जब वह दैवात दंड पाता है तब या तो उसकी आदत छूट जाती है या वह और भी खराब हो जाता है।

उत्तानपाद—( स्वगत ) मंत्रीवर संकेत से मुझे दंडित कर रहा है और वास्तविक में मैं इसके योग्य भी हूँ। (प्रकाश)हां हां मंत्री वर मैं उस वेश्यागामी की तरह दंडित हूँ। मैंने व्यर्थ ही अपनी रानी को बनवास दिया। मुझसे बढ़कर संसार में और कोई

दूसरा पापी नहीं है। मैं अधर्मी हूँ मैं दंड के योग्य हूँ। मुझे जो न दंड दिया जाय थोड़ा है। (राजा का विह्वल होना)

मंत्री—मैंने व्यर्थ ही इस समय यह प्रसंग छेड़ा।

उत्तानपाद—हाय इस समय वह कहाँ होगी। हा सर्व गुण सम्पन्ना, राजीव लोचना, सरला अबला तू कहां होगी। क्या करती होगी।

पहिले थी स्वादिष्ट मनोहर भोजन करती।
अब जंगल के फल फूलों पर होगी रहती॥
हाय दुःसह दुःख का भी होगा कहीं ठिकाना।
पाती होगी बिन मेरे वह दुःख भी नाना॥
होगी बैठी मन मारे कहुँ सरिता तट पर।
अथवा कूद पड़ी होगी जा करके वट पर॥

मंत्री वर मुझ से हत्या हुई है, कोई प्रायश्चित बतावो मुझको इस भारी पाप से छुड़ावो।

मंत्री—राजन् आपकी बातों से तो पता चलता है कि आपका रानी के ऊपर बड़ा स्नेह था।

उत्तानपाद—हां राजन् ऐसी ही बात है। मेरी बड़ी रानी सुनीति मेरे लिये साक्षात देवी स्वरूपा थी। मैं उसे बन में भेजना नहीं चाहता था।

मंत्री—तो फिर आपने भेजा ही क्यों।

उत्तानपाद—पापाचारिणी सुरुचि ने पहिले वचन लेकर यह सब अनर्थ किया। सुख छोड़ दुःख दिया।

मंत्री—तो फिर इस पाप का प्रायश्चित यही है कि आप बड़ी रानी को फिर वापस बुलावें।

उत्तानपाद—पर इससे भी तो प्रतिज्ञा भंग होगी।

मंत्री—तो फिर आप एक बात करिये या तो प्रतिज्ञा भंग करिये या बड़ी रानी सुरुचि को ही सर्वस्व जान कर रानी सुनीति का स्मरण न करिये। मैं देखता हूँ कि आप दिन बदिन तन छीन मन मलीन होते चले जा रहे हैं।

उत्तानपाद-क्या करूं मंत्रीवर मेरे भाग्य में यही बदा था कि मैं इसी प्रकार जीवन व्यतीत करूं, न जीऊं न मरूं।

मंत्री—आपने आखेट करना भी छोड़ दिया है। चाहे जो कुछ हो राजा को चाहिये कि नित्य आखेट किया करें। यदि इच्छा हो तो चलिये थोड़ा मन बहलाव हो जायगा।

उत्तानपाद— हां मंत्रीवर चलो। बन में चल कर आखेट ही किया जाय। कुछ मन बहलाया जाय!

मंत्री—हां चलिये कवच धारण कर मृगया की सामग्री के सहित जंगल में चला जाय।

उत्तानपाद—हाँ चलिये। और जो लोग चलना चाहैं वे भी चलैं।

सब—हम सब लोग चलेंगे।

उत्तानपाद—चलिये सब लोग चलैं।

सब—हां हां चलो भाई। (सब लोग गये)

## तीसरा दृश्य।

स्थान-अत्रिमुनि का आश्रम समय-दोपहर

(सती अनुसुइया बैठी हैं आस पास ऋषि कन्याएं भी आसन लगाए बैठी हैं। एक और चटाई पर रानी सुनीति बैठी हैं)

अनुसूइया-देखो बालावो, तुम लोगों को प्रातःकाल सबके पहिले उठना चाहिये। उठकर आश्रम का सारा काम करना चाहिये।

जो कन्या सबके पहिले प्रातःकाल उठती है उसका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। जो आलस्य से अपने बिस्तरे पर ही पड़ी रहती हैं वे आलसी और गृहस्थी का काम न करने वाली होती हैं। जो कन्या बिवाह हो जाने पर अपने ससुराल में जाकर अच्छी तरह काम नहीं करती उसे लोग घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

१ कन्या—गुरुबानी जी मैं सबसे पहिले उठती हूँ।

अनुसूइया—मेरा तुम से और इनसे सवाल नहीं है मेरा सवाल सब से है कि सब कन्याओं को सब से पहिले उठना चाहिये।

सब—गुरुवानी जी अब हम सब ऐसा ही करेंगी।

अनु०—हां बेटियो सुना। अब तुम लोग सयानी हो चली हो। थोड़े दिनों में अपने अपने ससुरार जावोगी। इस लिये गृहस्थाश्रम का थोड़ा धर्म बता देती हूँ।

सब-गुरुवानी जी जरूर बताइये।

अनुसूइया—सुनो बेटियो सबसे पहिले हमेशा दीन भाव से ससुरार में रहना चाहिये। यदि कोई कटुवचन कहै भी तो उसको शांति से सुन ले। क्रोध का जवाब क्रोध से न देना शांति से देना। इससे अग्नि न भड़केगी और गृहस्थी का सारा काम सौम्यरूप से चलता जायगा और यदि तुमने क्रोध और गुस्से को न जीता तो जान रखो कि तुम स्वयं दुःखी तो रहोगी साथ ही अपने कुटुम्बियों को भी दुःखी करोगी।

सब-बहुत अच्छा गुरुवानी जी,

अनुसूइया-और सुनो। अपने पति से कभी मान न करना। उसके सामने दीन भाव से ही रहना। जो स्त्रियां अपने पति को खरीखोटी सुनाती हैं वे कभी सुखी नहीं रहती। और एक बात,खास कर पति के दोषों को किसी के सामने न कहना वरन जब वे एकांत में रहें तब उन्हें उनका दोष दिखाना चाहिये। लोगों

के सामने दोष दिखाने से दोषी अपने दोष को स्वीकार न करके उसका पृष्ट पोषण करता है।

सब—ठीक है गुरुवानी जी।

अनु—इस प्रकार नम्रता और दीनता युक्त जो नारी अपना गार्हस्थ जीवन विताती है वह सदा सुखी रहती है। सबको खिला कर खाना। सास ननद को एक समान जानना। घर के बच्चों को अपना बच्चा जानना उनको अपने दिल से मानना।

सब—बहुत अच्छा गुरुवानी जी।

अनु—देखो यही सुनीति जब से आश्रम में आयी है पति के विमुख हो जाने पर भी उसी के नाम का माला जपा करती है। अपने पती ही का गुणानुवाद किया करता है। लाख पूछने पर भी भेद नहीं बताती। इसलिये अपने दुःख का भेद पराये से रोना ठीक नहीं।

> मन मारे चुप बैठिये जानि दिनन को फेर।
> जब नीके दिन आइहै बनत न लगिहै बेर॥

देखो बेटी सुनीति अब तुम अपना मन उदास न रखा करो। जिस बात की आवश्यकता हो मुझ से कहा करो।

सुनीति—देवी मुझे आपके पास किसी बात का कष्ट नहीं है।

> है नहिं ईर्षा द्वेश यहां पर राज साज कर।
> लेती हूं भर पेट कन्द फल फूल मांग कर॥
> हे देवी जो रहैगी ऐसी कृपा आपकी।
> होगी नहीं परवाह मुझे भी किस ताप की॥
> लेकर पति का नाम काम ऋषि मुनि का करके।
> हूँगी दुःख से पार हृदय में धीरज धरके॥

( अत्रि मुनि का प्रवेश )

अत्रि—क्या है बेटी क्या है । ( सुनीति सहम जाती है )

अनु—( आसन देकर ) नाथ पधारिये ।

अत्रि—(बैठ कर ) बेटी सुनीति तुमको इतने दिन इस आश्रम में रहते हो गया लेकिन मैंने एक दिन भी तुझे प्रसन्न न देखा ।

सदा अश्रु पूरित आंखो को मैं हूं पाता ।
तेरी चिन्ता का रहस्य कुछ समझ न आता ।
करती है क्यों सोच अगर है पति ने त्यागा ।
मरती है क्यों, पड़े एक से एक अभागा ।

सुनीति—भगवन् ! मैं ऐसी ही अभागिन हूँ । मुझे कौन कहैगा कि मैं एक सुहागिन हूं । मेरी मौत का कागज भी खो गया है ।

अत्रि—देवी सुनीति तुम ऐसा न सोचो । दुख सदा नहीं रहता । समय भी समय पर है बदलता । धीरज धरो । तुम्हारा सब काम ठीक होगा ।

सुनीति—गुरुदेव मेरे पूर्व जन्म का संस्कार ही कुछ ऐसा था कि इस जन्म में पति विछोह हुआ । खैर परमात्मा मेरे पति का मंगल करै । मैं उनकी रात दिन भलाई ही सोचा करती हूं

अत्रि—सोचना ही चाहिये ।

सुनीति—प्रभो मैं धैर्य ही से काम लूंगी ।

अत्रि—हां बेटी तुम्हारे धीरज धरने से बड़ा काम निकलेगा ।

होगा तुम्हारा क्लेश भी मंगल जनक संसार को ।
होगा तुम्हारा भेष भी मंगल जनक करतार को ॥
आदर की दृष्टी से लखेगा एक वह करतार भी ।
आदर का दृष्टी से कहैगा कथन तव संसार भी ॥

सुनीति—भगवन आपकी बाणी सच हो ।

अत्रि—हां बेटी मेरी कुछ ऐसी ही भावना हो रही है कि-

तेरे गर्भ से एक महान आत्मा का जन्म होगा। जो संसार में भक्त शिरोमणि कहलायेगा अपने नाम के साथ साथ वह अपने पिता और माता का भी नाम जगायेगा।

सुनीति—गुरुदेव आपकी वाणी को मैं वेद वाक्य मानती हूँ, पर मेरे भाग में अब पतिदेव का दर्शन कहां।

अत्रि—होगा बेटी होगा। तू धीरज धरै। तेरी मनोकामना परमात्मा पूरी करै (अनुसूइया से) देवी इसे अपने सान्त्वना वाक्यों से धीरज दो। दुखिया को सुखिया बनावो। मैं जाता हूँ, और अभी ही आता हूँ। पास ही की कुटी में एक और मुनि आये हैं।

अनु—अच्छा नाथ जाइये। मैं इसकी निगरानी रखूंगी। बेटी सुनीति चलो, या अपनी कुटी में हमारी कन्याओं के साथ जावो। (कन्यावों से) देखो कन्यावों सुनीति को किसी प्रकार का कष्ट न हो। जैसे माने वैसे मनावो। इसके दिल को बहलावो।

कन्याएं—हम सब ऐसा ही करेंगी। राना चलो। (सब गयीं)

---

## चौथा दृश्य

स्थान—सुरुचि का कमरा समय—प्रातः काल

(सुरुचि अपने छोटे पुत्र उत्तम को खिला रही है दास दासियां खड़ी हैं)

उत्तम—(गाता है) (गाना।)

माता मुझे छोटा सा घोड़ा मंगा दे।

घोड़ा मंगा दे, जोड़ा सिला दे, चाबुक भी बढ़िया मंगा दे,

घोड़े पै बैठूंगा, मजे से ऐंठूगा,
हांकूगा कच कच कच हूं हूं।
धीरे धीरे, धीरे धीरे बस टिक टिक टिक
माता मुझे छोटी सी तलवार लादे
तलवार लादे भाला मंगादे
तीरो कमान लगा दे। बैरी को मारूंगा, छाती को फारूंगा
गोला चलाऊंगा धड़ाम धस धस —माता मुझे०—

सब-अहा कैसी सुहावनी बोली है। कैसी बोल चाल है। कभी आगे कभी पीछे, आना जाना, दौड़ना, घूमना, बड़ा ही अच्छा मालूम पड़ता है। रानी यह बच्चा मुझे दे दो।

सुरुचि—हां क्यों नहीं। यह मेरा छोटा सा लाल है मैं इसके बिना मर जाऊंगी। क्यों उत्तम तुम किसके पास रहोगे।

उत्तम—(सखियों की ओर देखकर) हम इन लोगों के पास रहेंगे।

सब—लीजिये रानी साहिबा। हुई न हम लोगों की जीत। कुमार उत्तम तो हम लोगों के हैं मीत।

सुरुचि—(उत्तम को मार कर) बड़ा पाजी है। जावो मैं तुम्हें बगीचे में न ले जाऊंगी।

उत्तम—अच्छा अच्छा मैं तुम्हारी ही तरफ हूँ। (जाकर माता की गोद में बैठता है)

सुरुचि—देखो, कैसा सखियो। आखिर मेरा बच्चा मेरे पास आया न। मेरा उत्तम प्यारा उत्तम।

उत्तम—हां माता मैं तुम्हारे ही में हूँ। सखियों का तरह-फिर तुम भी हमें तमाशा दिखावो।

सुरुचि—अच्छा चलूंगी। तुम्हें तमाशा दिखाऊंगी।

उत्तम—नहीं अभी चलो।

सुरुचि—नहीं अभी नहीं, ठहर कर।

उत्तम—तो फिर मैं सखियों में चला जाता हूँ। जावो मैं तुम्हारे में नहीं हूँ (फिर सखियों के पास चला जाता है)

सखियां—देखा कैसी बाजी पलटी है। देखो कुंवर जी हमारे पास आ गये न।

सुरुचि—(स्वगत) अहा! सखियों के मुंह से कुंवर शब्द कैसा ही मधुर मालूम पड़ता है। (प्रकाश) सखियों तुम्हारे मुंह फूल चूए मेरा ही लड़का कुंवर है कुछ दिनों में वह राजा होगा।

सुन्दरी—हां रानी साहिबा जिस दिन राजकुंवर उत्तम, राजा के पद से विभूषित होंगे उसी दिन मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगी। देखो रानी अगर मैं तुम्हें न सुझाता तो तुम्हें जन्म भर बड़ी रानी की गुलामी करनी पड़ती। आज तो कुंवर उत्तम हैं कल वे ही उत्तमवा कह के पुकारे जाते। कहीं कैदी बने हुए नजर आते।

सब—नहीं तो अब स्वयं राजा उत्तानपाद के उत्तराधिकारी होंगे। कुछ दिनों में राजा कहलाएंगे।

सुन्दरी—हां सखी ठीक है। फिर आवो हम सब एक बार राजकुमार उत्तम की जय जयकार मनावें। कुछ इनाम पावें। बोलो राजकुमार उत्तम की जय।

सुरुचि—यह लो मोतियों की माला मेरा कंगन, मेरी चूड़ी। मेरा सब कुछ ले लो। मैं इस जय जयकार पर सब कुछ न्योछावर करने को तैयार हूँ।

वार दूं बेटे पै मैं, धन धान्य सुख सम्पत सभी।
वार दूं अपने को भी जो दुःख आ जावे कभी।

है हमारा राज न्योछावर कुंवर के वास्ते ।

सब सखियाँ—

हे महारानी हम सब भी हैं कुंवर के वास्ते ।
उत्तम कुंवर का हो भला जगदीश से निज चाहती
उत्तम कुंवर को राज हो जगदीश से हूँ माँगती ॥

सुरुचि—बस बस यही मांगो मेरी प्यारी बहिनो यही मांगो। परमात्मा वह दिन शीघ्र लावे जब मैं अपने पुत्र को राज सिंहासन पर विराजमान देखूँ ।

सब—रानी जी वह समय शीघ्र ही आने वाला है अब तो यहां आप ही का बोलबाला है ।

राजा भी तन मन धन से रानी आपको ही चाहते ।
स्वप्न में भी सौत की सूरत नहीं वे आनते ॥

सुरुचि—हां सखियों ऐसी ही बात है ।

सुन्दरी—यह सब मेरी करामात है ।

सुरुचि—क्यों नहीं इसी लिये तो मैं तुम्हें सबसे अधिक चाहती हूँ । तुम्हें अपना देवता और देवी मानती हूँ ।

सुन्दरी—मैं भी तुम्हारे ऊपर तन मन धन वारती हूं । सब से बड़ी तुमको ही जानती हूं । क्यों सखी ठीक है न ।

सब—हां ठीक और बहुत ठीक                    ( दासी आती है )

दासी—रानी जी अभी तक महाराज मृगया से नहीं लौटे हैं ।

सुरुचि—अभी तक नहीं लौटे । कारण कुछ समझ में नहीं आता । फिर रात्रि में वे कहाँ रहे । यदि मुझे राजकुमार का झगड़ा न रहता तो मैं अवश्य ही उठकर देखती । मैं तो इसी बिचार में थी कि प्राणनाथ लौट आये होंगे । खैर—

दासी—और मंत्री तथा दुर्लभ जी भी नहीं पधारे हैं ।

सुन्दरी—(स्वगत) तो फिर जागे भाग हमारे हैं। अब तो मैं जाकर कुछ गहने और उड़ाती हूँ। सुंदरी को भी छकाती हूँ। सौत सुन्दरी बड़ी बदमाश है। मेरी भी वह दाल नहीं गलने देती है।

सुरुचि—क्यों सुन्दरी तुम क्या मन में गुन गुना रही हो। बतावो जल्दी बतावो—

सुन्दरी—कुछ नहीं रानी साहिबा मैं यही कह रही थी कि पुरुषों को कुछ भी अपनी औरतों के दुःख का ख्याल नहीं रहता। जहां मन हुआ वहीं की उठाई बैठाई, जहां मन रम गया वहीं रात बिताई।

सुरुचि—सुन्दरी तेरी यह बात समझ में न आयी।

सुन्दरी—समझ में कहां से आवेगी सुनो मैं समझाती हूँ। रात में तुम्हारे राजा अवश्य ही बड़ी रानी की खोज में गये हैं। यहां तो बहाने बाजी करेंगे और वहां जंगल में बड़ी रानी की की खोज करेंगे।

सुरुचि—पर वह तो मर गयी होगी कहीं खो गयी होगी।

सुन्दरी—हो सकता है कहीं रह गयी होगी। जंगलों में कितनी ही कुटियां और आश्रम रहते हैं। वहीं उसने अपने रहने का तार घाट जमा लिया होगा।

सुरुचि—तार घाट जमाने दो। तार घाट जमाने से क्या होता है। अब तो मुझे एक राजकुमार भी हो गया है। मैं तो कहती हूँ कि अब अगर बड़ी रानी राज नगर में भी आकर रहें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

सुन्दरी—नहीं रानी ऐसा न सोचना अरे राम राम। उनका यहां बुलाना मानों आस्तीन में सांप का पालना है। बड़ी रानी को भूल कर भी न बुलाना।

सुरुचि—बहुत अच्छा सुन्दरी तुम जो कहोगी वही करूंगी। खैर चलो अब पूजन का भी समय हो गया है। चल कर देवी का पूजन करैं, और उनकी मनौती मानैं कि शीघ्र ही राजकुमार सिंहासन पर विराजमान हों।

सब—हां रानी हां। (सब का जाना)

---

## पांचवां दृश्य।

स्थान-जंगल समय-संध्या।

(राजा उत्तानपाद मृगया खेलते हुए आते हैं)

उत्तानपाद—ओफ! कैसी घनघोर वृष्टि हुई है। मैंने कितनी ही बार मृगया खेला है पर ऐसी विपत्ति कभी नहीं आयी थी।

ऊपर बरसे देव, नीचे कीचड़ पानि अति,
राखै प्रभु जी टेव कानन बीच बिपति में।

अहा वह देखो हर हर करके वृक्षों की डारियां गिर रही हैं। कहीं कहीं धीरे गिरने से उनसे निकले हुए चर चर शब्द बड़े ही सुहावने मालूम पड़ते हैं। सुहावने भले ही हों पर मेरे तो प्राण निकल रहे हैं। अच्छा अब इस विपत्ति में सिवाय एक परमात्मा के और कौन है। (कुछ ठहर कर) और कुछ नहीं यह सब उसी दुखिया का श्राप है जिसे मैंने घर से बाहर निकाल दिया था। अच्छी स्त्री के होते हुए भी उसका आदर न किया। हा देवी सुनीति इस समय हमारे दोषों को भूल कर हमारी शुभ कामना करो। (एक ओर देख कर) ओफ वह देखो सामने से भालु
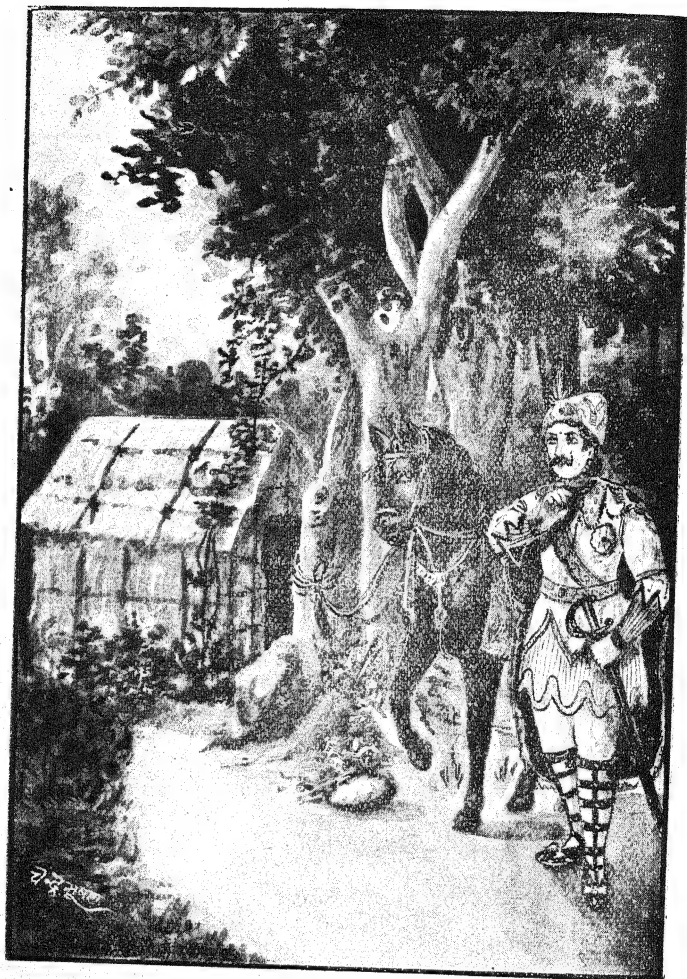
उत्तानपाद—अरे यह सामने कुटी है चलूं इसी में इस समय आश्रय लूं।

( पृष्ठ—७३ )

चला आ रहा है। दूसरी ओर देखो। चीता हरिन पर झपट रहा है। भगवान कहां जाऊं। कहां जाऊं। छिः क्षत्रिय पुत्र धिक्कार है तुझे, जो इनको मारने से मुख मोड़े। (आगे बढ़ता है) नहीं ठहर जावा। क्षत्रिय मार पर वार करता है। बिना घात के दांव चूक जाने पर हंसी हसारत के साथ साथ जान भी गंवानी पड़ेगी। विपत्ति काल में धीरज धर के काम करना चाहिये। (एक ओर देख कर) अरे यह सामने कुटी है चलूं इसी में इस समय आश्रय लूं। विपत्तिकाल बीत जाने पर राज नगर लौटने की कुछ व्यवस्था करेंगे। (थोड़ी दूर जाकर) महात्मन! मैं आफत का मारा हूं मुझे इस समय अपनी कुटि में आश्रय दो।

सुनीति-(एक ओर से आकर) (स्वगत) अरे यह क्या यह तो मेरे पतिदेव ही मालूम पड़ते हैं। हे भगवान कहीं मुझे भ्रम तो नहीं हो रहा है। नहीं सती नारी के हृदय में भ्रम हो ही नहीं सकता। (कुछ सोच कर) नहीं इन्द्र ने अहिल्या को छला था। सम्भव है यह भी मुझे छलते हों। (कुछ ठहर जाती है) पर मुखड़ा तो नाथ के ही मुखड़े के समान है। सुनीति तेरा कहां ध्यान है।

होंगे राजा शयन गृहों में लोटे पोटे।
अथवा करते होंगे फैसला खरे औ खोटे॥
धन्य भाग रानी सुरुची के हैं हे भगवन।
करती होगी वह न्योछावर तन मन औ धन॥

उत्तानपाद—अरे महात्मा जी खोलो नहीं तो मैं वर्षा और जंगली जन्तुओं के कारण मर जाऊंगा। राज नगर में मैं कैसे जीवित जाऊंगा। हाय! भगवान मेरा कोई सहारा नहीं।

सुनीति—(आकर) है और एक औरत। आइये राजन हमारी कुटिया में निवास करिये मैं अपने गुरुवर की कुटी में चली जाती हूँ।

उत्तानपाद—तुम कौन हो। इस घोर जंगल में निवास, क्या यहां भी है कोई आस। बोलो बोलो भगवती देवी बोलो तुम कौन हो। तुम्हें देख कर मुझे अपनी रानी सुनीति की याद आ रही है। हाय वह कहां होगी कैसे होगी। बिपत्ति पर बिपत्ति इसी को कहते हैं।

सुनीति—प्रभो आप अपना परिचय दें। आप कौन हैं।

उत्तानपाद—मैं हीं पापात्मा राजा उत्तानपाद हूं। मैंने अपनी एक रानी को बिना किसी दोष के निकाल दिया है। मैंने भारी पाप किया है। हाय मैं उस रानी को एक बार फिर देखना चाहता हूँ।

सुनीति-देखो अच्छी तरह देखो। यही अभागिन सुनीति है।

उत्तानपाद—रानी तू यहां कहां से।

सुनीति—आप के यहां से आकर मैं इस घोर जगल में निकल आई। दैवात पास ही अत्रि मुनि का आश्रम था। यहां की ऋषि कन्याओं से भेंट हो गयी।

उत्तानपाद—तब फिर

सुनीति—तब फिर ऋषि कन्याएं मुझे आश्रम में ले गयीं। वहां अत्रि मुनि की धर्मपत्नि देवी अनुसूइया ने मुझे नाना प्रकार से समझा बुझा कर रखा। मेरे लिये यहाँ कुटि बनवा दी है। मैं यहीं सुख पूर्वक निवास करती हूँ। मुझे यहां किसी प्रकार का कष्ट नहीं है।

उत्तानपाद—धन्यबाद है उस परमात्मा को जिसकी कृपा कटाक्ष से तू अभी तक जीती और जागती है। मैंने तो सोचा था कि तुझे किसी हिंसक जन्तु ने फाड़ खाया होगा। वा नदी नाले में डूब मरी होगी।

सुनीति—हां मैं आपके सन्ताप में प्राण छोड़ना ही चाहती थी कि दैवात ऋषि कन्याएं आ गयी। आपका दर्शन बदा था इसी लिये बच गयी। धन्य मेरे भाग जो आप के दर्शन हो गये अन्यथा दिल की बात दिल ही में रह जाती। आप को इस जन्म में देख न पाती। खर आप यहां विश्राम करें मैं अनुसूइया माई के आश्रम से कुछ खाने को ले आऊं।

उत्तानपाद—यह खाना पीना होता रहैगा थोड़ा बैठो तो सही

सुनीति—नहीं नाथ मैं ऐसा न करूंगी। इससे आश्रम निवासियों को शंका होगी कि मैं पर पुरुष से भाषण करती हूँ। मैं अभी आती हूँ। आप धीरज धरैं।

उत्तानपाद—जावो जब तुम्हारा जिद ही है तब जावो लेकिन शीघ्र आना देर न लगाना। (स्वगत) अहा कैसी पतिव्रता नारी है। आश्रम निवासियों को जिसमें पर पुरुष संभाषण का सन्देह न हो इससे वह मेरे पास बैठी तक नहीं। ठीक है सती सतवन्ती नारियों का व्यवहार ऐसा ही होता है।

देखि अकेले पर पुरुष, बोलै सती न नार।
आंख सदा नीची रहै शील सहित व्यवहार॥

सुनीति—नाथ मैं अभी आती हूँ आपके आने का भेद आश्रम की ऋषि कन्यावों की भी जताती हूँ। (गयी)

उत्तानपाद—क्या संयोग था। कौन जानता था कि एक बार फिर उस सती सुकुमारी नारी का दर्शन होगा जिसका अपने पति के लिये अपूर्व त्याग था। अहा धन्य मेरा भाग है। सती सुनीति फिर मिल गयी। पर मिल कर ही क्या। क्या मैं फिर इसे रनिवास में ले चलूं। अगर ऐसा होगा तो लोग मुझे असत्य वादी कहैंगे। झूठा कहैंगे। रानी सुरुचि के सम्मुख मेरे नेत्र न हो सकेंगे। फिर यह सब सोचना व्यर्थ है। चलूं फिर यहां से

भाग चलूं । नहीं तो जिस समय सती सुनीति राज नगर लोट चलने के लिये कहैगी उस समय हमारी क्या दशा होगी । होगी क्या, साथ लेता चलूंगा । नहीं राजा उत्तानपाद नहीं । लोग भले ही मुझे कामातुर और विषयी राजा के पदवी से विभूषित करें लेकिन तू झूठा न बनैगा । अब जो बचन तेरे मुख से निकल चुके उसे तू एक क्षत्रिय कुमार की तरह पाल । अगर नहीं पाल सके तो यहां से चला जा । चल फिर क्या देखता है । ( जाने के लिये तत्पर होता है इसी बीच में ऋषि कन्याएँ कुछ खाने का सामान लेकर आ जाती हैं ।)

१ कन्या—राजन आप कहाँ जा रहे हैं ।

उत्तानपाद—इससे तुम से मतबल । मैं कहीं जा रहा हूं । तुम लोग पूछने वाली कौन हो

२ कन्या—हमें राजा उत्तानपाद की बन वासिनी रानी सुनीति ने आप के पास यह खाने का सामान ले कर भेजा है आप इसे ग्रहण करें ।

उत्तानपाद—या भगवान यह अच्छी खातिरदारी है । अब तो जाने का भी रास्ता रुक गया । क्या करूं कैसे पिंड छुड़ा कर नगर में लौट चलूं । ( कुछ सोचता है )

३ कन्या—राजन ! आप किस बात का सोच करते हैं । बैठिये और भोजन करिये । आप की रानी भी अनुसूइया माई के साथ साथ आती हैं । साथ में अत्रि मुनि को भी लाती हैं ।

उत्तानपाद-(स्वगत) अब नहीं तो अब बना, पापी निर्लज राजा तू ऋषि के सामने कौन सा मुंह लेकर बात करेगा । अब तो इस बिपत्ति की बिपति से भी न्यारी बिपत्ति आनी चाहती है । हाय जिस समय अत्रि मुनि कहैंगे कि रानी को संग में लेते जाओ उस समय मैं क्या कहंगा ।

सब कन्याएं—राजन आप भोजन करें रानी जी आती हैं।

उत्तानपाद—मैं बिना भगवान अत्रि मुनि का दर्शन किये मुंह में ग्रास नहीं दे सकता।

सब कन्याएं—लीजिये वह आही रहे हैं। भगवन प्रणाम।

उत्तानपाद—यह पापात्मा भी आप को नमन करता है।

अत्रि—राजन कुछ सोच न करो यह सब होनी थी। जो होनी होती है वह मिट नहीं सकती, होगी और जरूर होगी।

उत्तानपाद—भगवन इस रानी के लिये मुझे बड़ा सन्ताप है। अपनी करनी पर मुझे बड़ा पश्चाताप है।

अनुसूइया—बेटा पश्चाताप करने की कोई आवश्यकता नहीं है। तुम्हारी रानी को किसी प्रकार का कष्ट हमारी कुटी में नहीं था। वरन उसका तो कहना है कि राज साज में वह दुखी थी। अब चाहे वह यहां रहै वा वहां। उसका घर दोनों है। चाहे तुम उसे संग लेते जावो वा यहीं छोड़ जावो।

अत्रि—बेटी किसी बात की चिन्ता न करना तुम्हारी रानी सती है। यह दोनों कुल पवित्र करेगी।

अनुसूइया-बेटा आज तुम यहीं रहो। रात्रि में कहां जावोगे। कल राज नगर लौट जाना।

उत्तानपाद—जैसी आपकी आज्ञा होगी वही किया जायगा।

अत्रि—अच्छा तुम थके मांदे हो मैं जाता हूं। फिर तुमसे बात चीत करुंगा। (अनुसूइया) देवी चलो चलें। कन्यावों राजा को भली भांति भोजन कराके आश्रम में लौट आवो। (गत)

सब कन्याएं—रानी तुम धन्य हो धन्य हो। (गाना)

सब—हिल मिल आवो सजनी, देवें हम बधाई।

मंगलमय इनकी रजनी हो कानन मँह आई॥

सुनीति---फूलन की माला लाऊं, इनके गले पहिराऊं

उत्तानपाद---ब्रह्मा ने भाग जगाया, रानी को फिर से पाया

सब--खूब कही, भाई खूब, कही दोनों की अच्छी मेल भयी।

हिल मिल०---

---

## छठवां दृश्य ।

स्थान-घोर कानन, समय-सन्ध्या

( राजा के मंत्री, और दुर्लभदास की घबराहट )

मंत्री—दुर्लभदास दुर्लभदास अरे जरा यहां तो आवो।

दुर्लभ-आया दीवान जी आया। कहिये क्या है। कहिये क्या आज्ञा है। कुशल मंगल तो है।

मंत्री-कुछ नहीं ऐसे ही बुलाया था कि अब क्या किया जाय।

दुर्लभदास—किया क्या जाय, जो मरजी श्री मान को हो।

मंत्री—अरे तुम मुझे श्री मान कहते हो। कहीं राजा सुन लेंगे तो फिर बड़ा अनर्थ होगा।

दुर्लभ—इसमें अनर्थ की कौन सी बात है। अरे आप भी तो राजा के मंत्री ठहरें। राजा के बाद मंत्री ही सब कछ होता है।

मंत्री—हां एक तरफ से तुम्हारा यह कहना ठीक है पर—

दुर्लभ—पर क्या। अरे इसमें भी कुछ सन्देह है। और यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो मंत्री ही सब कुछ है। मंत्री जो चाहे सो करे अगर उसे एक सारथी कहा जाय तो इसमें कोई गलती नहीं है।

मंत्री—वह कैसे।

दुर्लभ—ऐसे कि चाहे तो वह प्रजा को राजा के विरुद्ध कर दे या राजा ही को प्रजा के विरुद्ध कर दे। पासे का चित पट करना उसके बांये हाथ का खेल है।

मंत्री— नहीं दुर्लभ यह बात नहीं है। मंत्री का पद बड़ा ही भयंकर है। यदि राजा प्रसन्न है तो सब कुछ, नहीं तो उसको कोई पूछता भी नहीं।

दुर्लभ—यह आप का महज ख्याल है न पूछने वाले को कोई मंत्री करेगा ही नहीं। क्या कोई भेंड को पहरे पर रखता है या बैल से दूध दूहता है।

मंत्री—दुर्लभ तुम्हारी बातें भी बड़ी ही दुर्लभ होती है। इसका मतलब समझ में नहीं आया।

दुर्लभ—नहीं आया तो मैं समझाता हूँ। आप को सही सही अर्थ बताता हूँ। सुनिये दीवान साहब-जब कोई अपना पहरेदार रखेगा तो जानवरों में कुत्तों को, कारण कि कुत्ते जितना स्वामी के लिये दुःख सहते हैं उतना और कोई जानवर नहीं सह सकता।

मंत्री—बैल के दूध से क्या अर्थ है।

दुर्लभदास—अर्थात् आप एक कर्म कुशल और चतुर शील मंत्री हैं।

मंत्री-तुम मेरी प्रशंसा करके कुछ प्राप्ति की आशा कर रहे हो।

दुर्लभ—दीवान साहब यहां जंगल में आप से क्या मिलने की आशा है। हां जंगली जानवरों का कलरव भले ही सुनने में आ रहा है। कल मेघदेव ने कृपा की थी, आज शेर भालू और बबर देव कृपा करेंगे।

मंत्री--( एक ओर देख कर ) दुर्लभ वह देखो राजा साहब आ रहे हैं।

दुर्लभ—( उस ओर देख कर ) अरे बाप रे दीवान साहब बचाइये। मैं तो मर जाऊंगा।

मंत्री—अरे घबड़ाते क्यों हो। बिपत्तिकाल में धीरज धरना वीर पुरुषों का काम है।

दुर्लभ—अरे बाबा मैं धीर वीर नहीं हूं। मैं मर जाऊंगा तो बड़ा अनर्थ होगा। आपके नाम पर तो एक ही औरत रोवेगी लेकिन मेरे नाम पर तो दो दो बैठ कर सुर में सुर मिलावेंगी।

मंत्री--अरे, तो क्या तुम्हें दो औरतें हैं। यह तो मुझे नहीं मालूम था।

दुर्लभ--अरे बाबा औरतों का बखेड़ा पीछे करियेगा पहिले एक मासूम की जान बचाइये, और अखंड पुण्य कमाइये।

मंत्री—अच्छा अच्छा घबड़ावो नहीं मैं अभी सामने के सिंह को मारता हूं। ( मारने के लिये तरकस में से तीर निकालता है )

दुर्लभ—अरे मारो भी तो सही। बाबा जल्दी मारो। मेरी तो काया सुरपुर की ओर बढ़ रही है।

मंत्री—नहीं नहीं सुरपुर न जा कर तुम इसी पेड़ पर चढ़ जावो। चलो मैं भी पेड़ ही पर चढ़ कर प्राण रक्षा करता हूं। ( पेड़ पर चढ़ने का भाव करता है )

दुर्लभ—गैया तो जायगी पर रस्सी कहाँ रहेगी। पहिले मुझे चढ़ने दो। फिर तुम पीछे चढ़ना।

मंत्री—नहीं पहिले मुझे चढ़ने दो। मैं ऊपर से जा कर तुम्हें खींच लूंगा।

दुर्लभ—अच्छी बात है फिर जल्दी चढ़ जाइये और मुझे भी ऊपर खींच कर प्राण बचाइये। जल्दी करो बाबा। जल्दी करो।

मंत्री—अरे घबड़ाओ नहीं। घबड़ाने से काम नहीं चलेगा।

दुर्लभ—अरे तुम घबड़ाने को कहते हो यहां प्राण निकसा जा रहा है। हाय हाय रे इस समय डबल जोरू वाले का शोक भी डबल हो रहा है। आवो महाकाया बचावो। आवो महामाया बचावो। [ राजा उत्तानपाद का आना ]

उत्तानपाद—कौन है कौन है। कौन किसको याद कर रहा है।

दुर्लभ—अरे बाप रे यहां आदमी की आवाज कहां से आ रही है। ( एक ओर देख कर ) अरे यह तो हमारे महाराज ही साहब हैं। आइये आइये भगवन आप बड़े मौके पर आये, नहीं तो बिना मां बाप का बिचारा दुर्लभ भी आपका दर्शन न कर सकता।

उत्तानपाद—मैंने सिंह को मार दिया।

मन्त्री—ओौन राजन भला आप मिल गये यही कुशल हुआ। हम लोग यहां आपके लिये बड़े चिन्तित थे।

दुर्लभ—महाराज मैंने भी एक बाण मारा था लेकिन वह खाली गया देखिये वह सामने पेड़ में बिधा हुआ बाण पड़ा है।

उत्तानपाद—हां हां दुर्लभ तुम दुर्लभ वीर हो। ( मंत्री से ) मन्त्रीवर नीचे आवो।

दुर्लभ—हां महाराज देखिये मैं कैसा उपकारी व्यक्ति हूं। मैंने मन्त्री को तो ऊपर कर दिया और मैं स्वयं शेर को मारने के लिये यहाँ डटा था। आपने मेरी खूब रक्षा की।

उत्तानपाद—और महाकाया तथा महामाया कौन चिल्ला रहा था। क्या किसी देवी या डाइन को याद कर रहे थे।

दुर्लभ—अरे महाराज वे दोनों देवी या डाइन से बढ़कर हैं। आप से ही हमारी रक्षा हो गयी अन्यथा दो बिल्लियों के बीच में हमारी मूस की सी दशा होती।

मंत्री—कहिये दुर्लभ जी अब तो खूब टपाटप बोल रहे हैं।

दुर्लभ—अरे हम तो पेड़ के नीचे भी बोल रहे थे। आप तो ऊपर जा विराजे। अरे कहीं मेरे पास तुम्हारी तरह अस्त्र शस्त्र होते तो मैं जंगल के जितने शेर चीते हैं सबको मार डालता।

उत्तानपाद—हां हां दुर्लभ तुम्हारी वीरता की मैं भी सराहना करूंगा। अच्छा तुम यह तो बताओ कि जंगल में कहां भटक गये थे।

दुर्लभ—अरे मित्र कुछ न पूछो। जब वर्षा काल के मेघों ने बड़ा उपद्रव मचाया तब मैंने भी एक कुटिया में जाकर अपनी जान बचाई। वहां एक धूनी रमाने वाली भी पाई।

. उत्तानपाद—( स्वगत ) जान पड़ता है दुर्लभ रानी से मिलने की बात जान गया है। इसी लिये कटाक्ष कर रहा है। ( प्रकाश ) हम बच गये।

दुर्लभ—तब तो आप बड़ भागी रहे।

मंत्री–और हम लोगों के लिये जंगली जानवरों की मुलाकात थी।

उत्तानपाद—मन्त्रीवर मैं तुम्हें खुशखबरी सुनाता हूं। बड़ी रानी अभी जीवित हैं। वे अत्रिमुनि के आश्रम में रहती हैं। मैंने उनसे भेंट की और रात्रि वहीं बिताई।

दुर्लभ—धन्य हो प्रभो धन्य हो, तो चलिये फिर हम लोग भी रानीजी का दर्शन कर आवें।

उत्तानपाद—क्या जरूरत है। अब चलो। रनिवास में छोटी रानी का दर्शन करना।

दुर्लभ—मैं देखता हूँ आप को छोटी रानी का विशेष भय रहता है। चलिये लौट चलिये।

मंत्री—चलिये सामने रथ भी तैयार है।

उत्तानपाद—चलो शीघ्र चलो। ( सब लोग गये। )

## सातवां दृश्य।

स्थान-सुरुचि का अन्तरगृह समय—रात्रि।

[ सुरुचि अपनी सखियों से वार्तालाप कर रही हैं। ]

सुरुचि—देखो सखी मैं कैसी भाग्यवान हूँ। परमात्मा की कृपा से धन धान्य से भरी पूरी हूँ। पुत्ररत्न भी प्राप्त हो गया है। अहा जब मैं राजकुंवर उत्तम का सुन्दर मुखड़ा देखती हूँ तो मन में फूली नहीं समाती। खूब मगन हो रहती हूं। अहा उसका तेज, जाज्वल्यमान चेहरा, मन में रह रह के जागरित होता है। मैं बारम्बार परमात्मा को धन्यवाद देती हूँ कि वह दिन कब आवैगा जब कुमार उत्तम को राजसिंहासन पर बैठे हुए देखूंगी।

सखी—रानी वह दिन शीघ्र ही आने वाला है। अब तो राजकुमार उत्तम का ही बोलबाला है।

सुरुचि—हां सखी ठीक है। राजा का स्नेह भी मेरे ऊपर विशेष है। कारण कि मैं भी उन्हें दिल से चाहती हूँ।

सखी—हां रानी जी राजा जी का आप पर स्वभावतः स्नेह है। यदि न होता तो वे बड़ी रानी को बनवास न देते।

सुरुचि—हां देखो न, नाथ ने मेरी बात रख ली। मेरे नाम मात्र संकेत पर उन्हों ने सुनीति को वन में भेज दिया। मेरे ऊपर कैसा प्रेम था। अहा जन्म जन्म में मैं ऐसे ही पति को पाऊं।

सखी—हां सखी मैं भी ब्रह्मा से प्रार्थना करती हूँ कि जन्म जन्म में मैं ऐसे ही मालिक को पाऊं। रानी को दूर कर राजा ने बड़ा काम किया। चलिये सदा का खटका दूर हुआ।

सुरुचि—खटके की बात कहती हो। अरे वह तो मेरे जान की गाहक थी। यदि सुन्दरी मुझे सचेत न करती तो मुझे शायद इस प्रश्न का ख्याल भी न होता।

सखी—हां रानी जी सुन्दरी ने बड़ा काम किया। यदि सच पूछिये तो उसे भारी पारितोषिक देना चाहिये।

सुरुचि—तुम पारितोषिक की बात कहती हो अरे उसे मैंने अपना सर्वस्व मान लिया है। मैं उसे सदा अपने पास रखती हूं। दुःख सुख की बात उसी से कहती हूं, कारण कि वह मेरी सच्ची सखी है।

सखी—हां उसने तरकीब खूब लगाई। अन्यथा बड़ी रानी को राजा कहीं यहीं महल के कोने में रख देते, इससे रोज का खटका लगा रहता।

सुरुचि—और तो और, कहीं राजकुंवर को बड़ी रानी विष दे देती तो फिर मैं क्या करती। सारा खेल बिगड़ जाता। अन्त में पछताना ही पछताना रह जाता।

सखी—पछताना तो होता ही। सदा ही राजा के प्राण का भी भय बना रहता। उसने राजा जी को विष देकर मार नहीं डाला यही बड़ा काम हुआ। नहीं सौत तो मौत है।

सुरुचि—हां सखी तुम्हारी एक एक बात सही है। तू सच कहती है। (एक ओर देख कर) अच्छा तू अब चली जा वह सामने से प्राणनाथ आ रहे हैं।

सखी—अच्छा रानी मैं जाती हूं।

सुरुचि-जावो जल्दी जावो। (गया) (राजा उत्तानपाद का प्रवेश)

उत्तानपाद—मैं रनिवास में आ गया। हां आ गया। फिर यहां तो सुरुचि होगी। होगी और जरूर होगी।

सुरुचि—नाथ। ( प्यार के भाव से पकड़ती है। )

उत्तानपाद—कौन रानी सुरुचि देवी तुम क्या कर रही हो।

सुरुचि—आपके आने की इन्तजारी कर रही थी। कहो नाथ सब अच्छा तो है आज कल आप इतने मन मलीन क्यों रहते हैं। क्या कुछ बड़ी रानी का सोच तो नहीं हो गया है।

उत्तानपाद—वाह तुम भी खूब कहती हो। अरे जो बीत गयी सो बीत गयी। कहा भी है-बीती ताहि विसार दे आगे की सुधि ले।

सुरुचि—नहीं आज कल आप बहुत ही उदास रहा करते हैं। बात कुछ समझ में नहीं आती। आप आखेट खेलने न गये होते तो अच्छा ही होता।

उत्तानपाद—अजी जाने दो बात। कुछ इधर उधर की बातें करो। व्यर्थ का शोक न करो। जो बात हो गयी सो हो गयी। मुझे थकाहट मालूम पड़ती है मैं सोऊंगा। हां कुछ गाना सुनावो।

सुरुचि—मैं क्या गाना सुनाऊं। मुझे तो कोई भी गाना नहीं आता। देखिये मैं अपनी सखी सुन्दरी को बुलाती हूं।

उत्तानपाद—हां हां जल्दी बुलावो।

सुरुचि—अभी बुलाती हूँ नाथ। आप घबड़ांय नहीं। ( बुलाकर ) अरे सुन्दरी सुन्दरी जल्दी आ। (एक सखी का आना )

सखी—क्या है रानी जी।

सुरुचि—सुन्दरी कहां है ?

सखी—वह तो अपने घर गयी है, राजमहल में नहीं है।

सुरुचि—अच्छा, कोई गाने वाली हो तो शीघ्र बुलावो।

सखी—अच्छा मैं अभी जा कर भेजती हूँ।

सुरुचि—हां जा जल्दी जा। जाकर तुरत भेज।

सखी—अभी भेजती हूँ रानी जी। ( गयी )

उत्तान—बड़ी ही थकावट है। आज कल राज काज ने नाकों में दम कर दिया है। मुझसे एक गरीब अच्छा लेकिन मैं अच्छा नहीं।

सुरुचि—नाथ आप ऐसी बात मुँह से न निकालें। आप से बढ़ कर इस संसार में और कौन सुखी है।

उत्तानपाद—हां रानी हां, तुम ठीक कहती हो। जिस राजा को रानी सुरुचि ऐसी शुभचिन्तिका रानी मिले भला वह न सुखी होगा तो और कौन होगा। धन्य मेरे भाग्य जो तुम्हारी ऐसी नारी मुझे मिली। (मंगला मुखियों का प्रवेश)

मंगला—रानी जी क्या आज्ञा है।

सुरुचि—कोई सुन्दर गाना सुनावो। राजा की चिन्ता मिटावो।

मंगला—अभी गाना सुनाती हूँ, शोक-सन्ताप मिटाती हूं।

बजानेवाले—जरा तार तम्बूरा मिल जाये। तब गाने का मजा आये। लीजिये न सरकार।

मंगला—जल्दी साज मिलावो जल्दी।

बजानेवाले—अरे तुम सब भी सुर में सुर मिलाती हो। यह बाजा है या बाजार।

सुरुचि—हां हां शुरु हो बाजों की झंकार।

मंगला—अच्छा सरकार। हां वही गीत बजावो।

बजानेवाले—कौन सा।

मंगला—अरे वही गीत राज दरबार वाला।

बजानेवाला-हां हां याद आया। वही न है राजा मोरा सुन्दर सलोने मुखड़े वाला।

मंगला मुखियां—हां हां वही। (गाना)

है राजा मोरा सुन्दर सलोने मुखड़ा वाला।

वह मुझको हरदम चाहे, मैं उसको हरदम चाहू।

कभी कभी वह हो जाता है नाजों नखरेवाला ।

पहिले थी कुछ तकरार, अब वह मुझको करता प्यार ।

बना के चेहरा अपना वह सुन्दर भोला भाला ।

उत्तानपाद—यही बात है मंगला मुखियों यही बात है । मैंने तकरार कर उसे बनवास दिया, पर अब उसके लिये मेरे हृदय में अखंड प्रेम और अनुराग उत्पन्न हो रहा है ।

सुरुचि—अरे यह क्या राजा जी क्या बक रहे हैं । ( मंगला मुखियों से ) हां हां तुम लोग गावो । चुप न हो जावो ।

उत्तानपाद—( लेट कर ) हां हां पहिले थी तकरार अब वह करता मुझ को प्यार । हां प्यारी हां मैं तुझे प्यार करता हूँ । ( सुरुचि को पकड़ता है ) गाना सुनावो गाना । रोना नहीं खबरदार प्रेम का पन्थ निराला है । हां रानी सुरुचि अपने गाने वालियों से कहो कि वे गावें चुप क्यों हो गयीं ।

सुरुचि—नाथ आप क्या बक रहे हैं ।

उत्तानपाद—कुछ नहीं प्यारी मैं वही कह रहा हूँ जो मुझे कहना चाहिये । तुम वही सुन रही हो जो तुम्हें सुनना चाहिये । गावो गावो मंगला मुखियो गावो । चुप न हो जावो ।

मंगला—हां हां सुनिये । ( सब फिर गाना गाती हैं )

पहिले थी कुछ तकरार, अब वह मुझको करता प्यार ।

है भाग से मिलता प्यारा, प्रेमालाप करने वाला ॥

उत्तानपाद—ठीक है ठीक है । मंगला मुखियों ठीक है । तुमने ठीक ही कहा है कि विरले ही प्रेमी—( गिर पड़ता है । )

सुरुचि—आज नाथ को क्या हो गया है । कहीं किसी ने कुछ कर तो नहीं दिया हैं । आवो आवो सखियो आवो । जल्दी आवो ।

सखियां—( आकर ) क्या है रानी जी ।

सुरुचि—अरे देखो तो राजा को क्या हो गया है। पुरोहित जी को जल्दी बुलावो।

सखी—मैं अभी बुलाती हूँ। ( गयी )

सुरुचि—भगवान मेरे पतिदेव को अच्छा रखना।

उत्तानपाद—गावो गावो और गावो। गाने ही में इस पापिष्ट का धिक्कारो। धिक्कारो और खूब धिक्कारो।

सखियां—राजा जी क्या बक रहे हैं।

पुरोहित—(आकर)रानी आपने किस लिये मुझे यहां बुलाया है।

सुरुचि—देखिये न महाराज। राजा जी अभी अच्छे थे, पर अभी ही गाना सुनते सुनते न जाने इन्हें क्या हो गया।

पुरोहित—( नाड़ी देखकर ) कुछ नहीं सब ठीक है। थोड़ी देर में अच्छे हो जायेंगे। कुछ बड़ी रानी का वियोग है उन्हें पुरानी बातें याद आ गयी हैं।

सब—अच्छा समझी।

पुरोहित—अच्छा मैं भी जाता हूँ। जप जाप कर देता हूँ। आप लोग भी कुछ बोलिये नहीं, राजा जी को आराम करने दीजिये।

सुरुचि—बहुत अच्छा महाराज प्रणाम। (सखियोंसे )सखियों धीरे धीरे पंखा झेलती रहो। मैं अभी आती हूँ।

सब सखियां—बहुत अच्छा रानी जी ( रानी गयी ) ( सब सखियां पंखा झेलती हैं। और बड़े आश्चर्य से राजा की ओर देखती है )

## आठवां दृश्य।

स्थान—दुर्लभजी का कमरा समय-रात।

( दुर्लभदास अपने कमरे में बैठे सोचते हैं )

दुर्लभदास-मैं क्या करूं। न जीने में न मरने में। राजा ही भले जा एक को निकाल कर बाहर किया। पर यहां तो नई पुरानी के बीच में पड़ कर पनचक्की में पड़े हुए गेहूँ की तरह पिसा जा रहा हूँ। शकल ऐसी मानों मूर्दा हो रहा हूँ। क्या करूं कैसे पिंड छुड़ाऊं। जरा फरकू को तो बुलाऊं। फरकू फरकू अरे फरकू।

फरकू—( आकर) जी चाहता है कि कहीं सरकूं और ढरकूं। पर नहीं जरा सूमड़े स्वामी को शान पर चढ़ाऊं तब कुछ अपना मतलब बनाऊं। (प्रकाश) जी हां सरकार कहिये क्या है सरकार।

दुर्लभदास—देख मेरा जी कर रहा है कि दो औरतों में से एक को निकाल दूं, और एक से गृहस्थी चलाऊं। दोनों का बोझ भारी है एक सुकुमारी और दूसरी कुछ अनारी है।

फरकू—सरकार अनारी और सुकुमारी का भेद समझ में नहीं आया। कुछ समझाइये, नई पुरानी का भेद बताइये।

दुर्लभ—मूर्ख तू औरतों की बात सुन कर क्या करेगा; बच्चों को यह सब नहीं जानना चाहिये।

फरकू—तब क्या जानना चाहिये।

दुर्लभ—देखो तुम ब्रह्मचारी हो।

फरकू—ब्रह्मचारी किस चिड़िया का नाम है।

दुर्लभ—अरे मूर्ख अब तू सब शास्त्र को बात एक ही दिन में जान लेगा। धीरे धीरे जानना। अभी आगे जो काम है सो कर। व्यर्थ की बकवाद न कर, मुझे डरा कर।

फरकू—अरे सरकार अभी न डरवाइये कुछ खिलाइये पिलाइये

दुर्लभ—बेटा सब का नाम लेना पर खाने पीने का नाम न लेना। ब्रह्मचारियों को विशेष नहीं खाना चाहिये।

फरकू—तो सरकार आप भी तो ब्रह्मचारी हैं।

दुर्लभ—वह कैसे।

फरकू—ऐसे। कहावत है कि एक नारी ब्रह्मचारी।

दुर्लभ—पर मैं तो एक औरत वाला हूँ नहीं मैं तो दो औरत वाला हूँ।

फरकू—तो फिर आप डबल ब्रह्मचारी हैं। जब एक नारी वाला ब्रह्मचारी है तो डबल नारी वाला डबल ब्रह्मचारी है।

दुर्लभ—भाई इस लड़के का तो वेदान्त ही निराला है। इसके सवाल का जवाब देना भी भारी गड़बड़ झाला है।

फरकू—बल्के घोटम घोटाला है। गुरु जी यह भी तो आप ही का निकाला है। (दोनों औरतें सुन्दरी और सुन्दरी का प्रवेश)

दोनों—और ऐसे मर्द का मुंह काला है, जो न खाने का सामान जुटावे न कपड़ा लत्ता पहिनावे।

दुर्लभ—वाह एक धोती क्या साल भर के लिये काफी नहीं है। मैं एक धोती से अधिक नहीं दे सकता।

दोनों—वाह वाह खूब कही। अच्छी रही।

सुन्दरी—देखो तुम इस फेर में न रहना कि राजा के मुसाहिब होकर हमें दुःख दोगे और अपने सुख भोगोगे। मैं अभी राजा के पास फरयाद लेकर जाती हूँ, उन्हें अपना दुःखड़ा सुनाती हूँ॥

दुर्लभ—नहीं नहीं ऐसा न कर बाबा।

दोनों—फिर तो हमारे रहने, सहने, खाने, पीने, उठने, बैठने, का प्रबन्ध करो।

दुर्लभ—बाबा सब प्रबन्ध तो हो जायगा लेकिन उठने बैठने का प्रबन्ध कैसे होगा।

फरकू—(स्वगत) ऐसे कि एक को कान पकड़ कर उठावो और दूसरी को बैठावो। (प्रकाश) हां सरकार उठकी बैठकी का होना बहुत जरूरी है।

दोनों-मूर्ख हम लोगों को उठकी बैठकी कराता है। ठहर अभी तेरी खबर लेती हूं (मारने का भाव करती है)

फरकू—नहीं सरकार नहीं। क्षमा करो।। यह तो मैं बड़े सरकार (दुर्लभ को दिखा कर) के लिये कह रहा था।

दुर्लभ—मूर्ख पाजी बदमाश।

फरकू—(अपना कान पकड़ कर) नहीं सरकार यह तो मैं अपने लिये कह रहा था (कान पकड़ कर उठता बैठता है)

दुर्लभ—अच्छा चला जा यहां से।

फरकू-बहुत अच्छा सरकार जाता हूँ (चटकता मटकता जाता है)

दुर्लभ—हां मेरी दोनों औरतों तुम लोग एक बात सुनों। तुम दोनों के खिलाने पिलाने में मेरा तो दिवाला निकला जा रहा है इस लिये दोनों में से एक तो अपने नैहर चली जावो। दूसरी यहीं रहो।

सुन्दरी—तो कौन रहै और कौन जावे।

दुर्लभ-अब यह तुम लोग आपस में फैसला कर लो। मेरे लिये तो दोनों बराबर हो (स्वगत) क्योंकि दोनों का खर्च बराबर है।

सुन्दरी—मैं तो नहीं जाऊंगी।

सुन्दरी—तो मैं कब की जाने वाली।

दुर्लभ—अरे सुनो तुम दोनों हो भोली भाली। देखो कहीं मैं गुस्सा न हो जाऊं। नहीं तो राजा उत्तानपाद की तरह एक औरत को बनवास दे दूंगा। और तुम दोनों का जन्म भर मुंह न देखूंगा। हट जावो सामने से।

फरकू—(आकर) बेटा फरकू आ रहे हैं। साथ में पानी ला रहे हैं। दाना ला रहे है। घास फूस........

दुर्लभ०—अरे घास फूस किसके लिये ला रहा है।

फरकू—आपके लिये (रुककर) अरे आप हैं सरकार यह लीजिये पानी है तैयार।

दुर्लभ—क्या इसमें कुछ और भी पड़ा है?

फरकू—हां सरकार थोड़ी चीनी मिला दी गयी है।

दुर्लभ—(स्वगत) तो थोड़ा पीकर तब क्रोध करूं। आज मैं राजा उत्तानपाद की तरह दो जोड़ू वाले से एक जोड़ू वाला बनूंगा। (प्रकाश) लावो पहिले पानी पी लूं तब इनमें से एक को निकालूं। (पानी पीता है और मक्खी गिरी देखकर) है इसमें मक्खी कहां से आयी। इसका बड़ा भारी कुसूर हुआ है। यह क्यों बिना मेरी आज्ञा के चीनी खाने के लिये पानी पीने के लिये हमारे पात्र में कूद पड़ी। यह मेरी चीनी खाती मैं इसे ही खा जाऊंगा। (मक्खी की टांग पकड़ कर मारता है।)

सब—हैं हैं यह आप क्या कर रहे हैं।

दुर्लभ—कर क्या रहा हूँ। मक्खी ने हमारी चीनी क्यों खाई। अब है उसकी बारी आई।

सब-अरे छोड़ो। इसे चूसने से मुंह मोड़ो।

दुर्लभ—वाह खूब कही। मैं योंही इसे छोड़ दूं। यह मेरी चीनी लेकर चली जायगी। भला चली तो जाय। (मक्खी की टांग पकड़ कर तोड़ता है और चूसने का भाव करता है)

सुन्दरी—अरे यह क्या कर रहे हो (मक्खी को फेंक देती है)

दुर्लभ-(स्वगत) हाय हाय डाईन ने मक्खी को मुक्त कर दिया। (सुन्दरी से) अच्छा तू मेरे घर से निकल जा।

मुन्दरी—अरे क्या बिना कुसूर किसी को निकालते हो।

दुर्लभ—तू भी निकल जा।

फरकू—हां सरकार जरूर। इनमें से एक जरुर हो दूर।

दुर्लभ—निकलो नहीं तो मार पड़ेगी भरपूर।

सुन्दरी—मैं रानी सुनीति नहीं हूँ जो तुम्हारे कहने से घर छोड़ कर चली जाऊंगी।

मुन्दरी—मैं भी रानी सुनीति नहीं हूँ जो तुम्हारे कहने से चली जाऊंगी।

फरकू—देखिये महाराज ये दोनों रानी सुरुचि बन रही हैं।

दुर्लभ—बनें भले ही बनें। मैं तो फूटी कौड़ी इनको न दूंगा

दोनों—देखो मैं रानी सुरुचि से जाकर कहती हूं कि हमारे पति राम सुरुचि को गालियां दे रहे हैं। ( जाने लगती है )

फरकू—हां हां चलो मैं भी तुम लोगों का गवाह बन जाऊंगा।

दुर्लभ—( कुछ सोच कर ) अरे दोनों में से बाबा तुम कोई न जावो मैं सबको रखूंगा।

सब—नहीं नहीं अब हम लोग यहां नहीं रह सकते। सब लोग चलो रानी सुरुचि के यहां चलें।

दुर्लभ—नहीं बाबा नहीं। मैं सबको हाथ जोड़ता हूँ। तुम सब यहीं रहो। रानी सुरुचि के पास जाकर न जाने क्या तीन तेरह लगावो। उलटा सीधा समझावो। सारी विपत्ति मुझी पर लावो।

दोनों-तो फिर वादा करो कि जो हम दोनों कहेंगी वही करोगे।

दुर्लभ—हां हां बाबा करेंगे, करेंगे और लाख बार करेंगे। तुम दोनों के बीच में मरेंगे मरेंगे और लाख बार मरेंगे।

फरकू—पर मुझे मरने की फुरसत नहीं है। (स्वगत)क्यों बेटा फरकू। हाँ अब यहां से सरकूँ नहीं तो वे भादकी पड़ेगी।

दुर्लभ--अबे कहां जाता है।
फरकू—पेटी लेन सरकार
सुन्दरी--उस पर तो मेरा है अधिकार।
दुर्लभ—और मैं क्या करुंगा।
फरकू—आप सड़्र सड़क पर मुट्ठा भूजियेगा।
दुर्लभ—धत्तेरी की। (गाना)

दुर्लभ—बलिहारी है कैसी सुन्दर नार,
बारम्बार जाती रोष से भरी।
सुन्दरी—अब सूमपना दो तुम तो छोड़
सुन्दरी---तोड़ ताड़ दो पैसे की गगरी
दुर्लभ—अभी तो तुम सब भोली भाली,
कभी कभी हो नखरेवाली
सब—चलो चलो सब मिल के आज--
पुकारें राजा जी महाराज।--बलिहारी--

---

## नवां दृश्य।

स्थान—अत्रिमुनि की कुटि, समय-प्रात:काल
(रानी सुनीति की कुटी के सामने ऋषि कन्याएं गा बजा रही हैं)
(गाना)

सब—कैसी बहार है आज कुटि में प्यारी आवो,
गावें बजावें, हम सब मन मोद से.

लहि मोद मन अपार, लें बालक हम छोर छार
सती सुनीति-गोद से ।---कैसी बहार है आज---
देत बधाई हैं सभी बन की पत्ती पात
मानो फूली लह लहैं हर्ष न हृदय समात ।
देव पवन सुन लो संदेशा हमारा,
ध्रुव के होने का हाल कहना जी रे
जितनी हो जल्दी वहां का संदेशा,
सब सखियन सों कहना जी रे, ।---कैसी बहार है---

सब सखियां—रानी सुनीति को पुत्र होने की बधाई है, बधाई ( परस्पर ) क्यों हम लोगों की बात कैसी ठीक आई। रानी सुनीति ने पुत्र रत्न लाभ किया। अब उसका सारा दुःख दूर हुआ।

१ सखी--मैं तो समझती हूँ कि अब राजा उत्तानपाद रानी सुनीति को भली भांति चाहेंगे और रनिवास में रहने के लिये बहुत ही शीघ्र बुलायेंगे।

२ सखी-हां इस में भी कुछ सन्देह है। अब तो रानी पुत्रवती हुई। अब भी न बुलाई जायंगी तब कब बुलाई जायंगी।

३ सखी—सच कहा तो रानी सुनीति ही का पुत्र राज्य का उत्तराधिकारी है। रानी सुनीति बड़ी रानी हैं। सुरुचि छोटी हैं।

४ सखी—पर यह भी कुछ सुना है कि रानी सुरुचि को पहिले ही पुत्र हुआ है। इससे सम्भव है कि राज्यासन के लिये कुछ गड़बड़ हो।

१ सखी--गड़बड़ी किस बात की क्या तुम समझती हो कि बड़ी रानी को राज्यासन की इच्छा है। कभी नहीं। वह तो बहुत ही शीलवती हैं।

२ सखी—शीलवती होने से क्या । क्या समझती हो कि शीलवती होने से राज्य की इच्छा न होगी । होगी और अवश्य होगी । राज्य कौन नहीं चाहता ।

३ सखी—भला लक्ष्मी से कौन बैर करना चाहेगा । सभी चाहते हैं लक्ष्मी पास रहैं ।

४ सखी—हां सखी तुमने ठीक कही ।

लक्ष्मी से ही होत है कारज सकल महान ।
जाके घर लक्ष्मी नहीं वह है मृतक समान ॥

१ सखी—पर एक बात मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि रानी सुनीति को इन सब बातों की जरा भी परवाह नहीं है । वह तो केवल पति की सेवा करनी चाहती थी ।

२ सखी—हां इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि रानी सुनीति बड़ी ही सीधी साधी हैं ।

३ सखी—तो उसका लड़का भी परमात्मा की कृपा से सीधा ही होगा ।

४ सखी—सुना है कि अत्रिमुनि ने समझाते समय कहा था कि रानी सुनीति के गर्भ से एक बड़ा ही भक्त व्यक्ति पैदा होगा । क्यों सखी कहीं यह बात ठीक न हो जाय ।

१ सखी—इसमें भी कोई सन्देह है । बड़ों की जिह्वा से निकली हुई बातें कभी व्यर्थ नहीं जातीं ।

२ सखी—आवो तब सब मिल कर आनन्द गीत गावें ।

सब—हां हां जरूर । ( गाना )

सती का संकट दूर हुआ, सुनीति को मिल कर देखो हुआ ।
बड़े कष्ट के बाद यह बालक पाया है मानो कुल पालक ॥
—सती का संकट दूर—

अब तो मंगल है चहुं ओरा, रानी ने पायो है छोरा ।
देवी देवता खूब मनावो, जय जय जय जय मंगल गावो ॥

—सती का संकट दूर—

( अत्रि मुनि अपने शिष्यों के साथ साथ आते हैं )

अत्रि—कन्यावों आज यह कैसा आनन्द उत्सव हो रहा है। मानों यह आश्रम ही मुझसे कुछ हर्षसूचक समाचार कह रहा है ।

सब—गुरुदेव रानी सुनीति ने पुत्र रत्न पाया है । इसी लिये हम लोगों ने आज यहां उत्सव मनाया है ।

अत्रि—तभी तो आश्रम के चारो ओर वन्दनवार लगाये गये हैं । दरवाजों पर माला फूल लटकाये गये हैं ।

धन्य धन्य है शुभ घड़ी और धन्य है रानि ।
जाने अपनी कोख में, लियो पुत्र ध्रुव आनि ॥

बालक—महाराज आपने पहिले ही नाम करण कर दिया ।

अत्रि—बालको सुनो । पूत के लक्षण पालने पर । लेकिन मैंने इस पुत्र के लक्षण गर्भ ही में देखे । यह बालक भक्तों में भक्त शिरोमणि होगा । अपने कुल की कीर्ति को बढ़ावेगा । घोर तपस्या कर भगवान को पावेगा ।

सब—फिर तो गुरु जी, धन्य हम लोगों के भाग हैं, जो ऐसे व्यक्ति को इस आश्रम में पाया है । अपने भाग के साथ साथ हम लोगों के भाग्य को भी जगाया है । अहा—

सब—धन धन सुनीति को जन्यो भक्त ध्रुव भाई ।
जिसने अनन्य भक्ती से कीर्ति कमाई ॥
१ बालक—रानी सुनीति ने सह कर कष्ट अनेका ।
२ बालक—लज्जा राखी अरु अपने पति की टेका ॥
३ बालक—जंगल में जाकर कुटि में दिवस बिताई ।
४ बालक—पर अपने पति के दुख में हुई सहाई ॥
अत्रिमुनि—भक्तों में भक्तशिरोमणि ध्रुव को जानो ।

बालक को बाल अवस्था में पहिचानो ॥
सब होओ बालक ध्रुव की नाईं भाई ।
कुछ करो काम साहस करके दृढ़ताई ॥

अत्रि-अच्छा बालकों, बालक का नाम करण तो हो गया। कन्यावो तुम लोग सब मिलकर रानी सुनीति से पूछो कि बालक का नाम ध्रुव उसे पसन्द है या नहीं।

सब कन्याएं—बहुत अच्छा गुरुदेव जी (सब रानी की कुटी में आकर) रानी रानी बालक का नाम ध्रुव रखा गया है। गुरु जी पूछते हैं कि तुम्हें नाम पसन्द है या नहीं।

रानी—भला ऋषि मुनियों का रखा हुआ नाम मुझे पसन्द न हो। गु रु जी की मैं बारम्बार बन्दना करती हूँ ।

कन्याएं—गुरुदेव रानी को नाम पसंन्द है वह आपको बारम्बार बंदना करती हैं।

अत्रि—उसे तुम आशीर्वाद कहो। और कहो कि उसे अब नाम मात्र भी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। भगवान मंगल करेंगे।

कन्याएं—बहुत अच्छा गुरुदेव जी। (रानी से) गुरुदेव आप को आशीवाद देते हैं और आपके पुत्र की मंगल कामना करते हैं।

अत्रि—अच्छा परमात्मा के भजन के साथ साथ उत्सव मनावो। गावो बजावो।

सब—हां हां जरूर। (गाना।)

धन्य धन्य यह समय और शुभ अवसर जानो ।
यह सब लीला परमेश्वर की है पहिचानो ।
विमल,मुहूरत भारी, बालक ध्रव है कोई अवतारी ।
इसकी कथा सुनै जग सारी, धन्य धन्य इसकी महतारी ॥
धन्य धन्य यह समय और शुभ अवसर जानो ।
यह सब लीला परमेश्वर की है पहिचानो ।

[ सब लोग गाते गाते जाते हैं परमात्मा को हाथ जोड़ते हैं ]

———

# तीसरा अंक

## पहिला दृश्य

स्थान-अत्रिमुनि का आश्रम        समय-सन्ध्या

( अनुसूइया देवी बैठी हैं अगल बगल तीन चार ऋषि कन्यायें बैठी हुई चरखा कात रही हैं ।)

चरखे की धुन बड़ी निराली । समय जाय नहिं इसमें खाली ॥
चल मेरे चरखे हाली हाली । हाली चल, कर तन रखवाली ॥

अनुसूइया—बेटियो ! जावो सामने वह पत्थर का टुकड़ा पड़ा हुआ है उसे उठा लावो ।

१ कन्या—पत्थर क्या होगा माता जी,

अनुसूइया—लावो भी तो कुछ काम है ।

२ कन्या—अच्छा मैं लाती हूँ माता जी अभी लाई । ( सब पत्थर का टुकड़ा उठा लाती हैं । )

अनुसूइया—बैठो और देखो । मैं तुम लोगों के पाठ के लिये जो दोहा इस पर लिखती हूँ उसे अपने मन में धर लो । समय पड़ने पर काम आवेगा । तुम लोगों को भारी बिपत्ति से बचावेगा ।

सब—हाँ माता जी बताइये ।

अनुसूइया—देखो । ध्यान से पहिले सुनो फिर पीछे कहो ।

जो नारी जग में चहै, पति हो अपनी ओर ।
बशीकरण इक मंत्र है, तज दे बचन कठोर ॥

सब—जो नारी जग में चहे पति हो अपनी ओर।
बशीकरण इक मंत्र है, तज दे बचन कठोर।

अनुसूइया—समझ लिया।

सब—हां माता जी समझ लिया।

अनुसूइया—और भी सुनो।

बिनय मंत्र से होत हैं, नित प्रसन्न भगवान।
पतिवश करने के लिये, बिनय मंत्र लो जान

सब—बिनय मत्र से होत हैं नित प्रसन्न भगवान।
पति वश करने के लिये बिनय मंत्र लो जान॥

अनुसूइया—बेटियो हमारे दोहों को याद रखना। पति से मान कभी न करना। देखो तुम्हारे आश्रम में आयी हुई देवी सुनीति उदाहरण स्वरुप विराजमान है। पति के कठोर और निठुर बर्ताव पर भी वह पति की मंगल कामना किया करती है। नित उन्हीं का ध्यान धरा करती है।

सब—जैसी आप की शिक्षा होगी हम सब वैसाही करेंगी।

अनुसूइया—हां बेटियो! हमें भी तुम लोगों की ओर से पूरी आशा है कि तुम सब हमारे आश्रम को बदनाम न करोगी। देखो भारत में स्त्रियों का जीवन सुख के लिये नहीं वरन तपस्या के लिये है। जिस प्रकार खेत सड़ा गली मिट्टियों को भी खाद स्वरुप में लेकर उसमें अच्छे वृच्छों व फल फूल पतियों का अंकुर फेंकता है उसी प्रकार तुम लोग भी पतियों से नाना प्रकार का दुःख पाकर भी अच्छे पुत्रों को प्रसव करती हो।

( शोक करते हुए रानी सुनीति का बालक ध्रुव के साथ साथ प्रवेश ]

सुनीति—बेटा मन मलीन न कर। देख तू एक राजकुमार है। सिंह का बच्चा सिंह ही होता है। धीरज धर परमात्मा सब क्लेश दूर करेंगे। ( सामने अनुसूइआ को देखकर ) मातेश्वरी प्रनाम।

अनुसूइया—रानी तुम्हारी उम्र बढ़ेगी कारण कि अभी तुम्हारा ही जिक्र हो रहा था।

सुनीति—धन्य मेरे भाग जो मुझ अभागिन का जिक्र हो। भला मैं इसके लायक हूँ, मातेश्वरी।

अनुसूइया—नहीं सुनीति ऐसा न कहो। यद्यपि संयोग से तुम्हारे ऊपर कष्ट आ पड़ा है पर वह सब दूर हो जायगा। सबर करने वाला अच्छा फल पायगा।

ध्रुव—मातेश्वरी माता जी मुझे पिता का बिवरण नहीं बताती हैं। आज अन्य ऋषि कुमारों ने मेरा अपमान किया है।

अनुसूइया—क्या अपमान किया बेटा।

ध्रुव—कहा कि तुम्हारे माता पिता ठिकाना नहीं। हम लोग तुमको अपने संग नहीं खेलावेंगे।

अनुसूइया—नहीं बेटा धीरज धरो। मैं उन बालकों को दंड दूंगी।

सुनीति—नहीं मातेश्वरी दंड देने का काम नहीं है।

बालक सभी समान, ज्ञान नहिं उन्हें मान का।
हैं सब ही अज्ञान-ध्यान नहीं उन्हें मान का॥

ध्रुव—नहीं मातेश्वरी मुझे अपने पिता का सारा विवरण बतावो। क्या बात है सब कह सुनावो।

अनुसूइया—सुन बेटा मैं सुनाती हूँ। अपनी माता से जिद न कर जो कहती हूँ उस पर ध्यान धर।

ध्रुव—हां मातेश्वरी सुनावो।

अनुसूइया—सुन बेटा सुन। तेरे पिता का नाम उत्तानपाद है। वे राज राजेश्वर हैं। प्रियव्रत और उत्तानपाद दो भाई थे। राजा उत्तानपाद की दो रानियां थीं। सुनीति और सुरुचि।

ध्रुव—माता माता जब मुझे दो माताएं मौजूद हैं तो मैं यहां जंगल में क्यों पड़ा हूं।

अनुसुइया—सुन बेटा धीरज धर राजा उत्तानपाद अपनी दूसरी रानी की बात बहुत मानते थे। अस्तु उसी के कहने से उन्हों ने बड़ी रानी सुनीति को घर से बाहर निकाल दिया।

ध्रुव—उनका कुसूर क्या था।

अनुसूइया—उनका कुसूर कुछ नहीं। तुम्हारी माता सुनीति यहीं मेरे आश्रम में आई और मैंने उसे रख लिया। तुम्हारा जन्म इसी जंगल में हुआ है।

ध्रुव—तो फिर मैं अपने पिता को एक बार देखना चाहता हूँ।

सुनीति—बेटा तू क्या करेगा देख कर। वे तुम्हें न चाहेंगे वरन कुछ भली बुरी सुनायेंगे।

ध्रुव—सुनाने दो, वे तो पिता हैं। पिता का बेटे पर सब तरह से अधिकार है। एक तरह से वही मेरा सिरजन हार है।

अनुसूइया—बेटा तू ठीक कह रहा है लेकिन जब पिता अपने उपजाये हुए बालक का ध्यान न करे तो क्या किया जाय।

सुनीति—बेटा मैं तो हूं। तेरी रक्षा करने वाली तेरी माता अभी बैठी है। गुरुवर की कृपा से तुझे कोई कष्ट न होगा।

ध्रुव—क्यों नहीं कष्ट है। देखो पास में वस्त्र भी तो नहीं पहिनने को है। कहती हो मैं राजकुमार हूं। क्या राजकुमार को ऐसा ही वस्त्र चाहिये। (अत्रि मुनि का प्रवेश)

अत्रि—क्या है बेटा ध्रुव तू किस बात की चिन्ता कर रहा है।

ध्रुव—हे भगवन, माता कह रही हैं कि मैं राजकुमार हूं। भला राजकुमार के क्या यही लक्षण हैं।

नहिं तन पर साबूत वस्त्र अरु पग में पनहीं।<br>
नहिं सिर पर है राजछत्र जो क्षत्रिन धरहीं॥<br>
नहिं कमर में तीर और तरकस हे मुनिवर।<br>
नहीं पीठ पर ढाल और तलवार विप्रवर॥

अत्रि—सुन बेटा सुन—

समय समय पर होगा सब कुछ, मन को मारो।
नहीं रहैगा सदा समय यह धीरज धारो॥
पठन पाठ तुम करो यहां ब्रह्मचारी होकर।
जाना घर को लौट वीर व्रतधारी होकर॥

अनु—हां बेटा हां, इस आश्रम को ही तू अपना राज मान अपने को तू महाराज जान। विद्या पूरी हो जाने पर हमी लोग तुझे राजा के समान जानेंगे। तेरी आज्ञा को मानेंगे।

सुनीति--मातेश्वरी यह आप क्या कह रही हैं। हम लोग तो आपके आश्रित जीव हैं।

अत्रि—और तुम सुनो रानी।

धीरज धर पालन करो, क्षत्रानिन की रीत।
जग की चिन्ता छोड़ कर, करो बाल से प्रीत॥

बालक होनहार है इसी लिये मेरा भी इस पर ध्यान बारम्बार है।

( नेपथ्य में प्यारे ध्रुव आवो प्यारे ध्रुव आवो )

सुनीति--कौन बुला रहा है।

अत्रि—जान पड़ता है संगी साथी खेल खेलवाड़ के लिये बुला रहे हैं। जावो बालक ध्रुव जावो खेलकर दिल बहलावो। नहीं ठहरो मैं यहीं तुम्हारे साथियों को बुलाता हूँ। ( बुला कर ) अरे बालको यहां आवो। ( सब बालक आते हैं। )

सब—गुरु जी आज्ञा,

अत्रि—जावो ध्रुव को भलीभांति खेलावो।

सब—बहुत अच्छा गुरु जी ( सब गये )

अत्रि—( अनुसूइया से ) देवो चलो अभी नदी तट पर जाना है। वहीं आज यज्ञ का सामान जुटाना है। ( सुनीति से ) बेटी तुम्हारी इच्छा हो तो तुम भी चलो। चलो आश्रम में चला जाय।

सब —चलिये गुरुदेव जी चलिये। ( सब गये )

---

## दूसरा दृश्य ।

स्थान—राजा उत्तानपाद की सभा,   समय—सुबह ।

[ राजा उत्तानपाद राज सिंहासन पर बीच में बैठे हैं । कितने सामन्त और सरदारगण खड़े हैं । ]

अप्सराएं—( गाती हैं )

चिरजीवी होवें महराज ।
दुख तो इनके पास न होवे, सुख का होवे साज ।
निशिदिन रहैं प्रबल शत्रुन पर, ज्यों पक्षिन पर बाज ॥
इनकी कीरति चहुंदिशि फैले, लहि सुख साज समाज ॥
इनकी रक्षा के लिये, आ जावें भगवान ।
सदा सर्वदा राजकर, होत रहे कल्यान ॥ —चिरजीवी—

मंत्री—महाराज के श्री मुख पर कुछ खेद टपक रहा है भेद कुछ भी नहीं मालूम हो रहा है ।

उत्तान—तुम खेद की बात कहते। सुनो मैं सुनाता हूँ । असली कारण तुम्हें बताता हूँ । जब से रानी सुनीति इस रनिवास से चली गयी । उसी दिन से मानों हमारे राजमहल की लक्ष्मी चली गयी ।

मंत्री—इसको तो सारी प्रजा कही रही है । महाराज अब इसका जिकर ही छोड़ये । बड़ी रानी के प्रति जो कुछ भी बचा खुचा प्रेम हो उससे मुख मोड़िये ।

उत्तानपाद—मंत्रीवर उसका यहां न होना, मुख मोड़ना ही समझिये । जब उसके शील स्वभाव की ओर ख्याल करता हूं तो दिल टुकड़े टुकड़े हो जाता है । मन घबड़ाता है ।

मंत्री—जो मन घबड़ाता है तो उसे यहां बुलवा लीजिये।

उत्तानपाद—यह भी तो नहीं हो सकता।

मंत्री—तो फिर क्या हो सकता।

उत्तान—मेरे लिये उस सती के वास्ते दुःख करना। मानो मरना है।

मंत्री—राजन अगर जीना मरना है तो फिर उसकी चिन्ता छोड़ दीजिये। राज कुमार उत्तम की ओर ध्यान दीजिये।

उत्तानपाद—राजकुमार उत्तम तो है ही। लेकिन उत्तम से बढ़कर उस अबला का ध्यान आ रहा है जो मेरे रहते जंगलों में में भटकती फिरती होगी। कैसे होगी क्या करती होगी।

बुरा जान कर भी उसने सन्मान किया था।
जंगल में भी उसने मेरा मान किया था॥

मंत्री—राजन बीती बात को जाने दीजिये। प्रजा भी अब शान्त हो गयी है। कौन रानी सुनीति को याद करता है।

उत्तानपाद—मंत्री वर कोई न करे पर मैं तो करूंगा।

कभी नहीं मैं सति सुनीति को बिसराऊंगा।
मरते दम तक भी उसके गुन को गाऊंगा॥

मंत्री—फिर व्यर्थ की चिन्ता में समय न बिताइये। जो दुनिया कहे उसे सुनते जाइये।

उत्तानपाद—सुनूंगा मंत्रीवर सुनूंगा। दुनिया जो कुछ कहेगी मैं सब कुछ सुनूंगा। क्योंकि मैंने काम ही ऐसा किया है। मैंने जान बूझ कर विष का प्याला पिया है। पर बिना पिये बनता भी नहीं था। मैं जानता हूँ कि आगे कुंआ और खाई है। पर दिल कहता है कि कूदने ही में भलाई है।

मंत्री—महाराज गृहस्थाश्रम धर्म का पालन करना बड़ा ही कठिन है। मैं तो कहता हूं कि इसके नियमों और उपनियमों का

पालन करना उस योगी की तपस्या से भी कठिन और कठोर है जो संसार त्यागी होकर निर्जन स्थान में तपस्या के लिये बैठता है।

उत्तानपाद—मंत्रिवर तुम्हारा कहना ठीक है, पर एक बात मेरी समझ में नहीं आती है कि लोग जान बूझ कर स्त्री के वश में होकर क्योंकर ऐसा काम करते हैं।

मंत्री-प्रभोवर! सब होनी होती है। पूर्वजन्म के संस्कार से सब बातें परमात्मा की ओर से प्रेरित होती हैं। (दरवान आगे बढ़कर)

दरवान—महाराज कुछ ऋषिकुमार आर्शीबाद देने के लिये आये हैं। शायद कुछ फरयाद लाये हैं।

उत्तानपाद—कहो अभी मैं कुछ मन्त्रणा कर रहा हूँ।

मंत्री—नहीं राजन ऋषि कुमारों से पहिले बार्त्तालाप करके तब कुछ काम करिये। कारण कि ये ऋषि कुमार हैं।

उत्तानपाद—अच्छा तो उन लोगों को बुलावो।

दरवान—बहुत अच्छा महाराज। (गया)

उत्तानपाद—ऋषि कुमारों का दर्शन भी बड़े भाग्य से होता है

मंत्री—इसमें भी कुछ सन्देह है। पूजनीय ऋषि मुनियों की सन्तान का समुचित रुप से आदर करना परम धर्म है।

दरबान-महाराज लोग यह हाजिर हैं। (ऋषि कुमारों का प्रवेश)

उत्तानपाद—ऋषि कुमारों का प्रनाम। कहो क्या है काम।

सब—राजन तुम्हारा मंगल हो।

ध्रुव—महाराज मैं आपको प्रनाम करता हूं। शीश पैर पर धरता हूं।

उत्तानपाद—हां हां यह तुम क्या कर रहे हो। तुम ऋषि कुमार होकर ऐसा ब्यवहार करते हो।

ध्रुव—महाराज मैं ऋषि कुमार नहीं हूँ। मैं राजकुमार हू।

उत्तानपाद—पिता का नाम।

ध्रुव—आपही मेरे पिता हैं।

उत्तानपाद—खूब कही। यों तो सारी प्रजा मुझको पिता कहती है। मैं बिना परिचय पाये कैसे तुम्हें पुत्र कह कर सम्बोधन करूं। अच्छा माता का नाम।

ध्रुव—रानी सुनीति।

मंत्री—( स्वगत ) भगवन तेरी कैसी लीला है। हो न हो यह बालक रानी सुनीति का पुत्र हो। ( प्रकाश ) कौन सुनीति।

सब ऋषि कुमार—राजा उत्तानपाद की रानी सुनीति-जिसे राजा जी ने राजमहल से बाहर किया था।

उत्तादपाद—( स्वगत ) मैं क्या सुन रहा हूँ। मेरी इच्छा पूरी हुई। भगवान शंकर ने बड़ी कृपा की। अच्छा तो बालक से भी परिचय लेना चाहिये। इस समय वह राक्षसी भी नहीं है। इसे गोद में बैठा कर कुछ बातें करनी चाहिये ( प्रकाश ) बेटा यहां आवो। ( गोद में ध्रुव आ जाता है। चुमकार कर ) बेटा तुम्हारी माता कैसी है।

ध्रुव—पिताजी अच्छी तरह हैं। मेरे फटे पुराने कपड़े पर जब वह रोती है तब मैं भी रोता हूं। मुझे अच्छा सा कपड़ा दो।

उत्तानपाद—( स्वगत ) सुन पाजी उत्तानपाद सुन। देख लो संसार के लोगों देख लो एक औरत के वश में होकर पुरुष क्या क्या करता है। ( प्रकाश ) बेटा...(रानीसुरुचि का लपक कर आना)

सुरुचि—राजन यह कौन है ?

उत्तान—अभी मैं राज कुंवर उत्तम से बातें कर रहा था कि ये ऋषि कुमार लोग आ गये। मैं इस लड़के से कुछ पूछ रहा था।

उत्तम—नहीं मां पिता जी मुझे उतार कर इस लड़के को अपनी गोद में बैठा इसका मुख चूमते थे। कहते थे बेटा, बेटा,

सुरुचि—हां बेटा हां। मैं सब कुछ नेपथ्य में से देख रही

थी। मर्दों की जात कैसी खुद गर्ज होता है। तुम्हारे पिता बड़े चालाक हैं। मैं अब उनकी छल भरी बातों में न आऊंगी। क्यों महाराज बात ठीक है न। यह किसका लड़का है।

उत्तानपाद—रानी यह तो ऋषि कुमार है।

सुरुचि—ऋषि कुमार है। (ध्रुव से) क्यों रे छोकरे तू कौन है महाराज की गोद में बैठने वाला।

अरे अभागे जंगली, दुखिया की संतान।
भोगन चाहत राज सुख और राज सन्मान॥

ध्रुव—अरे तुम कौन हो। अपना परिचय दो। पिता की गोद से तुम्हें उतारने का क्या अधिकार है।

सुरुचि-नीच पाजी जंगली चुप रह, क्या है तेरी माता का नाम

ध्रुव—सुनो सुनो मेरी माता का नाम सुनीति है। पिता का नाम राजा उत्तानपाद। मैं अपने पिता की आज्ञा से गोद में बैठा था।

सुरुचि—सुन सुन रे छोकरे सुन।

हो करके तू काक, मान सरवर अभिलाखत।
धो करके सब लाज, आज तू नृप सुत भाखत।
छूना चाहे गगन चन्द तू वामन हो कर।
पापी चाहे स्वर्ग, व्यर्थ ही पावन हो कर॥
मैं हूं राज महिषि, सुन मेरा सुत अधिकारी
क्योंकि पला वह राज गोद में तू बनचारी

ध्रुव—तुम महारानी और मेरी माता भिखारिन।
है कैसी यह बात मुझे तुम तुरत बतावो।
यदि होवे कुछ कथा उसे तुम तुरत सुनावो॥

सुरुचि—यदि भिखारिन न होती तो मेरी ही तरह वह रनिवास में निवास न करती होती।

फिरती फिरती मारी क्यों वह जंगल माहीं
राजमहल में रहती वा रहती यहि ठाहीं।

ध्रुव—पर आप इतना क्रोधित होकर क्यों बात करती हैं। राजसिंहासन पर बैठाने वा न बैठाने का अधिकार पिता को है।

सुरुचि—छोकरे अभी तक तू बक बक किये जा रहा है। चुप रह नहीं तो डंडों से तेरी खबर ली जायगी।

ध्रुव—बड़ों की मार खाना छोटों का धर्म है।

सुरुचि—तू छोटा कैसे। तू तो अपने को राजकुमार बताता है।

ध्रुव—मैं वही कहता हूं जो संसार मुझे सुनाता है।

सुरुचि—संसार झूठा है।

ध्रुव—लेकिन अफवाह में कुछ सचाई भी हो सकती है।

सुरुचि—जंगल के रहनेवाले जंगली सियार कहाते हैं।

ध्रुव—पर लोग तो मुझे राजकुमार बताते हैं।

सुरुचि—तेरी माता भिखमंगिन है उसका जीवन बरबाद है।

ध्रुव—पर पिता का नाम उत्तानपाद है

सुरुचि—छोकरे अगर तू अपनी बेहतरी चाहता है तो सीधे से यह दरबार अभी छोड़ दे। नहीं तो सिपाहियों से तुझे मार कर निकलवा दूंगी। तेरा प्रान लेकर तब चैन लूंगी।

ध्रुव—सब का रक्षक एक वही परमात्मा है। आपकी क्या शक्ति है जो आप मुझे मारें वा यहां से बाहर निकारें।

सुरुचि—हां हां लड़के तू क्यों नहीं बकेगा। तेरा हिमायती बाप बैठा है न (राजा से) सुनिये राजन हाथ कगंन को आरसी क्या। यह सब आप ही करा रहे हैं। इस झगड़े के घर आप ही हैं। यदि आपने अभी तक उस मायाविनी से सम्बन्ध न रखा होता तो यह जंगली छोकरा मुझ से बहस करने के लिये तैयार

न होता । अब तक आपने अपना खूब माया जाल फैलाया था । मेरे बच्चे पर बिल्कुल बनावटी प्रेम जनाया था ।

उत्तानपाद—( स्वगत ) मेरी तो सांप छछुंदर की गति हो रही है । मैं क्या करूं । (प्रकाश) अच्छा ऋषि कुमारों तुम लोग जावो । अपने अपने आश्रम को लौट जावो । ( स्वगत )

ध्रुव—हाय यह कैसी बात । राजा तुझे भी ऋषि कुमारों के साथ साथ लौट जाने को कहते हैं । चलो फिर यहां से चला जाय।

सुरुचि—अज्ञान बालक इस जन्म में राजसिंहासन पर बैठने की बासना छोड़ दे । तेरा जन्म एक भाग्यहीन स्त्री के गर्भ से हुआ है । राजकुमार उत्तम मेरे गर्भ से पैदा हुआ है । अगर तू कुछ तपस्या कर और फिर से मेरे गर्भ में से पैदा हो तब इस सिंहासन का उत्तराधिकारी हो सकता है । अन्यथा जाकर जंगल में वास कर इस जन्म में न स िसहासन की आस कर ।

ध्रुव—अच्छा महारानी जी आप कोधित न हों । मैं अभी ही इस राजभवन का त्याग करता हूं । पिता जी प्रनाम और प्रनाम

सुरुचि—मूर्ख बच्चे अभी तक तू अपनी हरकत से बाज नहीं आता । फिर भी तू जंगली छोकरा होकर एक राजा को अपना पिता बनाता है । जा चला जा और मेरे सामने से चला जा । अभी जा । मेरे सामने से जा ।

ध्रुव—अच्छा जाता हूँ, महारानी, जाता हूं । पर याद रक्खो कि एक दिन परमात्मा चाहेगा तो मैं इस क्षुद्र राजसिंहासन से बढ़ कर भी कोई सिंहासन प्राप्त करूंगा ।

ऋषि कुमार—हां चलो भाई चलो ।

ध्रुव—पिता जी प्रनाम । जाता हूं । आप को शीश नमाता हूं । महारानी तुम से भी है नाता । तुम भी हो हमारी माता ।

सुरुचि—चला जा छोकरे चला जा। भिखमंगिन का लड़का होकर मुझे माता बतावे। तुझे कुछ शरम लिहाज भी न आवे।

ध्रुव—सभासदो, सामन्तों, और राजा को प्रनाम। महारानी को भी दंडवत प्रनाम।

सब ऋषिकुमार—प्रनाम। आशीर्वाद। जय जयकार।

ध्रुव—चलो भाई चलो। अगर मैं सच्चा क्षत्रिय कुमार हूं तो राजसिंहासन से भी बढ़कर कोई और सिंहासन प्राप्त करूंगा। हे भगवन यदि राजा ने अपनी गोदमें नहीं बैठाया है तो आप मुझे बैठाइये। इस बालक की टेक को निबाहिये। भगवन अब आपही का आसरा है आपही के हाथ गुजारा है। (गाना)

हे भगवन आशा है भारी।
दीनबन्धु दीनों के रक्षक करना रखवारी।
तुमहीं मेरे मात पिता मैं बालक निपट अनारी

---

## चौथा दृश्य।

स्थान—राजभवन समय—प्रातःकाल के बाद

(रानी सुरुचि की सखियां परस्पर बात चीत कर रही हैं)

सुन्दरी—क्यों मालती अब तो हम लोगों को किसी प्रकार का दुःख नहीं है। यहां तो सदा अपना पौ बारह है। कहीं बड़ी रानी रहती तो हम लोगों की इतनी न चलती।

१ सखी—हां सुन्दरी ठीक है पर लोग कहते हैं कि वह बड़ी ही सुशीला थी। धर्म शीला थी।

सुन्दरी—लाख धर्म शीला हो, पर छोटी रानी के हित में वे जरूर ही कांटा बोती । सौत तो मौत है होती ।

२ सखी—हां तुम्हारा कहना एक प्रकार से ठीक है पर रानी सुनीति ही ने तो कह सुन कर राजा का बिवाह कराया छोटी रानी को बुलाया ।

सुन्दरी—सब कुछ किया पर सौत सौत का एक स्थान में रहना ठीक नहीं है । देखो न उस रोज तुम्हारे सामने सुनीति की सखियों ने कैसा ताना मारा था कि बड़ी रानी के गर्भ से हुआ बालक ही राजकुमार होगा ।

३ सखी-हां ठीक तो कहा था लेकिन वह तुम्हे बुरा लगा था।

सुन्दरी—जरूर लगेगा । कारण कि मैं तो सदा सर्बदा रानी सुरुचि की ही ओर से बात करुंगी । मैं उसके देश से आई हूँ तो उसके भले बुरे का ख्याल रखना ही पड़ेगा ।

३ सखी-ख्याल रखना ही चाहिये लेकिन दूसरे का भी ख्याल रखना चाहिये । रानी सुनीति अगर यहीं राज महल के किसी कोने अतरे में पड़ी रहती तो क्या बुरा था ।

सुन्दरी—बुरा था और जरूर बुरा था । मैं तो साफ दिल की औरत हूँ । मैं नहीं चाहती कि रानी सुनीति यहां रहै ।

मालती—हां यह कहना ठीक है ।

सुन्दरी—ठीक है वा बुरा तुमसे मतलब ।

मालती—बाबा मेरे ऊपर क्यों चिटकती हो । अपना चिट-कना अपने घर रखो । लो तुम्हें बुरा लगता है तो मैं चली जाती हूँ ।

सुन्दरी—जा न तुझे बुला ताही कौन है ।

मालती—मैं तुम्हारे बुलाने की भूखी नहीं हूँ ।

सुन्दरी—तो क्या मैं भूखी हूँ ।

मालती—तभी तो लोग तुम्हें महामाया कहते हैं ।

सुन्दरी—मैं महामाया कहने वाली का मुँह फूँकती हूँ।

मालती—जाकर अपने पति का मुंह फूंक। उसी ने तो कई बार कहा है। वह तो तुझे खुले आम महामाया कहता है।

३ सखी—हां सुन्दरी यह बात तो ठीक है। अपनी बड़ी औरत को दुर्लभ जी महाकाया और तुम्हें महामाया के नाम से सम्बोधन करते हैं।

सुन्दरी—तू भी मालती वाली कहने लगी।

२ सखी—जोवो, सखी तुम तो सब से लड़ाई कर बैठती हो। किसी को कुछ कहने भी न दोगी। सब अपने ही कहोगी। किसी और की भी न सुनोगी?

सुन्दरी—सुनूंगी और जरूर सुनूंगी लेकिन जो सुनने वाली बात होगी उसे सुनूंगी। यह नहीं कि जिसके मन में जो आवे वही सुनावे।

मालती—अच्छा तो ले बाबा मैं चली जाती हूँ। (गयी)

३ सखी—लो मैं भी जाती हूँ। (गयी)

सुन्दरी—जावो न मुझे क्या सुना कर जाती हो। (सुरुचि का प्रवेश)

सुरुचि—अरे क्या है सुन्दरी।

सुन्दरी—कुछ नहीं रानी जी। मालती और बालेश्वरी मुझ से क्रोधित हो कर जा रही हैं।

सुरुचि—नहीं नहीं उन्हें बुलावो। (पहिली सखी से) जा जा बुला ला। (पहिली सखी गयी) खफा न हुआ करो सुन्दरी।

सुन्दरी—मैं कुछ नहीं कहती महारानी जी। यही सब मुझे जब हुआ तब खरी खोटी सुनाती हैं।

सुरुचि—सुनाने दो। (मालती और बालेश्वरी आती हैं)

दोनों—रानी जी प्रनाम।

सुरुचि—अरे तुम लोगों ने क्यों रार मचायी है। कैसी लड़ाई है।

दोनों—लड़ाई की कौन सी बात है। जरा भी सच्ची बात कहने पर सुन्दरी त्योरी बदला करती है। खरी खोटी बकती है।

सुरुचि-नहीं ऐसा नहीं होना चाहिये। अच्छा एक बात बतावो।

सब—कहिये क्या है रानी जी।

सुरुचि—सुनो सब लोग ध्यान दे कर सुनो। कारण कि तुम लोगों को नहीं सुनाऊंगी तो और किसको सुनाऊंगी। अपने दुखड़े का राग और किसके सामने गाऊंगी।

सब—क्या हुआ रानी जी।

सुरुचि—हुआ क्या जो सोचती थी वही हुआ। अभी तक बड़ी रानी सुनीति जीती है।

सब—जीती हैं

सुरुचि—हां जीती है।

सब—तो जीने दीजिये। उनके जीने से क्या होता है।

सुरुचि—असली खबर तो तुमने सुनाही नहीं। उसका पुत्र ध्रुव आज ऋषि कुमारों के साथ साथ राज सभा में आया था।

१ सखी—बड़े आश्चर्य की बात है। उसे बालक कैसे हुआ। जब वह यहां से गयी तब वह गर्भवती तो थी ही नहीं।

मालती—बड़े आश्चर्य की बात है।

सुन्दरी—देखा रानी अब तो बड़ी रानी का सारा भेद खुल गया। कहिये यह बालक कहां से भया।

सुरुचि--नहीं सुन्दरी इसके लिये वह दोषी नहीं है।

सुन्दरी—तब फिर कौन दोषी है।

सुरुचि—महाराज स्वयं।

सब—यह कैसे।

सुरुचि-ऐसे कि एक दिन वे आखेट खेलते खेलते अत्रिमुनि के

आश्रम में चले गये। संयोग से उन्हीं की कुटी के पास रानी सुनीति को भी कुटी थी। एक रात हमारे श्रीमान् जो वहीं रह गये थे।

सुन्दरी—यह सब बनावटी बात है।

सुरुचि-नहीं इसके साक्षी मंत्री और तुम्हारे पति दुर्लभजी हैं।

सब—तब तो ठीक होगा।

सुन्दरी—तब फिर आपने क्या किया। बालक को भगा दिया।

सुरुचि—हां महाराज तो रखना चाहते थे। लेकिन मैंने वह झड़ी सुनाई कि वे टस से मस नहीं हुए। मैंने अपने सामने बालक को राज सभा से बाहर किया।

सुन्दरी—अच्छा किया। पैर के कांटे को निकाल देना चाहिये।

सुरुचि-लेकिन उसके चले जाने के बाद मुझे अफसोस हुआ।

सुन्दरी—यह क्यों।

सुरुचि—ऐसे कि उसका सुन्दर मुखड़ा। उसकी कांति। शरीर का संगठन, मुझको उसकी ओर आकर्षित करता था। हाय कहीं मेरा उत्तम भी वैसाही सुन्दर होता तो बड़ा अच्छा होता।

सब—अजी घी का लेडुआ टेढ़ा ही अच्छा।

सुरुचि—जी चाहता है कि उसे फिर बुलाऊं और दोनों को राजगद्दी पर बैठाऊं। दोनों मिल कर राजकाज चलावेंगे; और राजा का भी दिल बहलावेंगे।

सुन्दरी—अच्छी बात है लाकर गद्दी पर क्या अपनी गोद में बैठावो मैं जाती हूं। चलो सखियो चलो।(जाने को तैयार होती है)

सुरुचि—अरे तुम लोग क्यों नाराज होती हो। सुन्दरी, जी छोटा न करो अब तक जैसे काम चलाया था वैसे ही चलो।

सुन्दरी-चलोगी अपने लिये न चलोगी अपने लिये। मुझे क्या, मैं तो लौंड़ी हूं। रानी तो बन नहीं जाऊंगी। दासी ही कहाऊंगी।

सुरुचि—नहीं सुन्दरी तुम जो कहोगी मैं वही करूंगी।

सुन्दरी—रानी अगर आप मेरे कहे अनुसार न चलती तो क्या आप इस पद को पहुँच सकती थीं। आप ही उलटे रानी सुनीति की तरह जंगलों में टक्कर खातीं बड़ी रानी तुम्हें पतों पर नचाती। खूब छकाती। नित्य गालियां सुनाती।

सुरुचि—अच्छा तो बतावो अब क्या करना चाहिये।

सब—बस राजा जी को समझाइये कि शीघ्र ही तुम्हारे राजकुमार को गद्दी पर बैठावें, वा युवराज होने की घोषणा करैं।

सुरुचि—अच्छा मैं ऐसा ही करूंगी। तुम सब मेरी हित चाहने वाली हो। खास कर सुन्दरी का तो मैं बहुत ही आभारी हूँ।

सब—हां रानी जी ठीक है। (गाना।)

चलो चलो सब राजकुंअर उत्तम को आने<br>
उसको हो इस गद्दी का अधिकारी जाने।<br>
उत्तम को युवराज बनावें। खुशियाली तब खूब मनावें।<br>
चलो चलो— —उसको ही इस——

---

## चौथा दृश्य।

स्थान—सुनीति की कुटी, समय—सन्ध्या

(आश्रम में रानी सुनीति बैठी बैठी पुत्र ध्रुव के आने की बाट जो रही हैं। वह कभी उठती और कभी बैठती हैं)

सुनीति—भगवान दीनानाथ! पुत्र ध्रुव को अच्छी तरह रखना सिवाय तुम्हारे उसका रक्षक और कौन है।

नहिं सेना नहिं राज सुख, नहीं सिपाही वीर।
जो रक्षा मेरी करै धीर वीर गम्भीर॥

भगवन! भगवन! मुझ अभागिन को अभी क्या क्या देखना है। आज न जाने क्यों मेरी दाहिनी आंख फड़क रही है। मानो अनर्थ होने की सूचना दे रही है। करो अनर्थ करो, जो चाहे सो करो।

मैं तो हूँ अभागिन अरु पापिन हूँ अबला एक,
सबला तो सौत सुरुचि मौत सम राजत है।
मेरो है रखैया कौन दैया को सहारा एक,
बोझ बीच कर्म मेरो मोसो अति बाजत है।
भगवन हे जंगल बीच, होत बरु मेरो मीच,
सींच कर सुधा से सुत राखो, जनु आवत है॥
गावत है, नाचत है, बजावत है ताल दे दे,
मानो ध्रुव बालक हाय इतही को धावत है॥

आ गया आ गया मेरा बालक आ गया (कुछ ठहर कर) हाय कहां आया नहीं आया। और भी तो लड़के नहीं आये हैं। आने दो वह सब के साथ ही आवेगा। खेलने दो बच्चा है। (फिर बैठती है) क्या करूं धीरज नहीं धरा जाता है। मन रह रह के अकुलाता है। (एक ओर देख कर) अहा! वह लड़के आ रहे हैं। उन्हीं के साथ बालक ध्रुव भी होगा। (देख कर) हां है और वह लपका हुआ इधर ही आ रहा है। आने दो मैं उसे दंड नहीं दूंगी वरन खूब प्यार करूंगी। आ बेटा ध्रुव आ। जल्दी आ।

(ध्रुव का अपने संगी साथियों के साथ आना)

ध्रुव—आ गया मातेश्वरी मैं आ गया।

सुनीति—बेटा अब तक कहां था। तेरे बिना जी घबराता था।

सब—रानी जी हम लोग आज राज नगर में गये थे। वहां बड़ा बड़ा तमाशा देखा, लेकिन एक बात......

सुनीति—लेकिन एक बात क्या? बतावो जल्दी बतावो। क्यों ध्रुव तुम उदास क्यों हो। तू मेरी गोद में क्यों नहीं आता।

ध्रुव—नहीं मातेश्वरी मैं अब किसी की गोद में न बैठूंगा।

सुनीति-क्यों क्या तू अपनी माता की गोद में भी नही बैठेगा।

ध्रुव-नहीं मातेश्वरी मैं अब भगवान की ही गोद में बैठूंगा।

सुनीति—बेटा ऐसी वाणी मुंह से न निकाल। क्या हुआ है तू बताता भी नहीं ( सब विद्यार्थियों से ) क्यों बालकों तुम्हीं लोग बतावो क्या हुआ है। सच्ची सच्ची कह सुनावो।

१ बालक—हम लोग राजा उत्तानपाद की सभा में गये थे। वहां हमारे मित्र ध्रुव को एक औरत ने झटका देकर गिरा दिया। राजा का गोद में बैठे हुए ध्रुव को उतार दिया।

सुनीति—हाय बेटा तू वहां गया ही क्यों।

ध्रुव-क्या करुं मातेश्वरी मेरा अदृश्य ले गया।(रोने का भाव)

सुनीति—क्या पिता ने तिरस्कार कर तुझे निकाल दिया।

ध्रुव—नहीं मातेश्वरी उन्होंने तो बड़े प्यार से मुझे अपनी गोद में बैठाया था। लेकिन एक औरत ने मुझे झटका देकर उनकी गोद से उतार दिया। मुझे कहा— ( रोने लगता है )

सुनीति—बेटा तू रोता क्यों है।

ध्रुव—मातेश्वरी उसने मुझे कहा कि तू जंगली है क्योंकि तेरी माता जंगल में निवास करती है। तू अभागा है क्योंकि तेरी माता अभागिन है, तूने एक अभागिन के गर्भ से जन्म लिया है।

सुनीति—बेटा उसने सत्य कहा है। मैं सचमुच ही अभागिन हूँ। इसमें शोक करने की कोई बात नहीं है।

ध्रुव—यह तो हुआ ही। राजा ने भी मुझे ऋषि कुमार कहके सम्बोधन किया। रानी के बिगड़ने पर उन्होंने उन्हें भी कुछ न कहा बरन वे चुप रहे।

सुनीति-बेटा उनकी चुप रहने की ही आदत है। बुरा न मानना।

ध्रुव-खैर, मातेश्वरी एक बात मेरे दिल में जम गयी है अगर।

सुनीति—हां अगर क्या......

ध्रुव-रानी ने बिगड़ कर कहा था कि जंगली छोकरे क्या तू इस गोद के लायक है जिसका अधिकारी राजकुमार उत्तम है। यदि तू इस गोद या राजसिंहासन पर बैठना चाहता है तो परमात्मा की आराधना कर, फिर से मेरे गर्भ में जन्म धारण कर तब कहीं इस पद को पा सकता है। माता माता मैं उसके गर्भ में न जाकर भी उससे बढ़ कर किसी और सिंहासन पर बैठूंगा।

सुनीति—हां बेटा तू परमात्मा का ध्यान किया कर। उसके नाम का महात्म बहुत बड़ा है। तूने अच्छा किया जो अपने बड़ों से सवाल जवाब नहीं किया।

ध्रुव—तो माता भगवान जी कहां मिलेंगे मैं उन्हें कैसे पाऊंगा

सुनीति—बेटा वे सब जगह हैं। उन्हें लोग सर्व व्यापक कहते हैं। तू धीरज धर। यहीं परमात्मा का भजन किया कर।

ध्रुव—अच्छा फिर मैं क्या कह कर भगवान को पुकारुंगा।

सुनीति—यही कि भक्त वत्सल भगवान आवो। बेटा यह बड़ा ही अच्छा मंत्र है। तू इसे किसी निर्जन स्थान में जपा कर।

ध्रुव—तो मातेश्वरी मैं यहाँ न रहूँगा। कहीं घोर जंगल में जाकर किसी निर्जन स्थान में बैठ जाऊंगा और वहीं परमात्मा को बुलाऊंगा कि भक्त वत्सल भगवान आवो। भक्त वत्सल भगवान आवो।

सुनीति—नहीं बेटा तू यहीं रह कर भगवान का भजन कर।

ध्रुव—नहीं माता मैं यहां आश्रम में न रहूँगा। यहां विघ्न बाधा पड़ने का डर है। सब के सामने भगवान न आवेंगे। अकेले पाकर वे मुझे अपनावेंगे। पिता जी ने अपनी गोद में नहीं बैठाया

तो क्या वे तो अपनी गोद में बैठावेंगे। मुझे मेरे भगवान ! खिलावेंगे, पिलावेंगे, सो जाऊंगा तो उठावेंगे, जगावेंगे। मेरे भगवान जी सुनो-

मैं हूँ बालक, तुम पिता के भी पिता हो,
जगत पिता के नाम हाथ को धरोहिगे।
मैं हूँ अति दीन हीन, तुम दीनबंधु दीनानाथ,
दीनन को देख दुःखी दुःख को हरोहिगे।
काटोगे क्लेश, कष्ट अनेक हमारो प्रभु,
मेरी अनी पर, कनी अमृत करोहिगे।
गोद में बिठावोगे, मन मोद से हे जगदाधार,
भक्त जो मरे, तो भक्त हेतु तुम मरोहिगे।

सुनीति—बेटा अगर तेरा ऐसा दृढ़ विश्वास है तो अवश्य जा; और जाकर भक्त वत्सल भगवान से यही विनती कर कि हे भक्त वत्सल भगवान आवो।

ध्रुव—हां मातेश्वरी मैं यही कह कर पुकारुंगा, कि भक्त वत्सल भगवान आवो। और वे जरूर आवेंगे। और जब तक नहीं आवेंगे मैं उन्हें बुलाउंगा, तब तक बुलाऊंगा जब तक न पाऊंगा।

सुनीति—अच्छा बेटा बुलाना और जरूर बुलाना। बुलाकर मुझे भी दिखाना।

ध्रव—हां मातेश्वरी मैं बिना बुलाये लौटने वाला नहीं हूँ।

जब तक नहिं भगवान मुझे निज दर्शन देंगे।
जब तक नहिं भगवान मुझे गोदी में लेंगे॥
जब तक नहिं भगवान गात निज पर्सन देंगे।
तब तक नहिं हे मातु तुम्हें भी हम देखेंगे॥

सुनीति—जावो बेटा जावो खुशी से जावो। किसी प्रकार भगवान को पावो। पाकर तब घर आवो।

ध्रुव—मातेश्वरी प्रनाम और फिर प्रनाम । बारम्बार प्रनाम मातेश्वरी प्रनाम ।( गया )

सुनीति—गया बालक ध्रुव गया । अभागिन सुनीति क्या तुझ से भी बढ़ कर और कोई अभागिन स्त्री होगी । पतिदेव छूटे, पुत्र भी छूट चला, भगवान तू फिर भी सुरुचि का करे भला । (गिरना)

सब विद्यार्थी—मातेश्वरी यह क्या । चलो भाई इसे उठाकर कुटी में ले चलें । ( आश्चर्य से सब रानी सुनीति को उठाकर ले गये )

---

## पाचवां दृश्य ।

स्थान-दुर्लभ जी का कमरा समय-सन्ध्या ।

( दुर्लभदास की पहिली स्त्री मुन्दरी आती है )

मुन्दरी—क्या करूं मुझ से तो कुछ कहा नहीं जाता है । सुन्दरी तो रानी साहिबा बनी हुई इधर उधर घूमा करती है । मैं लौंडी की तरह घर का झाड़ू बहारू किया करती हूँ । मैं ही चौका करूं मैं ही बिस्तर बिछाऊं । मै ही रोटी बनाऊं मै ही सब कुछ करूं । पर अब मैं भी कड़ी हो जाती हूं । ( एक ओर देख कर ) यहीं तो आ रही है । मैं भी सारे सामान को इसी तरह पड़े रहने देती हूं ।

( सुन्दरी का प्रवेश )

सुन्दरी—( घर देखकर ) हैं आज घर में झाड़ू बहारू नहीं पड़ा है । घर बड़ा गंदा मालूम हो रहा है । जरा बड़ी बहिन मुन्दरी से तो पूछूं । ( मुन्दरी से ) क्यों बहिन मुन्दरी आज घर बड़ा गन्दा मालूम पड़ रहा है । क्या कारण है । अभी तक झाड़ू क्यों नहीं लगा है ।

सुन्दरी—आप उसी झाड़ू से पूछिये कि उसने अब तक क्यों नहीं अपना सिर पैर हिलाया।

सुन्दरी-सिर पैर तुम हिलावोगी वा वह। वह तो बे जान है।

सुन्दरी—एक वह बेजान है और एक तुम बे जान हो।

सुन्दरी—देखो मुझसे त्योरी न बदला करो। मुझसे तुम्हारी कुछ नहीं चलेगी। जाकर उन्हीं के सामने नखरा दिखाया करो।

सुन्दरी—लेकिन आज जरा तुम्हारे सामने भी दिखाऊंगी।

सुन्दरी— लो हमारा रहना तुम्हें जहर लगता है तो मैं चली जाती हूं। जब देखो तो मुझ पर शान बघारा करती हो।

सुन्दरी—शान तुम बघारोगी या मैं। नई के सामने पुरानी को कौन पूछता है।

सुन्दरी—भला इसमें नई पुरानी का क्या झगड़ा है।

सुन्दरी—अरे क्यों नहीं। जब से आई हो तब से कितनी बार तुमने घर में झाड़ू लगाया है। क्या मैं ही घर में रहती हूं तुम नहीं रहती हो।

सुन्दरा—घर में रहने से क्या होता है।

सुन्दरी—नहीं होता है तो नहीं सही। क्या मैं घर की सफाई की जिम्मेदार हूँ। मैं भी घर में झाड़ू बहारू न लगाया करूंगी।

सुन्दरी—न लगावो मुझे क्या, मैं भी घर में न आया करूंगी।

सुन्दरी—न आवो इसमें मेरा क्या बिगड़ा जाता है।

सुन्दरी—देखो मुझसे सवाल जवाब न करना नहीं तो मैं इसी झाड़ू से खबर लिया करूंगी। मैं किसी को नहीं डरूंगी।

सुन्दरी—तो मैं भी (लकड़ी उठाकर) इस लकड़ी से खबर लिया करूंगी। मैं भी किसी से डरने वाली नहीं हूँ।

(दोनों का परस्पर मारने का भाव करना सुन्दरी झाड़ू तानती है, सुन्दरी लकड़ी उठाती है। इसी बीच में दुर्लभ जी आते हैं)

दुर्लभ—हैं हैं यह क्या कर रही हो। अरे बाबा भूखी सिया
नों की तरह तुम लोग परस्पर लड़ती हो झगड़ती हो। बात
छ नहीं कहती हो।

मुन्दरी—इन्हीं से पूछो। जो तुम्हारी दुलारी हैं। प्यारी हैं।

सुन्दरी—तुम्हीं क्यों नहीं बताती हो।

मुन्दरी—मैं ही बताती हूं। तुम्हारी सारी करनी जताती हूं।

दुर्लभ—हां हां क्या हुआ।

सुन्दरी—कुछ नहीं प्राणनाथ! यह जब हुआ तो मुझ पर
ान बघारा करती है। कहती है घर में नित्य झाड़ू लगाया करो।

मुन्दरी—नहीं नाथ मैं शान नहीं बघारा करती। मैंने इससे
कहा तुम कभी भी घर का काम नहीं करती हो। मैं ही रोज
झाड़ू न लगाऊंगी।

सुन्दरी—नहीं नाथ नहीं यह झूठ बोलती है। मैं रोज झाड़ू
लगाती हूं यही नहीं लगाती है। यह खाली बातें बनाती है।

मुन्दरी—झूठ सरासर झूठ। तूने कब झाड़ू लगाया है।

सुन्दरी—तूने कब लगाया है। (दोनों के बीच में दुर्लभ जी आ जाते
हैं। एक की लकड़ी दूसरी का झाड़ू उनके सिर पर पड़ने लगता है।)

दुर्लभ—अरे बाबा तुम सब आपस में लड़ती हो पर झाड़ू
और लकड़ी मुझको क्यों जड़ती हो।

सुन्दरी—मोटकी, भैंसासुर की नानी है।

मुन्दरी—तू महिषासुरकी परनानी है। जा कर रानी सुरुचि
के यहां नाज नखरा दिखाना मेरे सामने आंख न नचाना।

सुन्दरी—(दुर्लभ से) देखो यह सब तुम कराते हो। तुम अगर
इस मोटकी महाकाया को भी बनवास दो तो अच्छा हो।

मुन्दरी—क्या मुझको भी रानी सुनीति समझ लिया है। मैं
वन में नहीं जाने वाली हूं। तेरे लिये मैं महाकाली हूं।

सुन्दरी—मैं तुझे भेज कर तभी छोड़ूंगी ।

सुन्दरी—तू क्या भेजेगी ।

सुन्दरी—देखो भेजती हूं या नहीं ।

सुन्दरी—हां चुगली चपाड़ी करके रानी सुनीति को बनवास दिला दिया, अब मेरे पर भी आंख गड़ी है ।

दुर्लभ—लो बाबा तुम लोग लड़ती हो तो मैं ही यहां से चला जाता हूँ । देखो यारो दो जोड़ू वालों की कैसी दुर्दशा होती है।

सुन्दरी—क्यों नानी भेजोगी नहीं ।

सुन्दरी—क्यों नानी जावोगी नहीं ।

दुर्लभ—हां हां (गाना)

दुर्लभ—लड़ो भिड़ो तुम दोनों चाची मौसी हो करके
गुथ्थम गुथ्था हो दोनों में झोंटा धर धर के।

सुन्दरी—मै मारूंगी अब तुझको ।

सुन्दरी—तू क्या मारेगी मुझको ।

दुर्लभ—खूब भई भाई खूब भई । दोनों की अच्छी गत्त भई।
देखो यारो है झकमारी जोड़ू ऐसी लाये ।
कैसी लड़ती भिड़ती हैंगी, बीच में दुर्लभ आये ।

---

## छठवां दृश्य ।

---

स्थान—अत्रिमुनि का आश्रम समय—दोपहर

( चार पांच ऋषि कन्याएं बैठी बैठी कुछ काम कर रही हैं । )

१ कन्या—देखो सखी आजकल आश्रम में कुछ उदासी सी

छाई रहती है मानों वह भी हम लोगों से कुछ कहती है।

२ कन्या--क्या कहती है सखी।

१ कन्या—कहती है। बालक ध्रुव कहां गया। जब से बालक ध्रुव बन में चला गया तब से उसके साथी भी उदास रहते हैं। न कुछ खाते हैं और न पीते हैं!

३ कन्या—सखी जिसकी जिससे लगन रहती है वह उसी ओर जाता है। ध्रुव की पूर्व जन्म के तपस्या ही उसे तपस्या के लिये खींच ले गयी है।

४ कन्या—सखी तुम्हारा कहना ठीक है। लेकिन अभी पांच व छः वर्ष का बालक तपस्या की बात क्या जाने।

१ कन्या—पूर्व जन्म की तपस्या के कारण एक बालक भी बहुत कुछ बातें जान सकता है। अत्रिमुनि ने जो कहा था कि रानी सुनीति के गर्भ से एक परम भक्त पुत्र पैदा होगा सोही हुआ।

[ ऋषि कुमारों का सुनीति को उठाये हुए आना ]

सबकन्याएं—हैं यह क्या हुआ। ऋषि कुमारों रानी को कैसे मूर्छा आई। यह कैसी विपता छाई।

१ कुमार—इसका पुत्र ध्रुव, तपस्या के लिये घोर जंगल में चला गया। इसी लिये रानी जी को मूर्छा आ गयी है।

२ कुमार-—थोड़ा जल लाओ। जल देने से मूर्छा भाग जायगी।

[ कन्याएं पात्र में जल लाती हैं। ऋषि कुमार मुंह पर छींटा देते हैं]

सुनीति—( जागकर ) कहां है बालक ध्रुव, मैं उसे अपने पास रखूंगी। नहीं, जाय भले ही जाय। वह अच्छे काम के लिये जा रहा है। करे परमात्मा की उपासना। वह इसी में रहेगा बना।

सब—रानी जी आपको क्या हो गया है।

सुनीति—जो मेरे कर्म में है वही होगा।

सब—कर्म में क्या है। तुमने जाने ही क्यों दिया। भला अभी छोटा बच्चा वन में जाने लायक है।

सुनीति—अब तो वह चला गया। चले जाने दो। मैंने परमात्मा के नाम पर उसको जाने दिया है। वही उसे अच्छा रखेगा।

३ कुमार—माता माता तुम शोक न करो जो भगवान को भजता है, उसका सब दुख हटता है। भगवान ही उसकी रक्षा करता है।

सुनीति—हां बेटा हां। मेरा बेटा अपना जन्म सार्थक करने के लिये गया है। यह मेरे लिये भी कम सौभाग्य की बात नहीं है।

४ कन्या—सौभाग्य की बात तो ठीक है, लेकिन तुम्हें ध्रुव को लेकर महाराज के पास पहुँचना चाहता था। बनबासिनी होकर पति और सौत को सुख पहुँचाया पर ध्रुव को जंगल में भेजकर क्या सुख पाया।

सुनीति—क्या करूं बेटी भाग्य में यही बदा था कि पुत्र जंगल का निवासी हो, अन्त में बनवासी हो।

२ कन्या—नहीं रानी जी यह तुम्हारी गलती है। यदि ध्रुव को लेकर आप महाराज के पास पहुँचती तो यह कभी सम्भव नहीं था कि वे एक को राज्य का अधिकारी बनाते दूसरे को भिक्षुक रहने की आज्ञा सुनाते।

सुनीति—बहिन तुम्हारा कहना ठीक है। महाराज की ओर से ध्रुव के प्रति कोई ऐसा व्यवहार नहीं हुआ है जो निंदा के योग्य हो। लेकिन सौत सुरुचि का ही व्यवहार खराब था। वह मेरे बच्चे पर बाघिन की तरह टूटी थी। हाय हाय परमेश्वर अब भी उसका भला करे।

१ कन्या—दीदी जो कुछ भी हो, राजा उत्तानपाद का व्यवहार अवश्य निंदनीय है। भला स्त्री के हाथ इस प्रकार बिक जाना चाहिये। मैं तो समझती हूं, कि अगर महारानी सुरुचि रात को

दिन और दिन को रात कहती होंगी तो महाराज भी हां में हां मिलाते होंगे ।

सुनीति—हां बात तो ऐसी ही है। लेकिन फिर भी राजा उदार हृदय के हैं।

४ कन्या—तुम भले हो उन्हें उदार हृदय की बतावो लेकिन सारा संसार तो उन्हें भला बुरा कहता होगा।

सुनीति--नहीं। पूज्य पति ने जो कुछ किया अच्छा ही किया।

१कन्या—पर ध्रुव ने क्या किया कहिये उसने भी अच्छाही किया।

सुनीति—हां हां उसने भी अच्छा ही किया। परमात्मा के नाम पर मैंने उसे भी न्योछावर कर दिया है। वह जिसके नाम पर गया है वही उसकी रक्षा करेंगे।

२ कन्या--तो साथ में तुम्हें भी जाना था। कारण कि ध्रुव अभी बहुत ही छोटा है।

सुनीति—मेरे साथ जाने से उसे कष्ट होता। भगवतभक्ति में उसका मन न लगता।

सब—सती सुनीति तुम धन्य हो। माई अनुसूइया ने सत्य ही कहा था कि तुम कोई देवी हो। वही बात सामने आ रही है। भारत की सती स्त्रियों में तुम्हारा नाम भी अजर अमर रहेगा।

सुनीति--बेटी यह सब व्यर्थ की बड़ाई है। भला मुझ से कौन सा ऐसा काम हुआ है जिसके योग्य मैं हूं। मैं वही कर रही हूं जो मेरा धर्म है। और जो प्रत्येक नारी का कर्म्म है।

१ कन्या—संसार में कर्तव्य पालन ही तो मुख्य धर्म है। जो कर्तव्य हीन हो कर संसार में बिचरता है वह नर नहीं वरन पशु के समान है वा श्वान है।

सुनीति-यह जो कुछ भी हो रहा है सब गुरुदेव अत्रि मुनि की

कृपा है। अन्यथा मेरी पसुलियां और ठठरियां बन के हिंसक जीवों की मांद में पड़ी हुई रहती।

२ कन्या—यह सब भी उस परमात्मा की कोर कृपा समझो। नहीं तो तुम्हारी ऐसी बुद्धि ही न होती।

सुनीति—माता अनुसूइया की कृपा से ही मेरी बुद्धि ऐसी है। और उन्हीं के समझाने से मैं अब तक जीती जागती हूँ अन्यथा मैं पति शोक में कभी ही मर गयी होती। तुम लोगों ने भी मेरी कम सहायता नहीं की।

३ कन्या—हां देखो न बहिन गुरुदेव भी तुम्हें आर्य महिलावों का सिर मौर समझते हैं। इसी लिये वे बीचबीच में सुन्दर सुन्दर उपदेश दिया करते हैं। अच्छा चलो। यहां बहुत समय हो गया, कुटि के भीतर चलो। गुरुदेव भी आते होंगे।

सुनीति—चलो चलें। ( सब गयीं )

---

## सातवां दृश्य।

स्थान—घोर कानन जलप्रपात समय—प्रात:काल

( बालक ध्रुव एक चट्टान पर बैठा बैठा परमात्मा को याद कर रहा है। हिंसक जन्तु चारों ओर फिर रहे हैं। एक ओर झरने से जल गिर रहा है]

ध्रुव—( गाना )

भगत की टेर सुनो भगवान ॥ टेर ॥
और न कोई जगत में मेरो तुमसों ही पहिचान ॥
याद करत बहु दिन हैं बीते नहिं तन में जनु प्रान।
बनो सहायक असहाइन कर होइहैं पुण्यमहान ॥

भगवान दीना नाथ कहां हो। भक्त वत्सल भगवान शीघ्र ही आवो। आवो प्रभु आवो, मैं बिना आये जाने वाला नहीं हूँ। कहो कब आवोगे। न आवोगे न सही। मैं यहीं मर जाऊंगा पर बिना तुम्हारा दर्शन किये यहां से न जाऊंगा। भक्त वत्सल भगवान आवो। (कुछ ठहर कर) नहीं आते हो न आवो। मुझे तो पूजन विधि भी नहीं मालूम, पर सुना है भगवान भाव के भूखे हैं।

होगी बड़ाई आपकी हे नाथ दर्शन दीजिये।
होगी बड़ाई आपकी जो प्रार्थना सुन लीजिये॥
माता पिता ने छोड़ दी तो आपभी छोड़ेंगे क्या।
संसार ने मुख मोड़ली, तो आप मुख मोड़ेंगे क्या॥
आप दीनानाथ हैं, हम दीन से भी दीन हैं।
आप सागर हैं कृपा के हम कृपा से हीन हैं।

मैं ने सुना है कि भक्तों की टेर पर भगवान आते हैं तो फिर आप क्यों नहीं आते प्रभो। हां जाना मुझे निरा बालक जान कर ही आप मेरे पास नहीं आते हैं।

नारद-(आकर) अहा कैसी कठिन तपस्या में बालक व्यस्त है।

है नहीं सुधि भूख की अरु प्यास की इस बाल को।
इस समय यह डर नहिं सकता है लखि के काल को॥

ध्रुव—हे पतित पावन पद्मपलाश लोचन प्रभो, मुझे बालक जान कर ही आपके हृदय में अभी तक दया नहीं आई है। न आवें। यह आप का घोर अन्याय है कि आप बड़ों की प्रार्थना पर तो आवें और मेरी पुकार पर जरा भी ध्यान न लावें। मेरी दुःखिनो माता मर जायगी इसका भी पाप आप को ही पड़ेगा। आवो नाथ आवो, भक्तवत्सल भगवान आवो, देर न लगावो। हाय तुम संकट हारी होकर भी संकट नहीं हरते। क्यों जरा भी

बालक पर दया नहीं करते । न करो नाथ न करो । मेरा कंठ भी सूख चला । हाय अब मैं कैसे भगवान को पुकारूंगा । ( एक ओर से पत्तों के हरहराने की आवाज आई ) हां हां आ रहे हैं । मेरे भगवान आ रहे हैं । (भली भांति देखकर ) अरे वे तो जंगली जानवर हैं जो इधर नहीं आये । देखो मैं कैसा अभागा हूँ जो जंगली जानवर तक मेरे पास नहीं आते । फिर भगवान आवेंगे किस नाते।

( एक ओर से नारद भगवान का प्रवेश )

नारद—अब बहुत हुआ । मुझसे भी विचारे बालक का दुख नहीं देखा जाता । भगवान के पाने के लिये कितनी भारी तपस्या करनी पड़ती है । लेकिन उसकी महिमा भी अपार है । देखो पांच वर्ष का बालक इतने गहन कानन में आया है । इसके मन में जरा भी भय नहीं समाया है । चलूं अब हरिगुन गाते हुए उसके सामने प्रकट होऊं । (गाना)

हरि बिन कोई काम न आवे ॥ टेक ॥
दुनियां की सब सम्पति मन में नाना रंग खिलावे ।
आवे जावे, मिलने, न मिलने पर भी पछतावे ॥

ध्रुव-भक्तवत्सल भगवान क्या सचमुच नहीं आवोगे ( नारद को देख कर ) आ गये आ गये ! मेरे भक्त वत्सल नाथ आ गये ।

नारद—भक्त मैं तुम्हारा भक्त वत्सल भगवान नहीं हूँ ।

ध्रुव-फिर तुम कौन हो ।

नारद—मुझे लोग नारद कहते हैं तुम यहां घोर कानन में क्यों कर आये ।

ध्रुव—भगवन ! मैं राजा उत्तानपाद का पुत्र हूँ । पिता ने विमाता के कहने से मेरी माता को बनवास दिया । अस्तु मैं यहां

भक्तवत्सल भगवान की खोज में आया हूं। जब तक वह मुझे नहीं मिलेंगे मैं अपनी माता के पास नहीं जाऊंगा।

नारद—भक्त तुम अभी निपट नादान बालक हो। बालकों से तपस्या नहीं सफरेगी। तुम अपना संकल्प छोड़ कर घर लौट जावो। मैं तुम्हारे पिता से कह कर तुम्हें राजनगर में बुलवा लूंगा।

ध्रुव—भगवन आप मुझे भक्त वत्सल भगवान से विमुख होने की सम्मति न दीजिये। वरन दर्शन दिलाने का प्रयत्न कीजिये।

नारद-बेटा जिस भगवान को बड़े २ ऋषि मुनि कठोर तपस्या कर भी नहीं पा सकते उन्हें भला तुम कैसे प्राप्त कर सकोगे। तुम अबोध बालक हो घर लौट जावो।

ध्रुव—भगवन वे करूणा के सागर हैं। मेरी टेर भी जरूर सुनेंगे। जब सबकी सुनते हैं तो क्या मेरी नहीं सुनेंगे। सुनेंगे और जरूर सुनेंगे। मेरा ऐसा ही विश्वास है। उनके पाने की आस है।

वे तो हैं दीन बन्धु दीनानाथ दीनन के,
दीना नाथ नाम है तो दीन दुःख हरेहिंगे।
मैं हूं असहाय वे सहायक हैं निर्बल के,
निर्बल से निर्बल जान हाथ को धरेहिंगे।
काटेंगे संकट क्योंकि संकट हारी नाम ही है,
संतन के संकट सन्ताप को दुरेहिंगे।
आवेंगे नाथ भक्त वत्सल की पुकार पर,
मेरी पुकार पर कुछ तो करेहिंगे।

नारद—( स्वगत ] यह बालक विचलित होनेवाला नहीं है अस्तु इसे दीक्षित कर भगवान का दर्शन कराना ही चाहिये। ( प्रकाश ) अच्छा बेटा सामने से स्नान कर आवो।

ध्रुव—हां मैं जानता हूँ आप भाग जायेंगे। नहीं नाथ मैं नहीं जाऊंगा। मुझे तो तुम्हीं भक्त वत्सल भगवान मालूम पड़ते हो।

नारद—(स्वगत) अहा कैसी भक्ति है। बालक ध्रुव तुझे धन्य है। (प्रकाश) अच्छा बेटा में नहीं जाऊंगा तूझे मैं मंत्र देता हूँ।

ध्रुब—उपकार प्रभो महा उपकार जल्दी बताइये,भगवन! भक्त वत्सल भगवान का शीघ्र ही दर्शन कराइये।

नारद—अच्छा तुम कैसे भगवान को याद करते हो।

ध्रव—भगवन ! माता ने तो केवल यही बताया था कि भक्त वत्सल भगवान आवो। भक्त वत्सल भगवान आवो।

नारद—अच्छा बेटा जैसे मैं कहता हूँ वैसे कहो।

ध्रुव—हां भगवन बताइये।

नारद—कहो भक्त वत्सलभगवान आवो। मुझ पर दया करो

ध्रुव—अच्छा भगवन मै ऐसे ही कहता हूं। भक्त बत्सल भगवान आवो मुझ पर दया करो।

नार—और कहो भक्तवत्सल भगवान आवो मेरे पिता पर दया करो।

ध्रुव—अच्छा भक्तवत्सल भगवान आवो मेरे पितापर दया करो।

नारद—और कहो भक्तवत्सल भगवान आवो मेरी विमाता पर दया करो।

ध्रुव—अच्छा भगवन ! वक्तवत्सल भगवान आवो मेरी बिमाता पर दया करो। और क्या माता पर भगवान की दया न कराइयेगा।

नारद—बेटा उन पर तो भगवान की दया पहिले ही से है। अच्छा मैं अब जाता हूँ। भगवान को अभी लाता हूं।

ध्रुब—अच्छा प्रभो जाइये पर भगवान को जल्दी लाइये। यदि वे न आवेंगे तो मैं इसी प्रकार बैठा बैठा यहीं हवा पानी में मिल जाऊंगा। पर भगवान को न भुलाऊंगा।

नारद—नहीं बेटा वे जल्दी आवेंगे।

ध्रुव—( बैठ कर ) भक्त वत्सल भगवान आवो मेरे ऊपर दया करो। (ध्रुव बैठता है और बारम्बार भगवान को पुकारता है )

## आठवां दृश्य

स्थान--राजमहल, समय--दोपहर ।

( राजा उत्तानपाद अपने पलंग पर लेटे लेटे कुछ सोच रहे हैं रानी सुरुचि भी थोड़ी देर में आती हैं ।)

उत्तानपाद-देखो समय की गति। बलिहारी है उस भाग्य को जो कभी सुखी होता है और कभी दुःखी । न सहने योग्य भी दुख को सहन कर जीवन धारण किये रहता है । (कुछ सोच कर) क्या हुआ जो रानी सुनीति को निकाल दिया । नहीं, मैंने उसे निकाल कर बाहर किया, बुरा किया । अनर्थ किया । अधर्म किया ।

( रानी सुरुचि का प्रवेश )

सुरुचि—मैंने क्या किया । जो कुछ किया बड़ा बुरा किया । जैसे अपना पुत्र तैसे दूसरे का । मैंने उसे व्यर्थ ही झिड़क कर गोद से उतार दिया । हाय उसका रोता हुआ चेहरा अभी तक मेरे हृदय को लोट पोट कर रहा है ।

उत्तानपाद--सुरुचि सुरुचि तुम्हारे स्वभाव में ऐसा परिवर्तन

सुरुचि—महाराज मैंने पाप किया और भारी पाप किया है । मैंने व्यर्थ ही सती सुनीति को राज्य महल से बाहर किया । यश छोड़ अपयश लिया । पुण्य छोड़ पाप किया ।

उत्तानपाद—जो कुछ किया सो अच्छाही किया । अब किये पर पछताना व्यर्थ है ।

सुरुचि—हाय ध्रुव जैसे कोमल कलेबर बालक को मैंने व्यर्थ ही बनवास दिया । हाय वह कहां होगा ।

उत्तानपाद—कहां होगा । अपनी माता के पास होगा ।

सुरुचि—हो या न हो पर मेरे पापों का दृश्य मेरी आखों के सामने नाच रहा है।

उत्तानपाद—पुरानी बातें कह कर व्यर्थ की चिन्ता न बढ़ावो।

सुरुचि—आप चिन्ता की बात कहते हैं। आज कल मुझे रात दिन प्यारी सती सुनीति और बालक ध्रुव की ही चिन्ता लगी रहती है। आप उन्हें शीघ्र यहां बुलावें।

उत्तानपाद—क्यों अब ऐसा परिवर्तन क्यों। रानी छोटी रानी अब अपनी करनी पर क्यों पश्चाताप कर रही हो।

सुरुचि—राजन मैं अपनी करनी पर पश्चात्ताप नहीं कर रही हूँ वरन आप के लिये चिन्तित हूँ। यह सब पाप आपको ही पड़ेगा।

उत्तानपाद—यह क्यों।

सुरुचि—ऐसे कि यदि आपने मुझे इस कार्य की ओर जाने से रोका होता तो आज यह दृश्य मेरे सामने न आता।

उत्तानपाद—पर उस समय तो आप आपे से बाहर हो रही थीं। बिगड़ कर नैहर भागी जा रही थीं। मैंने जो कुछ किया सब तुम्हारे वास्ते किया। रानी तुम्हारे वास्ते किया।

सुरुचि—पर स्त्रियों का पथ दर्शक उनका स्वामी है। मुझको सत्मार्ग पर लाना आपका कार्य था। आप मुझ ऐसी पापिनी चांडालिनी औरत के तिरिया चरित्र में आ गये। काम के बशीभूत हो एक अबला के साथ प्रेम किया। गुण छोड़ अवगुण लिया।

उत्तानपाद—रानी तुम किस प्रकार बातें कर रही हो। मैंने जो कुछ किया तुम्हारे लिये किया। अब तुम मुझी को दोषी और पाप का भागी बताती हो। आप साफ निकल जाती हो।

सुरुचि—हां राजन हां आपको मेरे पापों का फल भी भोगना पड़ेगा। मैं ठीक रास्ते पर नहीं थी तो आपको ठीक रास्ते पर लाना

था। पुरुष को चाहिये कि औरत को अच्छे अच्छे उपदेशों और उदाहरणों से सत्मार्ग पर लावे। बुरा से भला बनावे।

उत्तानपाद-रानी मैंने तुम्हें उस समय कितना समझाया। रानी सुनीति ने भी तुम्हारे पैरों को पकड़ा लेकिन तुम्हारे हृदय में जरा भी दया न आई। आकांक्षा ने बनवास देकर ही चैन पाई।

सुरुचि-आपने उस समय मुझे जबरन रोका होता। पर आपने वैसा नहीं किया। वरन अपने को एक औरत के हाथ में बेच दिया।

उत्तानपाद—मैं करता ही क्या।

सुरुचि—आपको उसे भी रनिवास में रखना था। दो चार दिन नाक भौं सिकोड़कर मैं चुप हो जाती। (नारद जी का प्रवेश)

नारद—तुम लोग क्यों व्यर्थ का परस्पर विवाद बढ़ा रहे हो। यह तो घर में हुआ ही करता है।

उत्तानपाद—भगवन आप बड़े अवसर पर आये। हम लोगों का झगड़ा निपटाइये। कौन दोषी है इसे बताइये।

नारद—राजन सुनो तुम दोनों सम भाग से दोषो हो। लेकिन तुम्हें तिरिया चरित्र के फेर में नहीं आना था। जिस प्रकार तुम प्रजा का शासन करते हो उसी प्रकार रानी सुनीति के पक्ष में हो कर उसे भी अपने महल में पड़े रहने देते। वह सती साध्वी तुम्हारा क्या बिगाड़ती। खैर—

सुरुचि—यही तो मैं भी कह रही थी भगवन कि मेरे कथन पर आपको ध्यान नहीं देना था। बड़ी रानी को रखना था।

नारद—सुरुचि! छोटी रानी तुम भी दोष की भागिनी हो। पर तुम्हारा भी दोष क्या। स्त्री जाति ही परस्पर ईर्षा द्वेषिनी है। संसार की प्रत्येक नारी अपने को सबसे अधिक सुन्दर समझती है वह अपने से बढ़कर किसी को नहीं देखना चाहती।

पर यह समझना उसकी भूल है। जो अभिमान करता है वह गिरता है। जो हलका होता है वही आकाश की ओर उठता है।

उत्तानपाद—महाराज हम लोगों का झगड़ा फिर कैसे निपटे।

नारद— पापी का हृदय पश्चाताप और दोषी का हृदय क्षमा याचना से शुद्ध होता है। अस्तु हम सब को रानी सुनीति के पास क्षमा याचना के लिये चलना चाहिये। उस सती को यहां राजमहल में लाकर रखना चाहिये।

सुरुचि—भगवन यही मैं भी चाहती हूँ। मैंने अपनी बहिन सुनीति के प्रति बड़ा अपराध किया है।

नारद—रानी अब बीति ताहि बिसार दे आगे की सुधि ले। चलो हम सब रानी सुनीति के आश्रम में चलकर उसे यहां ले आवें

उत्तान-हां भगवन चलिये। (सब लोग नारदजी के साथ जाते हैं)

---

## नवां दृश्य।

स्थान—अत्रिमुनि का आश्रम समय-संध्या।

(रानी सुनीति अपने पुत्र ध्रुव के लिये व्याकुल हो घूम रही है)

सुनीति-हाय मेरे हृदय का अपूर्व टुकड़ा। मेरे नयनों का तारा ध्रुव कहां है। बेटा तू कहां होगा। कैसे होगा, क्या खाता होगा। तेरे बिना अब मुझसे नहीं रहा जाता है। बेटा यदि मैं जानती कि तुम इस प्रकार कठोर तपस्या में लग जावोगे तो मैं कभी भी तुम्हें वन में न जाने देती। आज कितने ही दिन हो गये पर अभी तक तू न लौटा। न लौटने का कारण मैं जानती हूँ। भगवान ने

दर्शन न दिया होगा। न दें। सच है यदि भगवान हमारे पक्ष में होते तो आज यह दिन ही क्यों देखने में आता। आज मैं भी सुरुचि की तरह रनिवास में राजसुख भोगती होती। (अत्रिमुनि का प्रवेश)

अत्रि—बेटी तू क्यों इतनी अधीर हो रही है। एक क्षत्रानी की बेटी होकर अधीर होती है। रह रहके धीरज खोती है।

सुनीति—भगवन, गुरुदेव मैं बहुत धीरज धारण कर चुकी। अब धीरज नहीं धरा जाता है। पुत्र के बिना जी अकुलाता है। क्या करूं स्त्री जाति से जितना धीरज हो सका उतना मैंने धीरज धारण किया अब तो सहन करना हमारी शक्ति के बाहर है।

अत्रि—बेटी धीरज से सब कुछ प्राप्त होता है। यदि ऋषि मुनियों में धीरज न होता तो वे परमात्मा तक नहीं पहुंच सकते थे। तेरा बेटा ध्रुव धैर्यवान है। वह अपने धैर्य से ही भगवान को प्राप्त करेगा। स्वयं तरेगा और औरों को भी तारेगा।

सुनीति—गुरुदेव आपके लाख समझाने पर भी अब मन धीरज नहीं धरता। क्या करूं मैं अबला हूं। मेरी बुद्धि भी अबला ही है। भगवन! पुत्र ध्रुव को एक बार मैं देखना चाहती हूं।

अत्रि—देखा दूंगा रानी मैं मुझे तेरे पुत्र को दिखा दूंगा।

सुनीति—गुरुवर मरने पर अमृत भी क्या होगा। प्यास से मर जाने के बाद पानी क्या करेगा। भगवन जब मैं पुत्र के बिछोह में प्राण त्याग दूंगी तब उसे भगवान मिलकर ही क्या करेंगे।

अत्रि—हाय इसका दुख मुझसे भी अब देखा नहीं जाता है। (प्रकाश) बेटी धैर्य धारण कर जब पति का बिछोह सहन हुआ तब क्या पुत्र का नहीं होगा। धीरज धर कुछ भगवान का भजन कर।

सुनीति—कर चुकी, मैं भगवान का भजन कर चुकी। प्रभो पति का बिछोह मुझ से सहन हो सका था, लेकिन अब पुत्र का बिछोह मैं सहन नहीं कर सकती। मुझे ध्रुव को एक बार दिखला

दीजिये बस मैं प्राण त्याग करूंगी। अब मेरी कोई इच्छा नहीं है सुनीति ऐसी दुखिया को जीवित ससांर भी नहीं देख सकता। मैं अभागिन हूं परम अभागिन हूं।

अत्रि—अगर ऐसा ही है तो चलो फिर ध्रुव की खोज में चला जाय। बुलावो देवी अनुसूइया को भी बुलाओ आश्रम के सब लोग उस तपस्वी बालक की तपस्या देखने के लिये चलें।

सुनीति—हां गुरुवर चलिये जल्दी चलिये—

पुत्र के ही शोक में मैं दीन हो गयी।
पैर उठते हैं नहीं बलहीन हो गयी॥

ऋषिकुमार—मैं सब लोगों को अभी बुलाता हूँ (गया)

अत्रि—देखो बेटी इतना अधीर होने से काम नहीं चलता। मैं अभी तुझे ध्रुव के पास ले चलूंगा।

सुनीति—हां चलो गुरुवर जल्दी चलो। मैं डरती हूँ कि कहीं उसके पास पहुंचने के पहिले ही न उसके प्राण निकल जाँय।

अत्रिमुनि—नहीं नहीं घबड़ाओ नहीं।

ऋषिकुमार—(आकर) भगवन सारा आश्रम का आश्रम उमड़ा आ रहा है। यह देखिये माता अनुसूइया के पीछे पीछे सब लोग आ रहे हैं।

अत्रि—आने दो आने दो मैं सब को तपस्वी बालक ध्रुव का दर्शन कराऊंगा। बेटी सुनीति चलो। (अनसूइया का दलबल सहित आना)

अनुसूइया—कहां की तैयारी है।

अत्रि—मैं बेटी सुनीति को उसके पुत्र के पास ले जाऊंगा।

अनुसूइया—हां हां हम सब भी चलेंगी। चलो चला जाय। हम सब भी पुत्र ध्रुव की तपस्या देखना चाहती हैं।

सब—चलिये गुरुदेव चलिये। (सब गये)

( एक ओर से नारद भगवान का राजा उत्तानपाद व रानी सुरुचि को लिये हुए आना । )

सुरुचि—कहां है कहां है बेटा ध्रुव कहां है। मैं उसे देखना चाहती हूँ। अगर उसे मैं न देख पाऊंगी तो उसके शोक में मर जाऊंगी।

उत्तानपाद—कहां है सती सुनीति । मैं सती सुनीति को देखना चाहता हूँ। मैं पापी हूँ। चांडाल हूँ। मैंने उसके प्रति घोर अन्याय किया है। मैं उसके पास क्षमा याचना करने आया हूँ।

नारद-भगवन धैर्य धरिये मैं अभी आप सबको उनसे मिलाता हूँ

सुरुचि-भगवन धीरज नहीं धरा जाता । मैं क्या करूं । पापी...

उत्तानपाद—हां भगवन ऐसी ही बात है पापी हृदय के भाग्य में शान्ति नहीं रहता । सुनीति के बिना यह अभागा राजा, है नाना प्रकार का दुःख सहता । बुलावो बुलावो बालक ध्रुव को बुलावो मैं उसे अपनी गोदी में बिठाऊंगा । मैंने ही उसे गोदी से उतारा था।

सुरुचि—मैंने ही उसे कुत्ते की तरह दुतकारा था । मैं नागिन हूं। डाइन हूं। मैं चांडालिनी हूं पापिनी हूं ।

उत्तानपाद-मुझसा भी पापी दुनियां में खोजने से नहीं मिलेगा ।

नारद—( स्वगत ) यह तो अच्छा मैं जहमत में फंसा । अच्छा चलो इन सभों को अत्रि मुनि से मिला दें । ( पुकार कर ) अरे कोई आश्रम में हैं।

ऋषि कुमार—कहिये भगवन आप किसको खोज रहे हैं।

नारद—हम लोग रानी सुनीति और अत्रिमुनि की खोज में हैं। वे लोग कहां है। आज आश्रम सूना क्यों मालूम पड़ रहा है।

ऋषिकुमार—भगवन गुरुदेव रानी सुनीति के साथ साथ बालक ध्रुव को देखने गये हैं ।

नारद—कहां और कितनी दूर।

ऋषिकुमार—वही सामने घोर कानन में।

नारद—चलो फिर हम लोगों को ले चलो।

ऋषि कुमार—पर मैं यहां कुटि की रखवाली कर रहा हूँ। मैं बिना गुरु की आज्ञा के कहीं नहीं जा सकता।

नारद—तो फिर और किसी को दो।

ऋषिकुमार—मैं किसको दूं। मैं तो यहां अकेला ही हूँ।

नारद—तो फिर मुझे ठीक ठीक पता बताओ।

ऋषिकुमार—वही सामने घोर कानन है। पास ही एक भारी जल प्रपात है। वहीं बालक ध्रुव तपस्या कर रहा है।

उत्तानपाद—हाय! पापी राजा सुन कि तेरी करनी से एक बालक पर कितनी विपत्ति आई है। भगवान ही उसका सहाई है।

सुरुचि—संसार देखे कि स्त्रियों के वश में होकर काम करने वाले पुरुषों को कितना कष्ट होता है। स्वेच्छाचारिणी स्त्रियों को भी नाना प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है।

नारद—राजन् चलिये। हम लोग भी अत्रिमुनि के साथ ही साथ बालक ध्रुव की तपस्या देखें।

राजा रानी—चलिये भगवन चलिये जल्दी चलिये। बालक ध्रुव को दिखाइये सारा कष्ट हटाइये।

नारद—चलो चलो। ( सब लोग विलाप करते करते जाते हैं )

---

भगवान—वत्स ध्रुव मैं तुम्हारी तपस्या से बहुत प्रसन्न हूं। मांगो क्या वर मांगते हो।

(पृष्ठ—१४१)

## दसवां दृश्य ।

स्थान—वन, जल प्रपात, समय—सुबह ।

( बालक ध्रुव आंख मूंदे हरि के ध्यान में मग्न हो कुछ कह रहा है )

ध्रुव—माता ने जो अवधि बताई थी वह भी पूरी हो गयी लेकिन अब तक भगवान ने कृपा न की। न करैं। मैं भी विना बुलाये मानने वाला नहीं हूं। अगर वे हठीले हैं तो मैं भी हठीला हूं। मैं कहता हूं भगवान आ जावो। बहुत कष्ट सहन कर चुका हूं। ( कुछ ठहर कर ) जान पड़ता है भगवान अभी किसी कार्य में लगे हैं। उन्हें भी तो संसार भर का कार्य देखना रहता है। देखें कब तक उनका काम खतम होता है। मैं भी उन्हीं के नाम पर बैठता हूँ। ( आंख मूंद कर भगवान का स्मरण करता है ) आवो भगवन आवो देर न लगावो। भक्त वत्सल आवो। भक्त वत्सल भगवान आवो। मुझ पर और मेरे परिवार पर दया करो।

[ सहसा प्रकाश होकर विष्णु भगवान का प्रकट होना ]

भगवान—वत्स ध्रुव मैं तुम्हारी तपस्या से बहुत प्रसन्न हूँ। मांगो क्या वर मांगते हो।

ध्रुव—आ गये मेरे भगवान आ गये। (पैर पकड़ कर ) प्रभो! अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा। बड़ी ही कठिनाई से तुम्हें पाया है। अब क्या मैं छोड़ सकता हूं।

भगवान—वत्स तुम धीरज धरो। जो तुम्हारी मन कामना हो उसे पूरी करो।

ध्रुव—भगवन मन कामना तो पीछे पूरी होगी। पहिले अपने आंसुओं से आपका पद पद्म तो धो लूं। प्रभो······

(अपने मस्तक को भगवान के पैर पर रखता है)

भगवान—बस करो बेटा बस करो। अब विशेष कष्ट न उठाओ। जो वर मांगो वह पाओ।

ध्रुव—भगवन! मेरा अभीष्ट तो आप जानते ही हैं। आप अन्तर्यामी होकर पूछते हैं। जान कर अनजान बनते हैं।

भगवान—अच्छा तुम्हारा अभीष्ट सिद्ध होगा मैं जाता हूं।

( भगवान का अन्तर्धान होना )

ध्रुव—गये चले गये, चले जाने दो। भगवन अभी माता को दर्शन तो हुआ ही नहीं। प्रभो मैंने उनसे वादा किया है कि आप का दर्शन उन्हें होगा। अच्छा मत आइये, भगवन मत आइये। बिना हमारे कहे भले ही चले जाइये। मैं फिर तपस्या के लिये बैठता हूँ। ( फिर बैठता है एक ओर से अत्रि मुनि का अपने परिवार और सती सुनीति के साथ साथ प्रवेश ]

अत्रि–देखो रानी तुम्हारा पुत्र ध्रुव कैसी तपस्या कर रहा है।

सुनीति—हाय बेटा तू ऐसी तपस्या न कर। तेरे बदन पर ठंडक लगती होगी। हिंसक जंतु आकर तुझे भक्षण कर डालेंगे।

अत्रि—देखो सुनीति भक्त की तपस्या में बाधा न डालो।

सुनीति—बेटा बेटा। बेटा ध्रव।

ध्रुव—( आंख खोल कर ) कौन मातेश्वरी मातेश्वरी आगयीं। अभी मैं तुम्हें याद ही कर रहा था।

सुनीति—बेटा तू तो भगवान को याद कर रहा था, या मुझे।

ध्रुब—मातेश्वरी अभी भगवान आये थे। मैंने उनसे आग्रह किया कि हमारी माता को भी दर्शन देते जाइये पर वे भाग गये। इसी लिये मैं फिर तपस्या पर बैठा हूँ वह जब तक तुम्हें दर्शन नहीं देंगे तब तक मैं यहां से हटने वाला नहीं हूँ।

अत्रि—धन्य वत्स ध्रुव धन्य। धन्य है तुम्हारी तपस्या को।

(राजा उत्तानपाद का सुरुचि के साथ साथ प्रवेश)

सुरुचि—कहां है सुनीति। मेरी बड़ी बहिन सुनीति कहां है। मैं पापिनी हूँ चंडालिनी हूँ। मेरे ही कारण उसे बनवास हुआ है। कहां है ध्रुव। आ बेटा आ आ मैं तुझे पहिले गोद में बिठाऊंगा।

उत्तानपाद—कहां है। कहां है। हमारी रानी सुनीति कहां है। मैंने उसे बन में भेज कर बड़ा पाप किया है। मैं उसे क्षमा मांगने आया हूँ।

अत्रि—कौन राजा उत्तानपाद आ गये बड़े अवसर पर आये। आवो देखो यही तुम्हारा बालक ध्रुव तपस्या कर रहा है।

उत्तानपाद—हाय हाय मैंने क्या किया। पापी राजा देख अपनी आखों से कि तेरे कुविचार ने क्या किया।

सुरुचि—हाय पापिनी चांडालिनी तूनेही बालक ध्रुव को राजा की गोद में से ढकेला था। तूने ही इस बच्चे को जगंली छोकरा कहा था। हाय मैंने क्या किया। राजन मैंने क्या किया।

अनुसूइया—बेटी रो मत। पुराने कृत्यों पर पश्चाताप करने से भी उसका प्रायश्चित होता है।

सुरुचि—बहिन सुनीति मैंने तुम्हारा बड़ा अनर्थ किया है।

सुनीति—बहिन सुरुचि तुम घबड़ावो नहीं। यह सब होनी थी।

(दुर्लभदास का अपनी पहिली स्त्री के साथ साथ आना)

दुर्लभ—कहां हैं रानी सुनीति। कहां हैं सुरुचि। जब सबने बनकी ओर पयान किया तब मैं राज्य में रह कर ही क्या करता। जहां स्वामी वहीं नौकर, जहां राजा वहीं प्रजा।

सुन्दरी—हाय मैं क्या करूं। मैंने बहुत सुन्दरी को समझाया कि रानी महारानियों के बीच में चुगली चपाड़ी न कर लेकिन उसने नहीं माना। अन्त में दुःख ही दुःख आना।

दुर्लभ—भाई मैं सब से माफी मांगता हूँ कि यह सब खोआ

कूटा हमारी स्त्री महामाया सुन्दरी का है । अगर वह इधर उधर न करती तो कहीं कुछ न होता ।

सुरुचि—हां कहां गयी सुन्दरी, महामाया सुन्दरी । मैं उसे नोचूंगी, मारूंगी पिटूंगी । उसे खा जाऊंगी । कहां है बुलावो बुलावो उसे शीघ्र बुलावो । दुर्लभ वह तुम्हारी स्त्री है तुम उसे बुलाओ नहीं तो मैं तुम्हीं पर सारा क्रोध उतारूंगी ।

अत्रि—सब लोग धीरज धरो । व्यर्थ का क्रोध न करो यह सब होनी थी हो गयी । अब व्यर्थ का क्रोध करने से कुछ लाभ नहीं है । धीरज धारण करो । ध्रुव से कहो वह आवे ।

ध्रुव—अहा धन्य भगवन अत्रि अब तक मैंने आप की ओर ध्यान नहीं दिया था । बड़ी कृपा हुई जो आप दास के यहां पधारे

अनुसूइया—बेटा ध्रुव इतनी तपस्या में लग गया कि हम लोगों को भी बिल्कुल भूल गया । भला एक बार आकर दर्शन तो दे जाता ।

ध्रुव—मातेश्वरी मैं बिना भगवान को लिये कैसे आता वे आकर चले गये । मैं उन्हें आप लोगों के सामने बुलाना चाहता हूँ ।

( सुन्दरी का घबड़ाते हुए प्रवेश )

सुन्दरी—बस हत्या और आत्म हत्या । मेरे लिये और कोई चारा नहीं है । मैं ने ही चुगली खाकर रानी सुनीति को बनवास दिलाया था मैंने ही बालक ध्रुव को राजा की गोदी से उतारा था ।

अत्रि—कौन, सुन्दरी बस करो आत्म हत्या न करो । देखो तुम्हारे सामने कौन कौन लोग खड़े हैं ।

सुन्दरी—भगवन ! मैंने भारी पाप किया है । मेरे ही कारण यह सब उत्पात मचा है ।

दुर्लभ—वाहरे महामाया, यहां भी पहुंच गई । कहीं यहां भी न हो तुम्हारी दाया । (प्रकाश) आगयी अच्छा हुआ । मैं ही सब से इसके लिये क्षमा मांगता हूँ ।

सुन्दरी—नहीं भगवन मैं सब से क्षमा मांगती हूँ।

अत्रि—अच्छा ध्रुव अब तुम अपने भगवान को याद करो।

सुरुचि—हां बेटा जिससे मुझ अभागिन को भी दर्शन हो जाय।

ध्रुव—पर मैं कैसे बुलाऊं। क्या वे आवेंगे। एक बार तो आकर चले गये।

अत्रि-हां बेटा आवेंगे। जैसे पहिले बुलाया था वैसेही बुलाओ।

ध्रुव—अच्छा भगवान आवो। आवो भगवान आवो। भक्त वत्सल भगवान आवो और मुझ पर कृपा करो।

(एकाएक आवाज का होना और भगवान का आना)

सब—धन्य प्रभो धन्य ( सब का साष्टांग दण्डवत करना )

भगवान—वत्स ध्रुव हम तुम्हारी ही भक्ति से इन लोगों को भी दर्शन दे रहे हैं। मांगो क्या वर मांगते हो।

ध्रुव—भगवन आप हमारे ऊपर तो प्रसन्न हैं ही, पर परिवार वर्ग के भ्रम को भी निवारण करिये। इनके दुःखों को हरिये।

भगवान—(परिवार से) कहो तुम लोगों को क्या कहना है।

उत्तानपाद—भगवन मैंने ध्रुव ऐसे बालक को वन में भेज कर बड़ा पाप किया है। सती शीलवती सुनीति का मैं अपराधी हूँ।

भगवान—देखो राजा उत्तानपाद यह सब जो कुछ हुआ है संसार को शिक्षा देने के लिये ही हुआ है। भाग्य से सती सुनीति ऐसी स्त्री तुम्हें प्राप्त हुई। तुम किसी बात की चिन्ता न करो। सुनीति के हृदय में तुम्हारी ओर से कोई द्वेष नहीं है।

सुरुचि—भगवन मैंने सुनीति ऐसी सती कुल श्रेष्ठा स्त्री को बनवास दिया। बालक ध्रुव को राजसिंहासन पाने से च्युत किया। अब मैं बारम्बार पश्चाताप कर क्षमा याचना चाहती हूँ।

भगवान—रानी तुम निश्चिन्त रहो। बालक ध्रुव को इन सब

बातों का जरा भी ख्याल नहीं है। वह तो परम भक्त है। जैसे वह सुनीति को माता समझता है वैसे ही तुम्हें भी मानता है।

दुर्लभ—भगवन ! बिचारे दुर्लभदास को न छोड़िये। यह सब इसी महायाया की करनी है। मेरा इसमें कोई दोष नहीं है। दोष है तो यही कि मैंने इससे बिवाह किया।

माया—( हाथ जोड़कर ) भगवन सारे उपद्रव की जड़ मैं हूँ।

भगवान—बेटी पारिवारिक झंझटों में इस किस्म की बातें हो ही जाया करती हैं। लेकिन तुमको इस बात का ख्याल रखना चाहिये कि अब भविष्य में बजाय लड़ाई लगाने के परिवार में मेल रखने का उद्योग करते रहना। गृहस्थों को चाहिये कि दास दासियों की बात पर विशेष ध्यान न दिया करें।

सुनीति—भगवन अपने परिवार के किसी व्यक्ति के विरुद्ध मेरी कभी भी भावना न हुई और न होगी। सुरुचि के धन्य भाग्य थे जो वह पति की सेवा कर सकी थी।

सुरुचि—बहिन तुमने हमारे दोषों को क्षमा कर मेरा बड़ा उपकार किया। अब सारी बातें भूल कर राज नगर वापस चलो। वहां चलकर राज पाट सम्हालो। अब मैं तुम्हारी आज्ञा के विरुद्ध कभी कोई काम न करुंगी।

उत्तानपाद—देवी चलो और राजमहल को फिर अपने चरण कमलों से पवित्र करो।

दुर्लभ-हां मातेश्वरी चलो।

सुन्दरी—चलो रानी जी चलो।

सब—चलो रानी चलो। रनिवास में फिर चलो।

अत्रि—बेटी जावो तुम्हारे दुःख की अवधि समाप्ति हो गयी।

अनुसूइया—हां बेटी जावो। पुनः अपना राज काज सम्हालो।

भगवान—बेटा ध्रुव तुम जाकर फिर अपना राजकाज देखो।

तुमने जिस बात के लिये तपस्या की थी आवो उसे मैं पूरा करुं। ( भगवान अपनी गोद में ध्रुब को बैठाते हैं ) हे ध्रुव मैं तेरी तपस्या से प्रसन्न होकर वह लोक देता हूँ जिसे किसी ने बड़े दुःख से भी नहीं पाया है। ( परदे का फटना। ध्रुव लोक का दिखाई देना )

सब—धन्य प्रभो धन्य। बोलो ध्रुव नारायण की जय।

भगवान—यह देखो तारा मंडल है। इसी मंडल के बीच जो सप्तऋषि मंडल है उसी मंडल में मैं तुम्हें ध्रुव के नाम से स्थित करता हूँ। हे ध्रुब सप्तऋषि तुम्हारी परिक्रमा करेंगे। तुहारा नाम जब तक पृथ्वी रहेगी तब तक रहेगा।

अत्रि—और बेटा सुनीति सती शिरोमणि स्त्रियों में तेरा नाम भी बड़े प्रेम से लिया जायगा। फिर ध्रुव की तो बातही निराली है।

भगवान—इसी लिये तो मैंने वैकुंठ के ऊपर ध्रुव लोक नामक पुरी निर्माण किया। वही तपस्वी ध्रुव का निवास स्थान होगा। कुछ काल राज वैभव का सुख भोग वह अन्त में वहीं निवास करेगा। आओ ध्रुव मैं स्वयं तुम्हें राजतिलक करुं।

( परदे का फटकर राजगद्दी का दिखाई देना )

सब—धन्य प्रभो धन्य। बोलो सब ध्रुव कुमार की जय।

भगवान—आइये अत्रि मुनि जी आपसे बढ़कर यहां और वृद्ध कौन है। आपही ध्रुव को राज तिलक करें। बैठो बेटा बैठो।

[ ध्रुव बैठता है। अत्रि मुनि राज तिलक करते हैं। ]

अत्रि—बेटा तुम्हारा नाम अटल हो। तुम्हारा राज अचल हो। साथ ही भरत मुनि का यह वाक्य भी सफल हो कि—

भगवान को नित याद कर सब जीव हो जावें भले।
हे प्रभो ध्रुव भक्त से जग में सदा फूले फले॥

( पुष्प वृष्टि के साथ साथ यवनिका पतन )

---

समाप्त।

# राममूर्ति व्यायाम सीरिज़

प्रो० कालिदास माणिक स्वयं बीस मन का पत्थर अपनी छाती पर रख कर तुड़वाने में समर्थ हुए हैं। —वीर भारत

व्यायाम सम्बन्धी पुस्तकें।

| | |
|---|---|
| प्रो० राममूर्ति का व्यायाम | =) |
| तैरना सीखना | =) |
| जापानी कुश्ती | =) |
| तन्दुरुस्ती और ताकत | =) |
| भारत की ऋतुचर्य्या | =) |
| स्वास्थ्य साधन | =) |
| नौजवानों होशियार | =) |
| स्वास्थ्य और स्वभाव | =) |
| संगीत के साथ व्यायाम | =) |
| झंडी की कसरत | =) |
| मुगदर की कसरत | =) |

माणिक ग्रन्थ माला

| | | | |
|---|---|---|---|
| भारत की प्राचीन झलक | ॥) | भारतकी प्राचीनझलक ३ | ॥) |
| पांडव प्रताप नाटक | ॥) | भारतकी प्राचीनझलक ४ | ॥) |
| भारत की क्षत्रानी १ भाग | ॥) | श्रवण कुमार नाटक | ॥) |
| भारत की क्षत्रानी २ भाग | ॥) | संयोगता हरण नाटक | ॥) |
| चौहानी तलवार | ॥) | राजपूतों की बहादुरी २ | ॥) |
| भारत की प्राचीन झलक २ | ॥) | बेलजियन झंडा | ॥) |
| राजपूतों की बहादुरी १ | ॥) | भक्त ध्रुव नाटक | ॥) |
| मेवाड़ का उद्धार | ॥) | स्वदेशोमिदान में बलिदान | ॥) |

मिलने का पता—मनेजर-माणिक कार्यालय—काशी

# क्या आप इन पुस्तकों को नहीं पढ़ेंगे ?

| | | | |
|---|---|---|---|
| जीवन सन्ध्या | ।॥) | मनोरमा | २॥) |
| दीप निर्वाण | ॥।) | प्राणनाथ | २) |
| रानण राज | २॥।) | विधवा बिवाह | २) |
| प्रेत तर्पण | २) | शैल कुमारी | १॥) |
| कुंवर सिंह | २) | गल्पांजली | १॥=) |
| परशुराम | ३) | सखाराम | १) |
| भारत के महापुरुष | ३) | शान्ता | ॥।) |
| पंजाब हत्याकाण्ड | १॥।) | उमा सुन्दरी | ॥।) |
| गान्धी दर्शन | १) | हिन्दू त्योहारों का इतिहास | ॥) |
| जर्मनी की राज व्यवस्था | ।) | गौरीशंकर | ॥=) |
| जेनरल वाशिंगटन | १) | मालती | ।) |
| पंजाव हत्याकांड | १) | राष्ट्रीयगान | ।) |
| स्वामी विवेकानन्द | १) | सेवा सदन | २॥) |
| ईश्वर चन्द्र विद्यासागर | | प्रेमाश्रम | ३॥) |
| पूर्ण भारत | ॥=) | गृह लक्ष्मी | १॥) |
| पतित पति | ॥।=) | दानवीलीला | ॥।=) |
| शूरशिरोमणि | ॥) | शान्ति निकेतन | ॥।) |
| भक्त सुदामा | १) | मीठा जहर | ॥) |
| महाभारत | ॥) | वीर अभिमन्यु | ॥।) |
| दानी कर्ण | ॥) | यहूदी की लड़की | ॥।) |

राममूर्ति ठंढाई ॥।)

वज्रदन्ती मञ्जन ॥)

पता-माणिक कार्यालय-काशी ।